تم کب توبہ کرو گے ؟

اَیُّھَا الْمُقَصِّرِ مَتٰی تَتُوْب

eBook

اَيُّهَا الْمُقَصِّرُ

مَتٰى تَتُوْبُ؟

तुम तौबा कब करोगे?

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

किताब ---------- اَيُّهَا الْمُقَصِّرُ مَتٰى تَتُوْبُ؟

तालीफ़ ---------- नामआलूम

नाशिर ---------- आलहुदा पबलीकेशनज़

ऐढ़िशन ---------- चहारम

ISBN ---------- 978-969-8665-83-8

तआदाद ---------- 3,000

तारीख़ इशाआत ------ माइ 2016ء

क़ीमत ----------

मिलने के पते

INDIA

AlHuda Welfare Trust India
Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+918040924255. +91-9535612224
alhuda.india@gmail.com
www.farhathashmi.com

AMERICA

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

CANADA

5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

ENGLAND

14 Wangey Road, Chadwell Heath Romford,
Essex RM6 4AJ London U.K.
+44-20-8599-5277 +44-79-1312-1096
alhudauk.info@gmail.com
alhudaproducts.uk@gmail.com

© AL-HUDA WELFARE FOUNDATION

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَيُّهَا الْمُقَصِّرُ مَتٰى تَتُوْبُ؟

اَلْمُقَدِّمَةُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى،وَصَلَاةً وَسَلَامًا عَلٰى نَبِيِّهِ الْمُصْطَفٰى وَرَسُوْلِهِ الْمُجْتَبٰى...

اَمَّا بَعْدُ:

فَاِنَّ التَّوْبَةَ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى نُوْرٌ يَتَلَالَأُ وَسْطَ ظَلَامِ الْمَعْصِيَةِ الْحَالِكِ، وَبَرِيْقٌ يَلُوْحُ فِى الْاُفُقِ فَيُغْرِى الْعُصَاةَ بِالرُّجُوْعِ اِلٰى رَبِّهِمْ،وَيُزَيِّنُ لَهُمُ الْكُفَّ عَنِ الْعِصْيَانِ.

وَمَا زَالَتِ التَّوْبَةُ تُنَادِى الْعُصَاةَ وَالْمُقَصِّرِيْنَ:

اَنْ هَلُمُّوْا اِلٰى بَارِئِكُمْ، اَقْبِلُوْا عَلٰى رَبِّكُمْ؛فَاِنَّ رَحْمَتَهُ وَاسِعَةٌ، وَفَضْلَهُ عَظِيْمٌ،وَفَرَحَهُ بِالتَّائِبِيْنَ لَيْسَ لَهُ مُنْتَهٰى ﴿وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْ عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ﴾ (الشورٰى:25)

فَيَا اَيُّهَا الْعَاصِىْ!تُبْ اِلٰى رَبِّكَ،وَابْكِ عَلٰى خَطِيْئَتِكَ!

وَيَااَيُّهَا الْمُقَصِّرُ،تُبْ اِلٰى رَبِّكَ مِنْ تَقْصِيْرِكَ،وَاسْاَلْهُ الْعَفْوَ وَالْغُفْرَانَ.

وَيَااَيُّهَا الْمُطِيْعُ،تُبْ اِلٰى رَبِّكَ مِنْ رُؤْيَتِكَ لِطَاعَتِكَ،وَاِدْلَالِكَ بِعَمَلِكَ وَغَفْلَتِكَ عَنْ عُيُوْبِكَ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐ कोताही करने वाले! तुम कब तौबा करोगे ?

मुक़द्दमा

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है और वह काफ़ी है और दरूदो सलाम हो उसके चुने हुए नबी और उसके मुन्तख़िब किए हुए रसूल पर.

अम्मा बाद!

यक़ीनन अल्लाह तआला की बारगाह में तौबा करना एक ऐसा नूर है जो के इन्तिहाई सियाह अंधेरों के दर्मियान चमक रहा है और ये

एक ऐसी चमक है जो आसमान के किनारे में चमक रही है पस ये नाफ़रमान लोगों को उकसाती है कि वह अपने रब की तरफ रुजूअ करें और उनके लिए नाफ़रमानी से बाज़ आने को मुज़य्यन(सजाना) कर रही है.

और तौबा हमेशा से ही नाफ़रमान और कोताही करने वालों को आवाज़ देती रही है:

कि अपने खालिक़ की तरफ आ जाओ, अपने रब की तरफ मुतावज्जह हो जाओ क्योंकि उसकी रहमत वसीअ है, उसका फ़ज़ल अज़ीम है.और तौबा करने वालों पर अल्लाह की ख़ुशी की कोई इन्तिहा नहीं.

और वो ही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल करता है और बुराईयों से दरगुज़र करता है और वो जानता है जो तुम करते हो.

तो ऐ नाफ़रमान! अपने रब की बारगाह में तौबा कर और अपने गुनाहों पर रो.

और ऐ कोताही करने वाले! अपने रब की बारगाह में अपनी कोताही से तौबा कर और उससे दरगुज़र और बख़्शिश का सवाल कर.

और ऐ फ़रमांबरदार! अपने रब की बारगाह में तौबा कर (इस बात से) जो तुम अपनी इताअत का लेहाज़ रखते हो. और जो तुम अपने अमल पर मान और ग़ुरूर करते हो और अपने ऐबों से गफ़लत करते हो.

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

﴿وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾(النور:31)

وَهٰذِهِ الصَّفَحَاتُ.اَخِى الْمُسْلِمَ الْمُوَفَّقَ.قُطُوْفٌ مُخْتَارٌ وَ ثِمَارٌ يَانِعَةٌ فِىْ فَضْلِ التَّوْبَةِ وَاَحْكَامِهَا وَثَمَرَاتِهَا وَبَعْضِ قِصَصِ التَّائِبِيْنَ،نَسْاَلُ اللّٰهَ تَعَالٰى اَنْ يَكُوْنَ عَوْنًا لِكُلِّ مُسْلِمٍ عَلٰى سُلُوْكِ طَرِيْقِ التَّوْبَةِ،اِنَّهُ خَيْرٌ مَسْؤُوْلٌ،وَهُوَ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ.

النَّاشِرُ

دَارُالْوَطَنْ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“और तुम सब अल्लाह की तरफ तौबा करो, ऐ मोमिनो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ.”

ऐ मेरे तौफीक़ दिए हुए मुसलमान भाई! यह सफ़ात (पन्ने) पसन्दीदा तोड़े हुए और पके हुए फल हैं जिनमें तौबा की फ़ज़ीलत और उसके एहकाम और उसके नतीजे और समरात (फल) और तौबा करने वालों के बाज़ वाक़ेआत हैं.

हम अल्लाह तआला से सवाल करते हैं कि यह किताब हर मुसलमान के लिए तौबा के रास्ते पर चलने में मददगार बन जाए. क्योंकि यह एक ऐसी ख़ैर है जिसका सवाल किया जाना चाहिए और अल्लाह तआला बेहतरीन दोस्त और बेहतरीन मददगार है.

अलनाशिर
दारुल वतन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نِعَمُ التَّوْبَةِ

اَخِی الْحَبِیْبَ: اَلنَّاسُ مُنْذُ خُلِقُوْا لَمْ یَزَالُوْا مُسَافِرِیْنَ؛ فَالدُّنْیَا لَیْسَتْ وَطَنًا وَلَا مُقِرًّا، بَلْ هِیَ مُعَبَّرٌ وَمُمَرٌّ... وَلَا یَنْتَهِی السَّفَرُ اِلَّا بِالْقُدُوْمِ عَلَی اللّٰهِ، فَمَنْ اَحْسَنَ فِیْ سَفَرِهٖ کُوْفِیَ بِالنَّعِیْمِ الْمُقِیْمِ فِی الْجَنَّةِ، وَمَنْ اَسَاءَ فِیْ سَفَرِهٖ جُوْزِیَ بِالْعَذَابِ الْاَلِیْمِ فِیْ جَهَنَّمَ... فَالسَّعِیْدُ مَنْ تَاَهَّبَ لِهٰذَا السَّفَرِ وَاسْتَعَدَّ لَهٗ، وَاتَّخَذَ لَهٗ زَادًا مِنَ التَّقْوٰی وَالْعَمَلِ الصَّالِحِ، وَالشَّقِیُّ مَنْ ضَیَّعَ عُمُرَهٗ فِی الْغَفْلَةِ وَالْمَعْصِیَةِ، فَکَانَ قُدُوْمُهٗ عَلٰی رَبِّهٖ قُدُوْمَ الْعُصَاةِ وَالْمُذْنِبِیْنَ وَالْمُجْرِمِیْنَ.

وَالْعَبْدُ فِیْ سَفَرِهٖ اِلَی اللّٰهِ لَا بُدَّ اَنْ یَقَعَ مِنْهُ مَا لَا یُحْمَدُ مِنَ الْاَقْوَالِ وَالْاَفْعَالِ؛ لِاَنَّ الْاِنْسَانَ غَیْرُ مَعْصُوْمٍ، وَهُوَ دَائِمُ النِّسْیَانِ وَالْغَفْلَةِ...

وَلَمَّا کَانَتِ الْمَعَاصِیْ سَبَبَ سُخْطِ اللّٰهِ عَلَی الْعَبْدِ وَاِنْزَالِ الْعُقُوْبَةِ بِهٖ، لَمْ یَتْرُکِ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ عِبَادَهُ اَسْرٰی لِلْمَعْصِیَةِ وَعُرْضَةً لِلْحَیْرَةِ وَالْقَلَقِ، بَلْ اَنْعَمَ عَلَیْهِمْ بِنِعْمَةٍ عُظْمٰی، وَمَنَّ عَلَیْهِمْ بِمِنَّةٍ کُبْرٰی، وَهِیَ اَنْ فَتَحَ لَهُمْ بَابَ التَّوْبَةِ وَالْاِنَابَةِ، وَلَوْلَا اَنْ وَفَّقَ اللّٰهُ عِبَادَهُ اِلَی التَّوْبَةِ، وَاَنْعَمَ عَلَیْهِمْ بِقُبُوْلِهَا؛ لَوَقَعَ الْعِبَادُ فِیْ حَرَجٍ شَدِیْدٍ، وَاَصَابَهُمُ الْیَاْسُ مِنَ الْمَغْفِرَةِ، وَقَصَرَتْ هِمَمُهُمْ عَنْ طَلَبِ الْقُرْبِ مِنْ رَبِّهِمْ، وَانْقَطَعَ رَجَاؤُهُمْ مِنَ الْعَفْوِ وَالصَّفْحِ وَالْمُسَامَحَةِ.

© AL-KUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा के इनआमात (इनाम)

ऐ मेरे प्यारे भाई!

जबसे लोग लोग पैदा किए गए हैं वह मुसलसल (लगातार) सफ़र कर रहे हैं, दुनिया ना तो वतन है और ना ही ठहरने की जगह. बल्कि यह एक पुल और गुज़रगाह है. और यह सफ़र अल्लाह तआला की तरफ आने पर ही ख़त्म होता है, तो जिसने अपने सफर में अच्छा अंदाज़ इख़्तियार किया उसको जन्नत में हमेशा की नेअमतों का बदला दिया जाएगा और जिसने अपने सफ़र में बुरा अंदाज़ इख़्तियार किया उसको जहन्नम में दर्दनाक अज़ाब का बदला दिया जाएगा-पस ख़ुश नसीब वो है जिसने इस सफ़र की तैयारी की और इसके लिए तक़वा और नेक अमल से सफ़र का सामान ले लिया, और बदनसीब वो है जिसने अपनी उम्र को गफ़लत और नाफ़रमानी में ज़ाया कर लिया तो उसका अपने रब के पास जाना नाफ़रमानों, गुनाहगारों और मुजरिम लोगों का सा जाना होगा.

और लाज़मी बात है कि वह बन्दा जो अल्लाह की तरफ़ अपना सफ़र कर रहा है उससे कुछ ऐसे अक़वाल (बातें) और अफ़आल (काम) सरज़द होंगे जो क़ाबिले तारीफ़ नहीं होंगे क्योंकि इन्सान मासूम नहीं है और वह हमेशा भूलने वाला और गफ़लत में पड़ने वाला है.

और जबकि नाफ़रमानियाँ बन्दे पर अल्लाह की नाराज़गी और उस पर सज़ा को वाक़ेअ करने की वजह हैं. तो अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने अपने बन्दों को नाफ़रमानी के लिए बेकार या परेशानी और बेचेनी का निशाना बना कर नहीं छोड़ा, बल्कि उन पर एक बहुत बड़ी नेअमत का इनआम किया है और उन पर एक बहुत बड़ा एहसान जतलाया है और वो यह है कि उनके लिए तौबा और इनाबत का दरवाज़ा खोल दिया है. और अगर अल्लाह अपने बन्दों को तौबा की तौफीक़ ना देता और उसको क़ुबूल करके उन पर इनआम ना फ़रमाता तो बन्दे ज़रूर सख़्त तंगी में पड़ जाते और उनको मग़फ़िरत से मायूसी लाहक़ हो जाती और अपने रब का क़ुर्ब हासिल करने से उनकी हिम्मतें क़ासिर रह जातीं और अफ़व व दरगुज़र और नरमी से उनकी उम्मीद कट जाती.

اَللّٰهُ غَفُوْرٌ تَوَّابٌ رَحِيْمٌ

وَقَدْ وَصَفَ اللّٰهُ نَفْسَهُ فِى الْقُرْاٰنِ مَا يُقَارِبُ مِائَةَ مَرَّةٍ بِاَنَّهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ، وَامْتَنَّ عَلٰى عِبَادِهِ بِالتَّوْبَةِ فِىْ كَثِيْرٍ مِنَ الْاٰيَاتِ الْكَرِيْمَاتِ،قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا﴾ (النساء: 27)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ﴾ (النور: 10)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ﴾ (النجم: 32)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَرَحْمَتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ﴾ (الاعراف: 156)

فَيَا اَخِى الْحَبِيْبَ:

بَابُ التَّوْبَةِ اَمَامَكَ مَفْتُوْحٌ يَنْتَظِرُكَ،وَطَرِيْقُ الْاَوْبَةِ مُمَهَّدٌ يَشْتَاقُ اِلَيْكَ،فَاطْرُقِ الْبَابَ،وَاسْلُكِ الطَّرِيْقَ،وَاسْاَلْ رَبَّكَ التَّوْفِيْقَ وَالْاِعَانَةَ، وَجَاهِدْ نَفْسَكَ وَاقْصُرْهَا عَلٰى طَاعَةِ رَبِّهَا وَاِذَا تُبْتَ اِلٰى رَبِّكَ وَعُدْتَّ اِلَى الْمَعْصِيَةِ مَرَّةً اُخْرٰى وَنَقَضْتَ التَّوْبَةَ فَلَا تَسْتَحْيِ مِنْ تَجْدِيْدِ التَّوْبَةِ مَرَّةً اُخْرٰى،مَهْمَا تَكَرَّرَ ذٰلِكَ مِنْكَ.

قَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا﴾ (الاسراء: 25)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला,बहुत रहम करने वाला है

और अल्लाह ने क़ुरआन में तक़रीबन सौ बार अपना वस्फ़ बयान किया है कि वह गफ़ूर और रहीम है और बहुत सारी आयते करीमा में अपने बन्दों पर तौबा क़ुबूल करने का एहसान जतलाया है,

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अल्लाह चाहता है कि तुम पर मेहरबानी फ़रमाए और जो लोग ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (सीधे रास्ते से) हट जाओ, बहुत ज़्यादा हट जाना.

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और उसकी रेहमत ना होती और ये कि यक़ीनन अल्लाह बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला, कमाले हिकमत वाला है.

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "यक़ीनन आपका रब वसी बख़्शिश वाला है.

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और मेरी रेहमत ने हर चीज़ को घेर रखा है.

तो ऐ मेरे प्यारे भाई !

तौबा का दरवाज़ा तुम्हारे सामने खुला हुआ तुम्हारे इन्तिज़ार में है और रुजूअ करने को तैयार (हमवार किया गया) रास्ता तुम्हारा मुश्ताक़/उत्सुक है. पस दरवाज़े को खटखटाओ और रास्ते पर चलना शुरू करदो, अपने रब से तौफीक़ और मदद का सवाल करो और अपने नफ़्स के साथ जिहाद करो और उसको अपने रब की इताअत पर रोक दो, और जब तुमने अपने रब की बारगाह में तौबा करली और तुम दोबारा मासियत की तरफ़ लौटे और तुमने तौबा तोड़ दी तो तुम दूसरी दफ़ा फिर नए सिरे से तौबा करने से ना शरमाओ.

चाहे यह (कोताही और गफ़लत) कितनी ही मरतबा तुमसे सरज़द क्यों ना हो.

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तो यक़ीनन वह बार-बार तौबा करने वालों के लिए बेहद बख़्शने वाला है.

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ﴾

(الزمر: 53، 54)

وَقَالَ ﷺ: لَوْ اَخْطَاْتُمْ حَتّٰى تَبْلُغَ خَطَايَاكُمُ السَّمَاءَ، ثُمَّ تُبْتُمْ لَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ. (سنن ابن ماجة)

فَاَيْنَ التَّائِبُوْنَ النَّادِمُوْنَ؟

اَيْنَ الْعَائِدُوْنَ الْخَائِفُوْنَ؟

اَيْنَ الرَّاكِعُوْنَ السَّاجِدُوْنَ؟

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "कह दीजिए ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की! अल्लाह की रहमत से मायूस ना होना, बेशक अल्लाह सब के सब गुनाह बख़्श देता है. बेशक वो ही तो बेहद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है. और अपने रब की तरफ़ पलट आओ और उसके फ़रमांबरदार हो जाओ, इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी."

और आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर तुम हत्ता कि तुम्हारी ग़लतियाँ आसमान तक पहुँच जाऐं फिर तुम तौबा करो तो अल्लाह तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमाएगा.

तो कहाँ हैं तौबा करने वाले, नादिम होने वाले?

कहाँ हैं वापस लौटने वाले, डरने वाले?

कहाँ हैं रुकूअ करने वाले, सजदा करने वाले?

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وُجُوْبُ التَّوْبَةِ

التَّوْبَةُ:

هِيَ الرُّجُوْعُ عَمَّا يَكْرَهُهُ اللّٰهُ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا اِلٰى مَا يُحِبُّهُ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا، وَاَصْلُ التَّوْبَةِ الرُّجُوْعُ،وَيُقَالُ:مَنْ رَجَعَ عَنِ الْمُخَالَفَاتِ حَيَاءً مِنَ اللّٰهِ وَخَوْفًا مِنْ عَذَابِهِ فَهُوَ تَائِبٌ.

وَالتَّوْبَةُ فَرْضُ عَيْنٍ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ بِالْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ وَالْاِجْمَاعِ.

اَمَّابِالْكِتَابِ:

فَلِقَوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى:﴿وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾ (النور:31)

وَقَوْلِهِ تَعَالٰى:﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا﴾ (التحريم:8)

فَفِيْ هَاتَيْنِ الْاٰيَتَيْنِ الْاَمْرُ الصَّرِيْحُ بِالتَّوْبَةِ لِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ،وَهٰذَا يَدُلُّ عَلٰى وُجُوْبِ التَّوْبَةِ،يَدُلُّ كَذٰلِكَ عَلٰى اَنَّ التَّوْبَةَ لَيْسَتْ خَاصَّةً بِالْعُصَاةِ وَالْمُخَلِّطِيْنَ؛لِاَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى اَمَرَ بِهَا اَهْلَ الْاِيْمَانِ.

وَمِمَّا يَدُلُّ عَلٰى وُجُوْبِ التَّوْبَةِ كَذٰلِكَ قَوْلُهُ تَعَالٰى:﴿وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ﴾ (الحجرات: 11)

حَيْثُ قَسَّمَ الْعِبَادَ اِلٰى قِسْمَيْنِ:تَائِبٌ وَظَالِمٌ،وَلَمَّا كَانَ الظُّلْمُ مُحَرَّمًا كَانَتِ التَّوْبَةُ وَاجِبَةً.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा का वाजिब होना

तौबा:
ये ऐसी चीज़ से रुजूअ करना है जिसको अल्लाह ज़ाहिर और बातिन में नापसंद करता है, ऐसी चीज़ की तरफ़ पलट जाना जिसको वह ज़ाहिर और बातिन के ऐतबार से पसंद करता है और तौबा का असल मायना है रुजू करना. कहा जाता है जो अल्लाह से शर्म करते हुए और उसके अज़ाब से डरते हुए मुख़ालफ़तों से वापस लौट गया तो वही तौबा करने वाला है. और तौबा हर मुसलमान पर किताब, सुन्नत और इज्मा के दलाइल से फर्ज़े ऐन है.

जहाँ तक किताब(क़ुरआन) की दलील का ताल्लुक़ है:
तो अल्लाह तआला के इस फ़रमान से है: "और तुम सब अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, ऐ मोमिनों! ताकि तुम कामयाब हो जाओ.
और अल्लाह तआला का फ़रमान है: "ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, खालिस तौबा.
तो इन दोनों आयतों में तमाम मोमिनों के लिए तौबा करने का वाज़ेह हुक्म है और यह तौबा के वुजूब पर दलील है और ये इस बात की भी दलील है कि तौबा सिर्फ़ नाफ़रमानों और (नेकियाँ और गुनाह) ख़ल्त-मल्त करने वालों के लिए ख़ास नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला ने अहले ईमान को भी इसका हुक्म दिया है.
और वह चीज़ जो तौबा के वाजिब होने पर मज़ीद दलालत करती है वह अल्लाह तआला का यह क़ौल है: "और जिसने तौबा ना की तो यही लोग हैं जो ज़ालिम हैं.
यहाँ से इसने बन्दों को दो क़िस्मों में बाँट दिया: एक तौबा करने वाला और एक ज़ालिम, जब ज़ुल्म हराम है तो यह वाजिब ठहरी.

وَاَمَّا السُّنَةُ:

فَقَدْ اَمَرَ النَّبِیُّ ﷺ بِالتَّوْبَةِ فَقَالَ: یَااَیُّهَا النَّاسُ، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ، فَاِنِّیْ اَتُوْبُ اِلَیْهِ فِی الْیَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ. (رواه مسلم)

وَاَمَّا الْاِجْمَاعُ:

فَقَدْ قَالَ ابْنُ قُدَامَةَ: اَلْاِجْمَاعُ مُنْعَقِدٌ عَلٰی وُجُوْبِ التَّوْبَةِ. (مختصر منهاج القاصدين)

وَقَالَ شَیْخُ الْاِسْلَامِ ابْنُ تَیْمِیَةَ: وَلَا بُدَّ لِکُلِّ عَبْدٍ مِنْ تَوْبَةٍ، وَهِیَ وَاجِبَةٌ عَلَی الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ. (مجموع الفتاوی)

وَقَالَ الْقُرْطُبِیُّ: وَلَا خِلَافَ بَیْنَ الْاُمَّةِ فِیْ وُجُوْبِ التَّوْبَةِ، وَاِنَّهَا فَرْضٌ مُتَعَیِّنٌ. (الجامع لأحكام القرآن)

اَخِی الْحَبِیْبَ:

مِنْ رَحْمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْکَ اَنْ جَعَلَ التَّوْبَةَ فَرْضًا لَازِمًا، وَذٰلِکَ لِیَعْفُوَ عَنْکَ وَیَغْفِرَ ذُنُوْبَکَ وَیَمْحُوَ سَیِّئَاتِکَ، فَاللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ غَنِیٌّ عَنَّا وَعَنْ طَاعَتِنَا وَاَعْمَالِنَا کَمَا قَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿ لَنْ یَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰکِنْ یَّنَالُهُ التَّقْوٰی مِنْکُمْ ﴾ (الحج:37)

فَبَادِرْ اَخِیْ بِالتَّوْبَةِ الصَّادِقَةِ، وَجَدِّدِ التَّوْبَةَ فِیْ کُلِّ یَوْمٍ وَفِیْ کُلِّ وَقْتٍ، فَاِنَّ الرَّاجِعَ عَنْ ذَنْبِهِ وَالنَّادِمَ عَلَیْهِ لَا یَکُوْنُ مُصِرًّا وَاِنْ عَادَ فِی الْیَوْمِ الْوَاحِدِ اَکْثَرَ مِنْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً!

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और जहाँ तक सुन्नत का ताल्लुक़ है:

तो नबी ﷺ ने तौबा का हुक्म दिया है पस आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! अल्लाह के हुज़ूर तौबा करो, बेशक मैं उसकी तरफ एक दिन में सौ बार तौबा करता हूँ."

और जहाँ तक इज्मा (उल्मा का इकटठा होना) का ताल्लुक़ है:

तो इब्ने क़ुदामा ने कहा है: तौबा के वाजिब होने पर इज्मा मुनअक़िद हो चुका है.

और शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया ने कहा है: हर बन्दे के लिए तौबा के बगैर कोई चारा नहीं और यह पहलों और पिछलों सब पर वाजिब है. और क़ुरतबी ने कहा है: उम्मत में तौबा के वाजिब होने में कोई इख्तिलाफ नहीं और बेशक यह फर्ज़े मुतअय्यन है.

मेरे प्यार भाई!

यह अल्लाह तआला की तुम पर रहमत है कि उसने तौबा को लाज़मी फ़र्ज़ क़रार दिया, यह इसलिए है ताकि वह तुमसे दरगुज़र करे और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करे और तुम्हारी बुराईयों को मिटाए, पस अल्लाह अज्ज़ व जल्ल हमसे, हमारी इताअत से और हमारे आमाल से बेनियाज़ है. जैसा कि अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "अल्लाह को हरगिज़ ना उनके गोश्त पहुँचेंगे और ना उनके ख़ून लेकिन उसे तुम्हारी तरफ़ से तक़वा पहुँचेगा."

तो ऐ मेरे भाई! सच्ची तौबा में जल्दी करो और हर रोज़ और हर वक़्त नई तौबा करो, क्योंकि अपने गुनाह से रुजूअ करने वाले और उस पर नादिम होने वाले को इसरार करने वाला नहीं कहते अगरचे वह एक दिन मैं सत्तर से ज़्यादा बार गुनाह करे!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُبِ الْاٰنَ

التَّوْبَةُ اَخِی الْحَبِیْبَ وَاجِبَةٌ عَلَی الْفَوْرِ،بِمَعْنٰی اَنَّ تَاْخِیْرَهَا وَالتَّسْوِیْفَ بِهَا ذَنْبٌ اٰخَرُ یَحْتَاجُ اِلٰی تَوْبَةٍ، وَمَا یُدْرِیْ هَذَا الْمُسَوِّفُ الَّذِیْ یَقُوْلُ: غَدًا سَاَتُوْبُ اِنَّهُ سَیَعِیْشُ اِلٰی غَدٍ؟بَلْ مَا یُدْرِیْهِ اَنَّهُ سَیَقُوْمُ مِنْ مَقَامِهِ؟فَاِنَّ الْمَوْتَ قَدْ یَاْتِیْ بَغْتَةً بِلَا اَسْبَابٍ وَلَا مُقَدِّمَاتٍ،وَكَمْ رَاَیْنَا اُنَاسًا مَاتُوْا فُجَاَةً بِسَبَبِ تَوَقُّفٍ مُفَاجِیءٍ لِلْقَلْبِ،اَوْ بِسَبَبِ حَوَادِثٍ مُرَوِّعَةٍ،اَوْ بِاَسْبَابٍ لَا یَعْلَمُهَا اِلَّا اللّٰهُ...قَالَ تَعَالٰی:﴿وَمَا تَدْرِیْ نَفْسٌ مَّا ذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِیْ نَفْسٌۢ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ﴾(لقمٰن: 34)

وَاَمَرَ سُبْحَانَهُ بِالْمُسَارَعَةِ اِلٰی مَا یُوْجِبُ الْمَغْفِرَةَ،وَمِنْهَا التَّوْبَةُ،فَقَالَ سُبْحَانَهُ:﴿وَسَارِعُوْٓا اِلٰی مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَاالسَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ﴾(اٰلِ عمران: 133)

وَقَالَ سُبْحَانَهُ:﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَیْرٰتِ﴾ (البقرة: 148)

وَقَالَ عَزَّوَجَلَّ:﴿وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰی مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ﴾ (اٰلِ عمران: 135)

وَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ:وَیْلٌ لِّلْمُصِرِّیْنَ عَلٰی مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ.
(رواه احمد وصححه الالبانی)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अभी तौबा कीजिए

ऐ मेरे प्यारे भाई! तौबा फ़ौरन वाजिब है जिसका मतलब है उसको मोअख़्ख़र(आख़िर में) करना और टालना एक और गुनाह है जो तौबा का मोहताज है और ये टालने वाला जो कहता है कि कल तौबा करूँगा, क्या उसे पता है कि कल तक वह ज़िन्दा रहेगा? बल्कि क्या उसे पता है कि वह अपनी जगह से उठ भी सकेगा? क्योंकि मौत अचानक बगैर असबाब के और बगैर इब्तिदाई अलामात के आ जाती है, हमने कितने लोग देखे जो अचानक हरकते क़ल्ब के बंद हो जाने की वजह से मर गए, या दिलदोज़ हादसात के सबब, या ऐसे असबाब की वजह से जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता.

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या कमाई करेगा और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा."

और अल्लाह सुब्हाना व तआला ने उस चीज़ की तरफ़ जल्दी करने का हुक्म दिया है जो बख़्शिश को वाजिब करती हो और उसमें से तौबा है. पस अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "और अपने रब की जानिब से बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ एक-दूसरे से बढ़ कर दौड़ो, जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन (के बराबर) है."

और अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "पस नेकियों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो."

और अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया: "और वो लोग कि जब कोई बेहयाई करते हैं, या अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं, पस अपने गुनाहों की बख़्शिश माँगते हैं और अल्लाह के सिवा और कौन गुनाह बख़्शता है? और उन्होंने जो किया उस पर इसरार नहीं करते, जबकि वो जानते हैं."

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "हलाकत है उन लोगों के लिए जो अपने किए पर इसरार करते हैं, हालाँकि वो जानते होते हैं."

فَيَا اَخِی الْحَبِيْبَ:

تُبِ الْاٰنَ قَبْلَ اَنْ تَتَرَاكَمَ الظُّلْمَةُ عَلٰى قَلْبِکَ،فَلَا تَسْتَطِيْعُ فَكَاكًا مِنَ الْمَعَاصِیْ.

تُبِ الْاٰنَ قَبْلَ اَنْ يَهْجُمَ الْمَرَضُ اَوِ الْمَوْتُ فَلَا تَجِدُ مُهْلَةً لِلتَّوْبَةِ.

تُبِ الْاٰنَ قَبْلَ اَنْ يَاْتِيَکَ مَلَکُ الْمَوْتِ فَتَقُوْلُ:﴿رَبِّ ارْجِعُوْنِ﴾ فَيُقَالُ لَکَ﴿كَلَّا﴾.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तो ऐ मेरे प्यारे भाई!

अभी तौबा करो इससे पहले की तुम्हारे दिल पर स्याही की कई तहें चढ़ जाऐं तो तुम नाफरमानी से किनारा कशी की ताक़त ना रख सको-अभी तौबा करो इससे पहले कि मर्ज़ या मोत हमला करदे फिर तुम तोबा की मोहलत ही ना पाओ-

अभी तौबा करो इससे पहले कि तुम्हारे पास मलिकुल मौत आए तो फिर तुम कहोः"ऐ मेरे रब! मुझे वापस लौटा." तो तुमसे कहा जाए: "हरगिज़ नहीं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَضَائِلُ التَّوْبَةِ

التَّوْبَةُ فِی الْحَقِیْقَةِ هِیَ دِیْنُ الْاِسْلَامِ وَمَنَازِلُ الْاِیْمَانِ، وَلَا یَسْتَغْنِیْ عَنْهَا الْاِنْسَانُ فِیْ جَمِیْعِ مَرَاحِلِ حَیَاتِهٖ،فَالسَّعِیْدُ مَنْ جَعَلَهَا مُلَازِمَةً لَهٗ فِیْ رِحْلَتِهٖ اِلَی اللّٰهِ وَالدَّارِ الْاٰخِرَةِ وَالشَّقِیُّ مَنْ اَهْمَلَهَا وَتَرَکَهَا وَرَاءَ ظَهْرِهٖ.

وَلِلتَّوْبَةِ فَضَائِلُ کَثِیْرَةٌ، مِنْهَا:

1. اَنَّهَا سَبَبٌ جَالِبٌ لِمَحَبَّةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ...قَالَ تَعَالٰی: ﴿اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ﴾ (البقرة:222)

2. اَنَّهَا سَبَبٌ لِلْفَلَاحِ قَالَ تَعَالٰی: ﴿وَتُوْبُوْٓا اِلَی اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾ (النور:31)

3. اَنَّهَا سَبَبٌ لِقُبُوْلِ اَعْمَالِ الْعَبْدِ وَالْعَفْوِ عَنْ سَیِّئَاتِهٖ قَالَ تَعَالٰی: ﴿وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْ عَنِ السَّیِّاٰتِ﴾ (الشوریٰ:25)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ یَتُوْبُ اِلَی اللّٰهِ مَتَابًا﴾ (الفرقان:71)

اَیْ تُقْبَلُ تَوْبَتُهٗ.

4. اَنَّهَا سَبَبٌ لِدُخُوْلِ الْجَنَّةِ وَالنَّجَاةِ مِنَ النَّارِ:قَالَ تَعَالٰی: ﴿فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ یَلْقَوْنَ غَیًّا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِکَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا یُظْلَمُوْنَ شَیْئًا﴾ (مریم:59،60)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा के फ़ज़ाइल

हक़ीक़त में तौबा दीने इस्लाम है और ईमान की मंज़िलें हैं, और इन्सान अपनी ज़िन्दगी के तमाम मरहलों (मोक़ों) में इससे बेनियाज़ नहीं हो सकता. पस ख़ुशनसीब है वो जिसने अल्लाह और आख़िरी घर की तरफ़ सफ़र करने में इसको लाज़िम कर लिया है और बदबख़्त है वो जिसने इसको छोड़ दिया है और पीठ पीछे डाल दिया है.

और तौबा के फ़ज़ाइल बहुत ज़्यादा हैं जिनमें से कुछ ये हैं:

1.ये अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की मोहब्बत हासिल करने की वजह है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह उनसे मोहब्बत करता है जो तौबा करने वाले हैं और उनसे मोहब्बत करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं."

2.यह निजात की वजह है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तुम सब अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मोमिनो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ."

3.ये बन्दे के आमाल के क़ुबूल करने और उसके गुनाहों से दरगुज़र करने की वजह है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और वो ही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल करता है और बुराईयों से दरगुज़र करता है."

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जिसने तौबा की और नेक अमल किया तो यक़ीनन वह अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करता है, सच्चा रुजूअ करना." यानि उसकी तौबा क़ुबूल की जाती है.

4. ये जन्नत में दाख़िल होने और आग से निजात की वजह है.

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ उनकी जगह आए जिन्होंने नमाज़ को ज़ाया कर दिया और ख़्वाहिशात के पीछे लग गए तो वह अनक़रीब गुमराही को मिलेंगे. मगर जिसने तौबा की और ईमान लाए और नेक अमल किए तो यह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर कुछ ज़ुल्म ना किया जाएगा."

5. اَنَّهَا سَبَبٌ لِلْمَغْفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ: قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ (الاعراف:153)

6. اَنَّهَا سَبَبٌ فِيْ تَبْدِيْلِ السَّيِّئَاتِ اِلٰى حَسَنَاتٍ: قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا o يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا o اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا﴾ (الفرقان:70-68)

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: التَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ. (رواه ابن ماجة وصححه الالبانی)

7. اَنَّهَا سَبَبٌ لِكُلِّ خَيْرٍ: قَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ﴾ (التوبة:3)

وَقَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ﴾ (التوبة:74)

8. اَنَّهَا سَبَبٌ لِلْاَيْمَانِ وَالْاَجْرِ الْعَظِيْمِ: قَالَ تَعَالٰى: ﴿اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا﴾ (النسآء:146)

9. اَنَّهَا سَبَبٌ فِيْ نُزُوْلِ الْبَرَكَاتِ مِنَ السَّمَاءِ وَزِيَادَةِ الْقُوَّةِ: قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ﴾ (هود:52)

10. وَمِنْ فَضَائِلِ التَّوْبَةِ اَنَّهَا سَبَبٌ فِيْ دُعَاءِ الْمَلَائِكَةِ لِلتَّائِبِيْنَ: وَذٰلِكَ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

5. ये बख़्शिश और रहमत का सबब है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जिन लोगों ने बुरे आमाल किए, फिर उनके बाद तौबा करली और ईमान ले आए, उसके बाद बेशक आपका रब ज़रूर बेहद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है."

6. ये गुनाहों के नेकियों में बदल जाने का सबब है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जो ये करेगा वो सख़्त गुनाह पाएगा. उसके लिए क़यामत के दिन अज़ाब दोगुना किया जाएगा और वह हमेशा उसमें ज़लील किया हुआ रहेगा. मगर जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक अमल किया तो यही वह लोग हैं जिनकी बुराइयाँ अल्लाह नेकियों में बदल देगा और अल्लाह बेहद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है." और नबीﷺ ने फ़रमायाः गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे इसने गुनाह किया ही नहीं-

7. ये हर भलाई के हुसूल का सबब है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "पस अगर तुम तौबा करो तो वो तुम्हारे लिए बहतर है." और अल्लाह सुब्हानहु ने फ़रमाया: "पस अगर वो तौबा कर लें तो उनके लिए बहतर होगा."

8. ये ईमान और अजरे अज़ीम का सबब है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "मगर वो लोग जिन्होंने तौबा की और इस्लाह करली और अल्लाह को मज़बूती से थाम लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ये लोग मोमिनों के साथ होंगे और अल्लाह मोमिनों को जल्द ही बहुत बड़ा अजर देगा."

9. ये आसमान से बरकात के नुज़ूल और क़ुव्वत को बढ़ाने का सबब है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से माफ़ी माँगो, फिर उसी के आगे तौबा करो वो तुम पर मूसलाधार बारिश बरसाएगा और तुम्हारी मौजूदा क़ुव्वत में मज़ीद इज़ाफ़ा करेगा, पस तुम मुजरिमों की तरह मुँह ना फेरो."

10. तौबा के फ़ज़ाइल में से ये भी है कि यह तौबा करने वालों के लिए फ़रिश्तों की दुआओं का बाइस है. और ये

كَمَا قَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ﴾ (غافر:7)

11. وَمِنْ فَضَائِلِهَا اَنَّهَا طَاعَةٌ مُرَادَةٌ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ: وَذٰلِكَ كَمَا قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ﴾ (النسآء:27)

فَالتَّائِبُ فَاعِلٌ لِمَا يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَيَرْضَاهُ.

12. وَمِنْ فَضَائِلِهَا اَنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَفْرَحُ بِهَا: وَذٰلِكَ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَللّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهٖ حِيْنَ يَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنْ اَحَدِكُمْ كَانَ عَلٰى رَاحِلَتِهٖ بِاَرْضٍ فَلَاةٍ، فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ وَعَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ، فَاَيِسَ مِنْهَا، فَاَتٰى شَجَرَةً فَاضْطَجَعَ فِيْ ظِلِّهَا، وَقَدْ اَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهٖ، فَبَيْنَمَا هُوَ كَذٰلِكَ اِذَا هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهٗ، فَاَخَذَ بِخِطَامِهَا ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ: "اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَبْدِيْ وَاَنَا رَبُّكَ" اَخْطَاَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ. (رواه مسلم)

13. وَالتَّوْبَةُ كَذٰلِكَ سَبَبٌ فِيْ نُوْرِ الْقَلْبِ وَاِشْرَاقِهٖ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اَخْطَاَ نُكِتَتْ فِيْ قَلْبِهٖ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ، فَاِنْ هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صُقِلَ قَلْبُهٗ، وَاِنْ عَادَ زِيْدَ فِيْهَا حَتّٰى تَعْلُوَ قَلْبَهٗ وَهُوَ الرَّانُ الَّذِيْ ذَكَرَ اللّٰهُ تَعَالٰى

जैसा की अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जो (फ़रिश्ते) अर्श उठाए हुए हैं और जो उसके गिर्द हैं सब अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए बख़्शिश तलब करते (और कहते) हैं: ऐ हमारे रब! तूने अपनी रहमत और इल्म से हर चीज़ का इहाता कर रखा है लिहाज़ा उनको बख़्श दे जिन्होंने तौबा की और तेरे रास्ते की पैरवी की और उनको आग के अज़ाब से बचा ले."

11. और इसके फज़ाइल में से ये भी है कि ये ऐसी इताअत है जो अल्लाह अज्ज़ व जल्ल को मतलूब व मक़सूद है. और यही जैसा की अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अल्लाह चाहता है कि तुम पर महेरबानी फरमाए." पस तौबा करने वाला वो काम कर रहा होता है जो अल्लाह तआला को पसंद है और उस पर वो राज़ी होता है.

12. और उसके फ़ज़ाइल में से एक ये है कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल उस पर ख़ुश होता है. जैसा की नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह अपने बन्दे की तौबा से जिस वक़्त वो उसकी तरफ़ तौबा करता है तुम्हारे उस शख़्स की निस्बत ज़्यादा ख़ुश होता है जो किसी चटियल मैदान में अपनी सवारी पर हो, तो वो सवारी उससे भाग निकली जबकि उस पर उसका खाना और पानी था, तो वो उससे मायूस हो गया, फिर वो एक दरख़्त के पास आया और उसके साए में लेट गया, वह अपनी सवारी से मायूस हो चुका है, तो वो इसी हालत में है कि क्या देखता है कि सवारी उसके पास खड़ी है, उसने उसकी लगाम को थाम लिया फिर ख़ुशी की शिद्दत में ये कहा ऐ अल्लाह तू मेरा बंदा है और मैं तेरा रब हूँ." उसने ख़ुशी की शिद्दत में ग़लती की.

13. इसी तरह तौबा दिल के नूर और उसके चमकाने का सबब है. नबी ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक जब बंदा ग़लती करता है तो उसके दिल में एक स्याह नुक़ता लगा दिया जाता है, अगर वो उससे हट जाए, बख़्शिश माँग ले और तौबा करले तो उसके दिल को साफ़ कर दिया जाता है और अगर वो दोबारा गुनाह करता है तो उन (स्याह नुक़तों) में इज़ाफा कर दिया जाता है यहाँ तक कि उसके दिल पर वो (नुक़ते) ग़ालिब आ जाते हैं." और ये है वो ज़ंग जिसका अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है.

﴿كَلَّا بَلْ سكته رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ﴾

(رواه احمد والترمذی وابن ماجة وحسنه الالبانی)

فَيَا اَخِی الْحَبِيْبَ!

جَدِيْرٌ بِكُلِّ عَاقِلٍ اَنْ يُبَادِرَ اِلٰى مَا هٰذَا فَضْلُهُ وَتِلْكَ ثَمَرَتُهُ...

اَخِیْ!

قَدِّمْ لِنَفْسِكَ تَوْبَةً مَرْجُوَّةً

قَبْلَ الْمَمَاتِ وَقَبْلَ حَبْسِ الْاَلْسُنِ

بَادِرْ بِهَا غَلَقَ النُّفُوْسِ فَاِنَّهَا

ذُخْرٌ وَغُنْمٌ لِلْمُنِيْبِ الْمُحْسِنِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

"हरगिज़ नहीं, बल्कि उन लोगों के दिलों पर उनके बुरे आमाल का ज़ंग लग गया है."

तो ऐ मेरे प्यार भाई!

हर अक़लमन्द को लायक़ है कि वो उस चीज़ की तरफ़ जल्दी करे जिसकी ये फ़ज़ीलत है और जिसका ये फल है.

मेरे भाई!

अपने लिए (अल्लाह की बारगाह में) ऐसी तौबा भेजो जिससे उम्मीद वाबस्ता की गई हो.

मौत से पहले-पहले और ज़बानों के रुक जाने से पहले-पहले.

तौबा में पहल करलो, नफ़्सों के बंद हो जाने से पहले-पहले.

क्योंकि यह ज़खीरा और ग़नीमत है ऐसे आजिज़ी करने वाले के लिए नेकी करने वाले के लिए.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

شُرُوْطُ التَّوْبَةِ الصَّادِقَةِ

هُنَاکَ شُرُوْطٌ لِلتَّوْبَةِ الصَّادِقَةِ لَا تَصِحُّ وَلَا تُقْبَلُ اِلَّا بِهَا،وَهِیَ:

اَوَّلًا-اَلْاِسْلَامُ:

فَالتَّوْبَةُ لَا تَصِحُّ مِنْ کَافِرٍ؛لِاَنَّ کُفْرَهُ دَلِیْلٌ عَلٰی کِذْبِهٖ فِی ادِّعَاءِ التَّوْبَةِ، وَتَوْبَةُ الْکَافِرِ دُخُوْلُهُ فِی الْاِسْلَامِ اَوَّلًا...قَالَ تَعَالٰی:﴿وَلَیْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ حَتّٰٓی اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْئٰنَ وَلَا الَّذِیْنَ یَمُوْتُوْنَ وَهُمْ کُفَّارٌ اُولٰٓئِکَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا﴾.

(النسآء:18)

ثَانِیًا-اَلْاِخْلَاصُ لِلّٰهِ:

فَاللّٰهُ تَعَالٰی لَا یَقْبَلُ مِنَ الْاَعْمَالِ اِلَّا مَا کَانَ خَالِصًا لَهُ وَحْدَهُ لَیْسَ لِاَحَدٍ فِیْهِ شَیْءٌ،وَقَدْ یَتُوْبُ الْاِنْسَانُ مِنَ الْمَعْصِیَةِ لِاَنَّهُ لَا یَسْتَطِیْعُ فِعْلَهَا،کَمَنْ لَا یَجِدُ ثَمَنَ الْخَمْرِ فَیَتُوْبُ مِنْ شُرْبِهَا وَفِیْ قَرَارَةِ نَفْسِهٖ اَنَّهُ لَوْ وَجَدَ ثَمَنَهَا لَاشْتَرَاهَا وَشَرِبَهَا،فَهٰذَا تَوْبَتُهُ بَاطِلَةٌ لَا تَصِحُّ؛لِاَنَّهُ لَمْ یُخْلِصْ لِلّٰهِ تَعَالٰی فِیْهَا.

قَالَ تَعَالٰی:﴿فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَo اَلَا لِلّٰهِ الدِّیْنُ الْخَالِصُ﴾

(الزمر: 2، 3)

وَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ:اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ،وَاِنَّمَا لِکُلِّ امْرِیءٍ مَا نَوٰی.

(متفق علیه)

© AHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सच्ची तौबा की शराइत

सच्ची तौबा की कुछ ऐसी शराइत हैं कि जिनके बग़ैर ना वो सही होती है और ना क़ुबूल की जाती है. वो दर्जज़ेल (नीचे लिखी) हैं:

1. इस्लाम:

   काफ़िर की तौबा दुरुस्त नहीं क्योंकि उसका कुफ़्र ही उसके तौबा के दावे को झुठलाने पर दलील है, काफ़िर की तौबा यही है कि वो सबसे पहले इस्लाम में दाख़िल हो जाए. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तौबा उन लोगों की नहीं जो बुरे काम करते जाते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के पास मौत आ जाती है तो वो कहता है बेशक मैंने अब तौबा करली और ना उन लोगों की है जो इस हाल में मरते हैं कि वह काफ़िर होते हैं, यही वह लोग हैं जिनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है."

2. खालिस अल्लाह के लिए :

   पस अल्लाह तआला आमाल में से नहीं क़ुबूल करता मगर जो उस अकेले के लिए ख़ालिस हो, किसी का उसमें कोई हिस्सा ना हो और कभी इन्सान गुनाह से तौबा इसलिए कर लेता है क्योंकि वो उसको करने की ताक़त नहीं रखता जैसे किसी के पास शराब के लिए पैसे ना हों, तो वो पीने से तौबा कर लेता है हालाँकि उसके दिल में ये बात होती है कि अगर उसके पास क़ीमत होती तो वो उसको ख़रीद कर पीता तो उसकी यह तौबा बातिल है और सही नहीं है क्योंकि अल्लाह के लिए उसने इस तौबा में इख़्लास नहीं किया. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "पस अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि दीन को उसी के लिए ख़ालिस करने वाले हो. ख़बरदार! ख़ालिस दीन सिर्फ अल्लाह ही का हक़ है."

   और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "आमाल का दारोमदार नियतों पर है और हर शख़्स के लिए वोही है जिसकी उसने नियत की."

وَكَانَ مِنْ دُعَاءِ الْفَارُوْقِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ: اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ عَمَلِیْ كُلَّهُ صَالِحًا، وَاجْعَلْهُ لِوَجْهِكَ خَالِصًا، وَلَا تَجْعَلْ لِاَحَدٍ فِيْهِ شَيْئًا.

ثَالِثًا-اَلْاِقْلَاعُ عَنِ الْمَعْصِيَةِ:

فَلَا تُتَصَوَّرُ صِحَّةُ التَّوْبَةِ مَعَ الْاِقَامَةِ عَلَى الْمَعَاصِیْ حَالَ التَّوْبَةِ... اَمَّا اِذَا عَادَ الذَّنْبَ بَعْدَ التَّوْبَةِ، وَقَدْ تَوَفَّرَتْ فِی التَّوْبَةِ شُرُوْطُهَا، وَمِنْهَا الْاِقْلَاعُ عَنِ الذَّنْبِ؛ فَلَا تَبْطُلُ تَوْبَتُهُ الْمُتَقَدِّمَةُ، وَلٰكِنَّهُ يَحْتَاجُ اِلٰى تَوْبَةٍ اُخْرٰى... وَهٰكَذَا.

قَالَ النَّوَوِیُّ: وَاِذَا تَابَ تَوْبَةً صَحِيْحَةً بِشُرُوْطِهَا، ثُمَّ عَادَ الذَّنْبَ؛ كُتِبَ عَلَيْهِ ذٰلِكَ الذَّنْبُ الثَّانِیْ وَلَمْ تَبْطُلْ تَوْبَتُهُ. (شرح صحیح مسلم)

وَقَالَ شَيْخُ الْاِسْلَامِ ابْنُ تَيْمِيَةَ: وَاِذَا تَابَ تَوْبَةً صَحِيْحَةً غُفِرَتْ ذُنُوْبُهُ، فَاِنْ عَادَ اِلَى الذَّنْبِ فَعَلَيْهِ اَنْ يَتُوْبَ، وَاِذَا تَابَ قَبِلَ اللّٰهُ تَوْبَتَهُ اَيْضًا.
(مجموع فتاوی شیخ الاسلام)

رَابِعًا-اَلْاِعْتِرَافُ بِالذَّنْبِ:

اِذْ لَا يُمْكِنُ اَنْ يَتُوْبَ الْمَرْءُ مِنْ شَیْءٍ لَا يَعُدُّهُ ذَنْبًا، كَالَّذِیْ يَبْتَدِعُ فِیْ دِيْنِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مَا لَيْسَ مِنْهُ، فَاِنَّهُ لَا يَعُدُّ بِدْعَتَهُ ذَنْبًا، بَلْ اِنَّهُ يَتَقَرَّبُ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِهَا...

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और उमर फ़ारूक़ बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ की दुआ में यह अल्फ़ाज़ भी होते थे: ऐ मेरे अल्लाह! मेरे तमाम आमाल को नेक कर दे, और अपने चेहरे के लिए ख़ालिस कर दे, और किसी के लिए भी इसमें कोई हिस्सा ना बनाना.

3. मासियत से किनारा कश(अलग) हो जाना:

तो तौबा की हालत में गुनाहों पर क़ायम रहते हुए तौबा के सही होने का तसव्वुर नहीं किया जा सकता. और रही ये सूरत कि तौबा करने के बाद गुनाह का दोबारा करना जबकि उसकी तौबा में शरतें पाई गई थीं, और उनमें से ये भी था कि वह गुनाह से किनारा कश हो जाए, तो उसकी साबिक़ा (पिछली) तौबा बातिल(ज़ाया)नहीं होगी मगर उसको एक और तौबा की ज़रूरत होगी और इसी तरह होता रहेगा.

नूवी कहते हैं: जब इन्सान शरतों के साथ सही तौबा करले, फिर दोबारा गुनाह करे, तो दूसरा गुनाह लिखा जाएगा, और उसकी तौबा बातिल(ज़ाया) नहीं होगी.

और शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया कहते हैं: जब वो सही तौबा कर लेगा उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाऐंगे और अगर वो गुनाह की तरफ़ दोबारा लौटे तो उसको दोबारा तौबा करनी होगी और जब वो तौबा करेगा अल्लाह तआला उसकी तौबा को फिर क़ुबूल कर लेगा.

4. गुनाह का इक़रार करना:

क्योंकि ये मुमकिन ही नहीं है कि आदमी किसी ऐसी चीज़ से तौबा करे जिसको वो गुनाह नहीं गिन रहा. उस आदमी की तरह जो अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के दीन में एक ऐसा मसला ईजाद कर लेता है जो दीन में नहीं है, वह अपनी बिदअत को गुनाह शुमार नहीं करता, बल्कि वो तो बिदअत के ज़रिए अल्लाह का क़ुर्ब हासिल कर रहा होता है.

وَفِیْ حَدِیْثِ الْاِفْکِ قَالَ النَّبِیُّ ﷺ لِعَائِشَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا:

اَمَّا بَعْدُ یَاعَائِشَةُ! اِنَّهُ قَدْ بَلَغَنِیْ عَنْکِ کَذَا وَ کَذَا، فَاِنْ کُنْتِ بَرِیْئَةً فَسَیُبَرِّئُکِ اللّٰهُ، وَاِنْ کُنْتِ اَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرِی اللّٰهَ وَتُوْبِیْ اِلَیْهِ؛ فَاِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اعْتَرَفَ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللّٰهُ عَلَیْهِ. (متفق علیه)

وَمِنْ هُنَا کَانَتِ الْمَعْصِیَةُ اَقَلَّ خُطُوْرَةً مِنَ الْبِدْعَةِ، لِاَنَّ الْمَعْصِیَةَ یُتَابُ مِنْهَا فِی الْغَالِبِ، اَمَّا الْبِدْعَةُ فَلَا یُتَابُ مِنْهَا فِی الْغَالِبِ.

خَامِسًا-اَلنَّدَمُ عَلٰی مَا سَلَفَ مِنَ الذُّنُوْبِ:

وَهٰکَذَا الْمُخَالَفَاتُ، وَلَا تُتَصَوَّرُ التَّوْبَةُ اِلَّا مِنْ نَادِمٍ خَائِفٍ وَجِلٍ مُشْفِقٍ عَلٰی نَفْسِهِ مِمَّا حَصَلَ مِنْهُ، وَلِذٰلِکَ قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ .

(رواه احمد وابن ماجة وصححه الالبانی)

سَادِسًا-رَدُّ الْمَظَالِمِ اِلٰی اَهْلِهَا:

اِنْ کَانَتِ الْمَعْصِیَةُ مُتَعَلِّقَةً بِحُقُوْقِ الْاٰدَمِیِّیْنَ، قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: مَنْ کَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِاَحَدٍ مِنْ عِرْضٍ اَوْ شَیْءٍ، فَلْیَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْیَوْمَ قَبْلَ اَلَّا یَکُوْنَ دِیْنَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ، اِنْ کَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ اُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ، وَاِنْ لَمْ تَکُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ اُخِذَ مِنْ سَیِّئَاتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَیْهِ. (رواه البخاری)

سَابِعًا-وُقُوْعُ التَّوْبَةِ قَبْلَ الْغَرْغَرَةِ:

وَالْغَرْغَرَةُ هِیَ عَلَامَةٌ مِنْ عَلَامَاتِ الْمَوْتِ، تَصِلُ فِیْهَا الرُّوْحُ اِلَی الْحُلْقُوْمِ

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

और वाक़िया इफ़क से मुताल्लिक़ हदीस में है कि नबी ﷺ ने आयशा رضـــی الله عنها से कहा था: "ऐ आयशा! मुझे तुम्हारी जानिब से इस-इस तरह की बात पहुँची है अगर तुम पाक हो, तो अल्लाह तुम्हें पाक करने का ऐलान कर देगा, और अगर तुम किसी गुनाह की मुरतकिब हुई हो तो अल्लाह से बख़्शिश तलब करो और उसकी तरफ तौबा करो, क्योंकि जब बन्दा इक़रार कर ले फिर तौबा करे तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाता है.

और यहाँ से यह पता चला कि नाफ़रमानी का ख़तरा बिदअत से कम है क्योंकि अक्सर नाफ़रमानी से तौबा करली जाती है और जहाँ तक बिदअत का ताल्लुक़ है तो अक्सर इससे तौबा नहीं की जाती.

5. जो गुनाह पहले हो चुके हैं उन पर निदामत (शर्मिन्दगी) का इज़हार:

और इसी तरह जो (अल्लाह और उसके रसूल की) मुख़ालफ़तें हुई हैं उनमें तौबा का तसव्वुर नहीं किया जा सकता मगर उस आदमी की तरफ़ से जो नादिम(शर्मिन्दा) हो,डरने वाला हो,ख़ौफ़ज़दा हो,अपने नफ़्स पर उस चीज़ से डरता हो जो उससे सरज़द हुई है.इसी लिए नबी ﷺ ने फ़रमाया: "नादिम(शर्मिन्दा)हो जाना तौबा है."

6. लोगों के मारे गए हुक़ूक़ उनको वापस लौटाना:

अगर मासियत का ताल्लुक़ आदमियों के हुक़ूक़ के साथ हो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने किसी की इज़्ज़त या किसी और चीज़ पर ज़ुल्म किया हो तो उसे चाहिए आज ही वह उससे माफ़ करा ले इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें ना कोई दीनार होगा ना दिरहम. अगर उसका नेक अमल होगा तो उसके ज़ुल्म के बा-क़द्र(बराबर) उससे ले लिया जाएगा और अगर उसकी नेकियाँ ना हुईं तो मज़लूम के गुनाह ज़ालिम पर डाल दिए जाऐंगे."

7. तौबा हलक़ में रूह अटकने से पहले वाक़ेअ हो:

और मौत की अलामतों में से एक अलामत गले में रूह का फँसना है, समें रूह हलक़ तक पहुँच जाती है.

فَلَا بُدَّ اَنْ تَكُوْنَ التَّوْبَةُ قَبْلَ الْمَوْتِ كَمَا قَالَ سُبْحَانَهُ:

﴿وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْئٰنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا﴾ (النسآء:18)

وَقَالَ النَّبِىُّ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ يَقْبَلُ تَوْبَةُ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ.

(رواه الترمذى واحمد وصححه النووى)

اَخِى الْحَبِيْبَ:

خُذْ مِنْ شَبَابِكَ قَبْلَ الْمَوْتِ وَالْهَرَمِ

وَبَادِرِ التَّوْبَةَ قَبْلَ الْفَوْتِ وَالنَّدَمِ

وَاعْلَمْ بِاَنَّكَ مَجْزِىٌّ وَمُرْتَهَنٌ

وَرَاقِبِ اللّٰهَ وَاحْذَرْ زَلَّةَ الْقَدَمِ

لِاَنَّ الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ مِنْ مَغْرِبِهَا اٰمَنَ النَّاسُ اَجْمَعُوْنَ وَتَيَقَّنُوْا بِقُرْبِ قِيَامِ السَّاعَةِ،وَلٰكِنَّ التَّوْبَةَ وَالْاِيْمَانَ عِنْدَ ذٰلِكَ لَا تَنْفَعُ...قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ بِالْمَغْرِبِ بَابًا مَسِيْرَةُ عَرْضِهِ سَبْعُوْنَ عَامًا لِلتَّوْبَةِ،لَا يُغْلَقُ مَا لَمْ تَطْلُعِ الشَّمْسُ مِنْ قِبَلِهِ،وَذٰلِكَ قَوْلُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ﴿يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا﴾ (رواه الترمذى وابن ماجة واحمد)

وَقَالَ:اِنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوْبَ مُسِىْءُ النَّهَارِ،وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوْبَ مُسِىْءُ اللَّيْلِ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا. (رواه مسلم)

© HUMANITY INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तो ज़रूरी है कि तौबा मौत से पहले हो, जैसे अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया:

"और तौबा उन लोगों की नहीं जो बुरे काम करते जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के पास मौत आ जाती है तो वह कहता है बेशक मैंने अब तौबा करली और ना उनकी है जो इस हाल में मरते हैं कि वह काफ़िर होते हैं,यही वो लोग हैं जिनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है."

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक उसकी रूह हलक़ में ना अटक जाए."

मेरे प्यारे भाई!

मौत और बुढ़ापा आने से पहले अपनी जवानी से अखज़(हासिल) करलो, महरूम और शर्मिंदा होने से पहले तौबा करलो.

जान लो कि तुम बदला पाने वाले और गिरवी रखे हुए हो, अल्लाह को हमेशा पेशे नज़र(सामने) रखो और पाँव के फिसलने से एहतियात(सावधानी)करो. क्योंकि जब सूरज मग़रिब की तरफ़ से निकलेगा तो तमाम लोग ईमान ले आऐंगे और उनको पक्का यक़ीन हो जाएगा कि क़यामत क़रीब आ गई, लेकिन उस वक़्त तौबा और ईमान फ़ायदा नही देगा.

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने तौबा के लिए मग़रिब में एक दरवाज़ा बनाया है, उसकी चौड़ाई की मुसाफ़त सत्तर साल है और ये उस वक़्त तक बंद नहीं किया जाएगा जब तक कि सूरज उसकी तरफ़ से ना निकला हो" और इस पर अल्लाह अज्ज़ व जल्ल का यह क़ौल दलालत करता है: "जिस दिन आपके रब की कोई निशानी आएगी किसी शख़्स को उसका ईमान फ़ायदा ना देगा, जो इससे पहले ईमान ना लाया था, या अपने ईमान में कोई नेकी ना कमाई थी."

और आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला रात के वक़्त अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनाहगार तौबा कर ले और दिन के वक़्त अपना हाथ फैलता है ताकि रात का गुनाहगार तौबा कर ले यहाँ तक कि सूरज अपने मग़रिब से निकल जाए."

اَقْوَالُ السَّلَفِ فِی التَّوْبَةِ

لِلسَّلَفِ عِبَارَاتٌ جَمِيْلَةٌ وَاِضَاءَاتٌ عَطِرَةٌ تُبَيِّنُ عِظَمَ مَنْزِلَةِ التَّوْبَةِ وَتَحُثُّ عَلٰى سُلُوْكِهَا،وَمِنْ هٰذِهِ الْاَقْوَالِ:

1. قَوْلُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ:جَالِسُوا التَّوَّابِيْنَ؛فَاِنَّهُمْ اَرَقُّ النَّاسِ اَفْئِدَةً.

2. قَوْلُ عَلِيِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ:عَجَبًا لِمَنْ يُهْلَكُ وَمَعَهُ النَّجَاةُ!...قِيْلَ لَهُ:وَمَا هِیَ؟قَالَ:التَّوْبَةُ وَالْاِسْتِغْفَارُ.

3. قَوْلُ اَحْمَدَ بْنِ عَاصِمٍ الْاَنْطَاكِیِّ:هٰذِهِ غَنِيْمَةٌ بَارِدَةٌ،اَصْلَحَ فِيْمَا بَقِیَ، يَغْفِرُ لَكَ فِيْمَا مَضٰى.

4. قَوْلُ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ:اَنْزَلَ اللّٰهُ قَوْلَهُ تَعَالٰى:﴿فَاِنَّهُ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا﴾ (الاسراء:25) فِی الرَّجُلِ يُذْنِبُ ثُمَّ يَتُوْبُ، ثُمَّ يُذْنِبُ ثُمَّ يَتُوْبُ.

5. قَوْلُ الْحَسَنِ الْبَصَرِیِّ:التَّوْبَةُ النَّصُوْحُ:نَدَمٌ بِالْقَلْبِ،وَاسْتِغْفَارٌ بِاللِّسَانِ،وَتَرْكٌ بِالْجَوَارِحِ،وَاِضْمَارٌ اَلَّا يَعُوْدَ.

6. قَوْلُ الْفُضَيْلِ بْنِ عَيَاضٍ:كُلُّ حُزْنٍ يَبْلٰى اِلٰى حُزْنِ التَّائِبِ.

7. قَوْلُ الرَّبِيْعِ بْنِ خُثَيْمٍ: اَتَدْرُوْنَ مَا الدَّاءُ وَالدَّوَاءُ وَالشِّفَاءُ؟قَالُوْا:لَا.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा के बारे में असलाफ(बुज़ुर्गों)के अक़वाल

सल्फ़ (बुज़ुर्गों) की कुछ ख़ूबसूरत इबारात (लिखाइ) हैं और खुशबूदार रोशनियाँ हैं जो तौबा की अज़ीम मंज़िलत को वाज़ेह करती हैं और उस पर चलने की तरग़ीब (हिम्मत) देती हैं और उन अक़वाल में से कुछ ये हैं:

1. सय्यदिना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ का क़ौल: तौबा करने वालों के पास बैठो, क्योंकि उनके दिल सब लोगों से ज़्यादा नरम होते हैं.
2. सय्यदिना अली बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ का क़ौल: ताज्जुब है उस शख़्स पर जो हलाक कर दिया जाए हालाँकि उसके पास निजात का सामान है. पूछा गया वह क्या है? कहा,तौबा और इस्तग़फार.
3. अहमद बिन आसिम अन्ताकी का क़ौल: यह ठंडी ग़नीमत है. जो बाक़ी मांदा ज़िन्दगी को ठीक कर देगी, और तेरे लिए उसको माफ़ कर देगी जो गुज़र गया.
4. सईद बिन मुसय्यब का क़ौल: अल्लाह तआला ने अपना ये फ़रमान: "तो यक़ीनन वो बार-बार रुजूअ करने वालों के लिए बेहद बख़्शने वाला है." उस आदमी के बारे में नाज़िल किया है जो गुनाह करता है फिर तौबा करता है, फिर गुनाह करता है फिर तौबा करता है.
5. हसन बसरी का क़ौल: ख़ालिस तौबा दिल की निदामत है, ज़बान से बख़्शिश का सवाल करना और आज़ा(जिस्म के हिस्सों)के साथ उस गुनाह को छोड़ देना है और दिल में ये बात रखना है कि दोबारा नहीं करेगा.
6. फ़ज़ील बिन अयाज़ का क़ौल: तमाम ग़म तौबा करने वाले के ग़म के आगे फ़ना(मिट जाना) हो जाते हैं.
7. रबीअ बिन ख़सीम का क़ौल: क्या तुम जानते हो कि बीमारी, इलाज और शिफ़ा (सेहत) क्या है? लोगों ने कहा: नहीं

قَالَ:اَلدَّاءُ الذُّنُوْبُ،وَالدَّوَاءُ الْاِسْتِغْفَارُ،وَالشِّفَاءُ اَنْ تَتُوْبَ ثُمَّ لَا تَعُوْدُ.

8.قَوْلُ طَلْقِ بْنِ حَبِيْبٍ:اِنَّ حُقُوْقَ اللّٰهِ اَعْظَمُ مِنْ اَنْ يَقُوْمَ بِهَا الْعَبْدُ؛ فَاَصْبَحُوْا تَائِبِيْنَ وَاَمْسَوْا تَائِبِيْنَ.

9.قَوْلُ شَقِيْقِ الْبَلْخِيِّ:عَلَامَةُ التَّوْبَةِ:اَلْبُكَاءُ عَلٰى مَا سَلَفَ،وَالْخَوْفُ مِنَ الْوُقُوْعِ فِى الذَّنْبِ،وَهِجْرَانُ اِخْوَانِ السُّوْءِ،وَمُلَازَمَةُ الْاَخْيَارِ.

10.قَوْلُ اَبِىْ عَلِيٍّ الرَّوْذَبَارِيِّ:مِنَ الْاِغْتِرَارِ اَنْ تُسِىْءَ فَيُحْسَنُ اِلَيْكَ، فَتَتْرُكُ التَّوْبَةَ تَوَهُّمًا اِنَّكَ تُسَامَحُ فِى الْهَفَوَاتِ.

11.قَوْلُ لُقْمَانَ لِابْنِهِ:يَابُنَىَّ،لَا تُؤَخِّرِ التَّوْبَةَ؛فَاِنَّ الْمَوْتَ يَاْتِىْ بَغْتَةً.

12.قَوْلُ اَبِىْ بَكْرٍ الْوَاسِطِيِّ:التَّاَنِّىْ فِىْ كُلِّ شَىْءٍ حَسَنٌ اِلَّا فِىْ ثَلَاثِ خِصَالٍ،وَذَكَرَ مِنْهَا التَّوْبَةَ عِنْدَ الْمَعْصِيَةِ.

13.قَوْلُ اِبْرَاهِيْمَ بْنِ اَدْهَمَ:مَنْ اَرَادَ التَّوْبَةَ فَلْيَخْرُجْ مِنَ الْمَظَالِمِ،وَلْيَدَعْ مُخَالَطَةَ النَّاسِ(اَىْ فِى الشَّرِّ)،وَاِلَّا لَمْ يَنَلْ مَا يُرِيْدُ.

14.قَوْلُ يَحْيَى بْنِ مُعَاذٍ:اَلَّذِىْ حَجَبَ النَّاسَ عَنِ التَّوْبَةِ طُوْلُ الْاَمَلِ، وَعَلَامَةُ التَّائِبِ اِسْبَالُ الدَّمْعَةِ،وَحُبُّ الْخَلْوَةِ،وَالْمُحَاسَبَةُ لِلنَّفْسِ عِنْدَ كُلِّ هَمَّةٍ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उन्होंने कहा: बीमारी गुनाह है और इस्तग़फार उसका इलाज है, शिफ़ा ये है तुम तौबा करलो और दोबारा ना करो.

8.तलक़ बिन हबीब का क़ौल: बेशक अल्लाह के हुक़ूक़ इस बात से बहुत ज़्यादा अज़ीम हैं कि बन्दा उनका हक़ अदा कर सके, तो तुम तौबा करने वाले हो कर (सुबह करो) और (शाम करो) तौबा करने वाले हो कर.

9.शक़ीक़ बल्ख़ी का क़ौल: तौबा की निशानी है: गुज़रे हुए गुनाहों पर रोना,और गुनाह में पड़ने से डरना,और बुरे लोगों के साथ मेल-मिलाप छोड़ देना और नेक लोगों की मजलिस को लाज़िम करना.

10.अबु अली रोज़बारी का क़ौल: यह धोखे की बात है कि तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक किया जाए तुम बुरा करो तो तुम यह वहम करते हुए तौबा छोड़ दो कि गलतियों के बारे में तुमसे माफ़ी का मामला किया जाएगा.

11.लुक़मान का अपने बेटे को कहना: ऐ मेरे बेटे तौबा में देर ना करो क्योंकि मौत अचानक आती है.

12.अबु बक्र वास्ती का क़ौल: हर चीज़ में ठहराव करना अच्छा है मगर तीन चीज़ों में नहीं. और उन्होंने उनमें से एक यह ज़िक्र किया: गुनाह के बाद तौबा करना.

13.इब्राहीम बिन अदहम का क़ौल: जो तौबा करना चाहता है वो लोगों के हक़ मारना छोड़ दे, और लोगों से मेल-जोल भी छोड़ दे (यानि बुरे कामों में). वरना वो अपने मक़सद को नहीं पा सकता.

14.याहया बिन मआज़ का क़ौल: जो चीज़ लोगों को तौबा करने से रोकती है वह लम्बी आरज़ू है, और तौबा करने वाले की अलामत हैं आँसूओं का गिराना, तन्हाई को पसंद करना, और हर काम के क़सद (इरादे) के वक़्त अपने नफ़्स का मुहासबा करना.

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُنَاجَاةُ تَائِبٍ

قَالَ مَنْصُوْرُ بْنُ عَمَّارٍ:

خَرَجْتُ لَيْلَةً،وَظَنَنْتُ اَنِّیْ قَدْ اَصْبَحْتُ،وَاِذَا عَلَیَّ لَیْلٌ،فَقَعَدْتُّ عِنْدَ بَابٍ صَغِیْرٍ،وَاِذَا بِصَوْتِ شَابٍّ یَبْکِیْ وَیَقُوْلُ:وَعِزَّتِکَ وَجَلَالِکَ مَا اَرَدْتُّ بِمَعْصِیَتِکَ مُخَالَفَتَکَ،وَلَا عَصَیْتُکَ حِیْنَ عَصَیْتُکَ وَاَنَا بِنِکَالِکَ جَاهِلٌ،وَلَا لِعُقُوْبَتِکَ مُتَعَرِّضٌ،وَلَابِنَظَرِکَ مُسْتَخِفٌّ،وَلٰکِنْ سَوَّلَتْ لِیْ نَفْسِیْ،وَغَلَبَتْ عَلَیَّ شِقْوَتِیْ،وَغَرَّنِیْ سَتْرُکَ الْمُرْخٰی عَلَیَّ...وَالْاٰنَ، فَمِنْ عَذَابِکَ مَنْ یُّنْقِذُنِیْ؟وَبِحَبْلِ مَنْ اَتَّصِلُ اِنْ قُطِعَتْ حَبْلُکَ عَنِّیْ؟!

وَا سَوْاَتَاهُ مِنْ تَصَرُّمِ اَیَّامِیْ فِیْ مَعْصِیَةِ رَبِّیْ!...یَاوَیْلِیْ!کَمْ اَتُوْبُ...وَکَمْ اَعُوْدُ...قَدْ حَانَ لِیْ اَنْ اَسْتَحِیْ مِنْ رَبِّیْ!

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा करने वाले की मुनाजात(दुआऐं)

मंसूर बिन अम्मार कहते हैं: एक रात मैं निकला और मैंने समझा कि सुब्ह हो गई है, जबकि रात बाक़ी थी, मैं एक छोटे से दरवाज़े के पास बैठ गया, क्या सुनता हूँ कि एक नौजवान की आवाज़ है वह रो रहा था और कह रहा था तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! मैंने तेरी नाफ़रमानी करके तेरी मुख़ालिफ़त का इरादा नहीं किया. जब मैंने तेरी नाफ़रमानी की थी तो इसलिए नाफ़रमानी नहीं की थी कि मैं तेरी सज़ा को जानने वाला नहीं और ना तेरी सज़ा का निशाना बनने वाला हूँ, ना तेरी नज़र को हल्का जानने वाला हूँ लेकिन मेरे नफ़्स ने मेरे लिए इस गुनाह को मुज़य्यन(सजा)कर दिया. मेरी बदनसीबी मुझ पर ग़ालिब आ गई और तेरे इस परदे ने मुझे धोखे में डाला जो तूने (मेरे ऐबों/बुराइयों पर) डाला हुआ था, और अब मुझे तेरे अज़ाब से कौन बचाने वाला है, मैं किस की रस्सी को पकड़ूं, अगर तेरी रस्सी मुझसे कट गई?

हाय ग़म! मेरे उन दिनों पर जो मेरे रब की नाफ़रमानी में गुज़र गए. हाय अफ़सोस! मैं कितनी बार तौबा करूँ, मैं कितनी बार वापस पलटूं! अब मुझ पर वक़्त आ चुका है कि मैं अपने रब से शर्म करलूं.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَامَاتُ التَّائِبِ

قَالَ بَعْضُ الْحُكَمَاءِ:اِنَّمَا تُعْرَفُ تَوْبَةُ الرَّجُلِ مِنْ سِتَّةِ اَشْيَاءٍ.

اَحَدُهَا-اَنْ يُمْسِكَ لِسَانَهُ مِنَ الْفُضُوْلِ وَالْغِيْبَةِ وَالْكَذِبِ وَكُلِّ ذَنْبٍ.

وَالثَّانِىْ-اَلَّا يَرٰى لِاَحَدٍ فِىْ قَلْبِهِ حَسَدًا وَلَا عَدَاوَةً.

وَالثَّالِثُ-اَنْ يُفَارِقَ اَصْحَابَ السُّوْءِ.

وَالرَّابِعُ-اَنْ يَكُوْنَ مُسْتَعِدًّا لِلْمَوْتِ،نَادِمًا مُسْتَغْفِرًا لِمَا سَلَفَ مِنْ ذُنُوْبِهِ، مُجْتَهِدًا عَلٰى طَاعَةِ رَبِّهِ.

وَالْخَامِسُ-اَنْ يَذْهَبَ عَنْهُ فَرَحَ الدُّنْيَا كُلَّهَا مِنْ قَلْبِهِ،وَيُرَى حُزْنُ الْاٰخِرَةِ كُلُّهَا فِىْ قَلْبِهِ.

وَالسَّادِسُ-اَنْ يَرٰى نَفْسَهُ فَارِغًا عَمَّا ضَمِنَ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الرِّزْقِ،مُشْتَغِلًا بِمَا اَمَرَ بِهِ.

فَاِذَا وُجِدَتْ فِيْهِ هٰذِهِ الْعَلَامَاتُ فَهُوَ مِنَ الَّذِيْنَ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ حَقِّهِمْ:

﴿اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ﴾ (البقرة:222)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा करने वालों की निशानियाँ

बाज़ हुक्मा(अक़्ल वालों)का कहना है कि छ: चीज़ों से इन्सान की तौबा पहचानी जाती है:

1.कि अपनी ज़बान को फ़ज़ूल बातों, ग़ीबत(बुराई),झूठ और हर गुनाह से रोक ले.

2.अपने दिल में किसी के लिए हसद/जलन और अदावत की राय ना रखे.

3.बुरे साथियों को छोड़ दे.

4.मौत की तैयारी करने वाला हो जाए, अपने पिछले गुनाहों पर बख़्शिश मांगने वाला, निदामत करने वाला हो जाए, अपने रब की इताअत पर ख़ूब महनत करने वाला हो जाए.

5.दुनिया की तमाम ख़ुशियाँ उसके दिल से निकल जाऐं. और आख़िरत का सारा ग़म उसके दिल में दिखाई दे.

6.वो रिज़्क़ (के हासिल की परेशानी) से अपने दिल को ख़ाली करले जिसका ज़िम्मा अल्लाह ने ले रखा है और जिसका उसे हुक्म दिया है उसमें मसरूफ़ हो जाए.

तो जब यह निशानियाँ उसमें पाई जाऐंगी तो वो उन लोगों में से होगा जिनके हक़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: "बेशक अल्लाह उनसे मोहब्बत करता है जो बहुत तौबा करने वाले हैं और उनसे मोहब्बत करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاجِبُ النَّاسِ تَجَاهَ التَّائِبِ

وَقِيْلَ: يَجِبُ عَلَى النَّاسِ تَجَاهَ التَّائِبِ اَرْبَعَةَ اَشْيَاءَ:

اَوَّلُهَا-اَنْ يُحِبُّوْهُ؛ فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ اَحَبَّهُ.

وَالثَّانِىْ-اَنْ يَحْفَظُوْهُ بِالدُّعَاءِ عَلٰى اَنْ يُثَبِّتَهُ اللّٰهُ عَلَى التَّوْبَةِ.

وَالثَّالِثُ-اَلَّا يُعَيِّرُوْهُ بِمَا سَلَفَ مِنْ ذُنُوْبِهِ.

وَالرَّابِعُ-اَنْ يُّجَالِسُوْهُ وَيُذَاكِرُوْهُ وَيُعِيْنُوْهُ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा करने वाले के हवाले से लोगों की ज़िम्मेदारी

और कहा गया है कि लोगों पर तौबा करने वाले के हवाले से चार चीज़ें वाजिब हैं:

1. वह उससे मोहब्बत करें क्योंकि अल्लाह तआला ने उससे मोहब्बत की है.
2. वह दुआ के ज़रिए उसकी हिफाज़त करें कि अल्लाह उसको तौबा पर साबित क़दम/जमा हुआ रखे.
3. वह उसको उसके पिछले गुनाहों पर ताना ना दें.
4. वह उसकी मजलिस में बैठें, उसके साथ बात चीत करें और उसकी मदद करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

غُرُوْرُ التَّوْبَةِ

قَالَ ابْنُ الْجَوْزِيِّ:

يَنْبَغِيْ لِلْعَاقِلِ اَنْ يَكُوْنَ عَلٰى خَوْفٍ مِنْ ذُنُوْبِهِ وَاِنْ تَابَ مِنْهَا وَبَكٰى عَلَيْهَا،وَاِنِّيْ رَاَيْتُ اَكْثَرَ النَّاسِ قَدْ سَكَنُوْا اِلٰى قُبُوْلِ التَّوْبَةِ،وَكَاَنَّهُمْ قَدْ قَطَعُوْا عَلٰى ذٰلِكَ،وَهٰذَا اَمْرٌ غَائِبٌ،ثُمَّ لَوْ غُفِرَتْ بَقِيَ الْخَجَلُ مِنْ فِعْلِهَا.

فَالْحَذْرُ الْحَذْرُ مِنْ كُلِّ مَا يُوْجِبُ خَجَلًا،وَهٰذَا اَمْرٌ قَلَّ اَنْ يَنْظُرَ فِيْهِ تَائِبٌ اَوْ زَاهِدٌ؛لِاَنَّهُ يَرٰى اَنَّ الْعَفْوَ قَدْ غَمَرَ الذَّنْبَ التَّوْبَةُ الصَّادِقَةُ،وَمَا ذَكَرْتُهُ يُوْجِبُ دَوَامَ الْحَذْرِ وَالْخَجَلِ.(صيد الخاطر)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा का ग़ुरूर

इब्ने जौज़ी कहते हैं: अक़्लमन्द को चाहिए कि वो अपने गुनाहों से डरता रहे चाहे वो उनसे तौबा कर चुका और रो चुका हो. मैंने अक्सर लोगों को देखा है कि वो तौबा की क़ुबूलियत से मुत्मइन हो जाते हैं गोया कि उनको इस बात का पक्का यक़ीन हो चुका है हालाँकि ये एक पोशीदा/छिपा मामला है फिर अगर वो माफ़ कर भी दिया गया तो उस बुरे काम को करने की शरमिंदगी भी तो बाक़ी है.

तो हर वो चीज़ जो शरमिंदगी की वजह है उससे बचना ही होगा. और ये ऐसा मामला है जिसमें तौबा करने वाला और ज़ोहद/पाकी इख़्तियार करने वाला कम ही ग़ौर करता है क्योंकि वो समझता है गुनाह को माफ़ी यानि सच्ची तौबा ने ढाँप लिया है. जो मैंने ज़िक्र किया है वो हमेशा एहतयात व शरमिंदगी को सामने रखने को वाजिब करता है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِدَايَةُ التَّوْبَةِ وَنِهَايَتُهَا

قَالَ بَعْضُ السَّلَفِ: اِنَّ لِلتَّوْبَةِ بِدَايَةً وَنِهَايَةً.

فَبِدَايَتُهَا:

اَلتَّوْبَةُ مِنَ الْكَبَائِرِ ثُمَّ الصَّغَائِرِ، ثُمَّ الْمَكْرُوْهَاتِ، ثُمَّ خِلَافِ الْاَوْلٰى، ثُمَّ مِنْ رُؤْيَةِ الْحَسَنَاتِ، ثُمَّ مِنْ رُؤْيَةٍ اَنَّهُ صَدَقَ فِى التَّوْبَةِ، ثُمَّ مِنْ كُلِّ خَاطِرٍ يَخْطُرُ لَهُ فِىْ غَيْرِ مَرْضَاةِ اللّٰهِ تَعَالٰى.

وَاَمَّا نِهَايَتُهَا:

فَالتَّوْبَةُ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ شُهُوْدِ رَبِّهِ تَعَالٰى مُرَاقَبَتِهِ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा की इब्तदा/शुरुआत और उसकी इंतिहा/आख़िर

बाज़ सलफ(बुज़ुर्ग)का कहना है कि तौबा की एक इब्तिदा और एक इंतिहा है.

तो उसकी इब्तिदा ये है: पहले कबीरा(बड़े गुनाहों) से तौबा हो फिर सगीरा(छोटे) से फिर नापसंदीदा कामों से फिर उन कामों से जो बेहतर के ख़िलाफ़ हों फिर नेकियों का लेहाज़ रखने से फिर उस बात से कि उसने ख़ालिस तौबा कर रखी है- फिर हर उस ख़्याल से जो उसके दिल में आता है जो अल्लाह तआला की रज़ा के इलावा है.

और जो तौबा की इंतिहा है: पस वो उससे भी तौबा करे जब एक लम्हे (क्षड़)के लिए वो उस बात से गाफ़िल(भूल) हो जाए कि अल्लाह उसकी निगरानी कर रहा है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِمَّ نَتُوْبُ؟

اَخِی الْحَبِیْبَ:

اِعْلَمْ اَنَّ الذُّنُوْبَ الَّتِیْ یُتَابُ مِنْهَا تَنْقَسِمُ اِلٰی قِسْمَیْنِ: صَغَائِرَ وَ کَبَائِرَ...

وَقَدْ دَلَّ الْکِتَابُ وَالسُّنَّةُ وَاِجْمَاعُ الْاُمَّةِ عَلٰی هٰذَا التَّقْسِیْمِ، قَالَ تَعَالٰی:

﴿اِنْ تَجْتَنِبُوْا کَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُکَفِّرْ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ﴾ (النسآء: 31)

وَقَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ کَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ﴾ (النجم: 32) وَاللَّمَمُ: مَا دُوْنَ الْکَبَائِرِ.

وَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَلصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمُعَةُ اِلَی الْجُمُعَةِ، وَرَمَضَانُ اِلٰی رَمَضَانَ مُکَفِّرَاتٌ لِمَا بَیْنَهُنَّ اِذَا اجْتُنِبَتِ الْکَبَائِرُ. (رواه مسلم)

وَلَیْسَ مَعْنٰی هٰذَا التَّقْسِیْمِ اَنَّ التَّوْبَةَ الْوَاجِبَةَ لَا تَکُوْنُ اِلَّا مِنَ الْکَبَائِرِ فَقَطْ، وَاِنَّمَا الْوَاجِبُ اَنْ یَتُوْبَ الْعَبْدُ مِنَ الْکَبَائِرِ وَالصَّغَائِرِ مَعًا، بَلْ اِنَّ السُّنَّةَ جَاءَتْ بِالتَّحْذِیْرِ مِنَ التَّهَاوُنِ فِیْ شَاْنِ الصَّغَائِرِ، وَذٰلِکَ فِیْ قَوْلِ النَّبِیِّ ﷺ: اِیَّاکُمْ وَمُحَقِّرَاتِ الذُّنُوْبِ؛ فَاِنَّهُنَّ یَجْتَمِعْنَ عَلَی الرَّجُلِ حَتّٰی یُهْلِکْنَهُ، کَرَجُلٍ کَانَ بِاَرْضٍ فَلَاةٍ فَحَضَرَ صَنِیْعُ قَوْمٍ، فَجَعَلَ الرَّجُلُ یَنْطَلِقُ فَیَجِیْءُ بِالْعُوْدِ، وَالرَّجُلُ یَجِیْءُ بِالْعُوْدِ، حَتّٰی جَمَعُوْا سَوَادًا، فَاَجَّجُوْا نَارًا، وَاَنْضَجُوْا مَا قَذَفُوْا فِیْهَا. (رواه احمد بسند حسن)

© AL-FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हम किससे तौबा करें?

मेरे प्यारे भाई! जान लो कि जिन गुनाहों से तौबा की जाती है उनकी दो क़िस्में हैं: सग़ीरा/छोटे और कबीरा/बड़े.तहक़ीक़ क़ुरआन,सुन्नत और इज्माअ उम्मत ने इस तक़्सीम पर दलालत(सुबूत)की है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अगर तुम इन बड़े गुनाहों से बचोगे जिनसे तुम्हें मना किया जाता है तो हम तुमसे तुम्हारी छोटी बुराइयाँ दूर कर देंगे."

और अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "वो लोग जो बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं मगर सग़ीरा/छोटे गुनाह." और जो लमम(इनके इलावा) हैं वह कबाइर से कम दर्जा है.

और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "पाँच नमाज़ें, एक जुमा से दूसरा जुमा और एक रमज़ान से दूसरा रमज़ान अपने दर्मियान हो जाने वाले गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा बन जाते हैं जब तक कबीरा/बड़े से बचा जाए." मगर इस तक़्सीम का ये मतलब नहीं है कि जो तौबा वाजिब है वो सिर्फ कबीरा/बड़े गुनाहों से ही है. ज़रूरी है कि बन्दा बड़े गुनाहों के साथ छोटे गुनाहों से भी तौबा करे. बल्कि सुन्नत में सग़ीरा/छोटे गुनाहों के बारे में सुस्ती करने से डराने की बात आई है. इसकी दलील नबी ﷺ के इस क़ौल में है: "तुम हक़ीर/कमतर समझे जाने वाले गुनाहों से बचो क्योंकि वो आदमी पर जमा हो जाते हैं यहाँ तक कि उसको हलाक कर देते हैं. जैसे कोई आदमी बयाबान ज़मीन पर हो और क़ौम के खाना तैयार करने का वक़्त आ जाए तो एक आदमी जाए वह एक तिनका ले आए दूसरा आदमी भी जाए तो एक तिनका ले आए यहाँ तक कि वह एक ढेर जमा कर लें फिर वो आग भड़काऐं तो वो जो कुछ उसमें डालें उसको पकालें."

فَائِدَةٌ مُهِمَّةٌ

ذَكَرَ الْإِمَامُ ابْنُ الْقَيِّمِ رَحِمَهُ اللّٰهُ:

اِنَّ الْكَبِيْرَةَ قَدْ يَقْتَرِنُ بِهَا مِنَ الْحَيَاءِ وَالْخَوْفِ وَالْإِسْتِعْظَامِ لَهَا مَا يُلْحِقُهَا بِالصَّغَائِرِ، وَقَدْ يَقْتَرِنُ بِالصَّغِيْرَةِ مِنْ قِلَّةِ الْحَيَاءِ وَعَدَمِ الْمُبَالَاةِ، وَتَرْكِ الْخَوْفِ وَالْإِسْتِهَانَةِ بِهَا مَا يُلْحِقُهَا بِالْكَبَائِرِ، بَلْ يَجْعَلُهَا فِيْ اَعْلٰى رُتْبَةٍ.

فَاحْذَرْ اَخِي الْحَبِيْبَ مِنَ الْكَبَائِرِ وَالصَّغَائِرِ مَعًا، وَاحْذَرْ كَذٰلِكَ مِنَ الْاُمُوْرِ الَّتِيْ قَدْ تَقْتَرِنُ بِالصَّغِيْرَةِ فَتَنْقُلُهَا مِنْ سِجِلِّ الصَّغَائِرِ اِلٰى سِجِلِّ الْكَبَائِرِ وَمِنْ ذٰلِكَ:

1. **اَلْإِصْرَارُ وَالْمُوَاظَبَةُ عَلَى الصَّغَائِرِ:**

وَلِذٰلِكَ قِيْلَ: لَا صَغِيْرَةَ مَعَ الْإِصْرَارِ وَلَا كَبِيْرَةَ مَعَ الْإِسْتِغْفَارِ.

2. **اِسْتِصْغَارُ الذَّنْبِ وَاحْتِقَارُهُ:**

وَقَدْ مَرَّ قَوْلُ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فِيْ ذٰلِكَ، وَفِيْ ذٰلِكَ اَيْضًا يَقُوْلُ اَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: اِنَّكُمْ! لَتَعْمَلُوْنَ اَعْمَالًا هِيَ اَدَقُّ فِيْ اَعْيُنِكُمْ مِنَ الشَّعْرِ، كُنَّا نَعُدُّهَا عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مِنَ الْمُوْبِقَاتِ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अहम फ़ायदा

इमाम इब्ने क़य्यम رضی اللہ عنہ ने ज़िक्र किया है: कभी कबीरा गुनाह के करने के साथ शर्म,खौफ़ और उसको संगीन ख़्याल करने का तसव्वुर होता है जो उसको सग़ीरा गुनाहों के साथ मिला देता है. और कभी सग़ीरा गुनाह के साथ कम शर्म,लापरवाही और तरके खौफ़,और उस गुनाह को हक़ीर/कमतर जानना मिला होता है जो उसको कबीरा गुनाहों के साथ मिला देता है. बल्कि उन सग़ीरा को कबीरा गुनाहों के बड़े रुतबे पर कर देता है.

तो ऐ मेरे प्यारे भाई! तुम कबीरा और सग़ीरा दोनों गुनाहों से बचा करो, इसी तरह उन कामों से भी बचो जो सग़ीरा गुनाहों से कभी मिल जाते हैं तो वो उसको सग़ीरा के रजिस्टर से कबीरा के रजिस्टर में दाख़िल कर देते हैं. और उनमें से कुछ ये हैं:

1. सग़ीरा गुनाहों पर दवाम/जमना और इसरार करना:
   इसी वजह से कहा जाता है कि इसरार के साथ सग़ीरा,सग़ीरा/छोटा नहीं रहता.और बख़्शिश मांगने के साथ कबीरा कबीरा नहीं होता रहता.
2. गुनाह को छोटा और हक़ीर/कमतर जानना:
   इसमें इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ का क़ौल पीछे गुज़र चुका है और अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ भी इसके बारे में कहते हैं कि: "तुम ऐसे काम करते हो जो तुम्हारी निगाहों में बाल से भी बारीक होते हैं हम रसूल अल्लाह ﷺ के ज़माने में इसको हलाकत की चीज़ समझते थे."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

3. اَلسُّرُوْرُ بِالصَّغِيْرَةِ وَالْفَرَحُ بِهَا:

وَهٰذَا اَيْضًا دَلِيْلٌ عَلٰى شِدَّةِ الْغَفْلَةِ وَالرَّغْبَةِ فِى الْمَعْصِيَةِ وَالْجَهْلِ بِعَظَمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى،وَالْجَهْلُ بِسُوْءِ عَوَاقِبِ الذُّنُوْبِ وَالْمَعَاصِىْ وَعِظَمِ خَطَرِهَا،فَاِذَا اشْتَدَّتْ غَفْلَتُهُ اِلٰى هٰذَا الْحَدِّ نَقَلَتْهُ وَلَا بُدَّ اِلَى الْاِصْرَارِ، وَهُوَ الْاِسْتِقْرَارُ عَلَى الْمُخَالَفَةِ وَالْعَزْمُ عَلَى الْعَوْدَةِ،وَذٰلِكَ ذَنْبٌ اٰخَرُ لَعَلَّهُ اَعْظَمُ مِنَ الذَّنْبِ الْاَوَّلِ بِكَثِيْرٍ،وَهٰذَا مِنْ عُقُوْبَةِ الذَّنْبِ اِنَّهُ يُوْجَدُ اَكْبَرُ مِنْهُ.

4. التَّهَاوُنُ بِسَتْرِ اللّٰهِ وَحِلْمِهِ:

فَاِذَا لَمْ يَرَ مُرْتَكِبُ الصَّغَائِرِ الْعُقُوْبَةَ الظَّاهِرَةَ اغْتَرَّ بِسَتْرِ اللّٰهِ عَلَيْهِ،وَظَنَّ اَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُحِبُّهُ وَيُكَرِّمُهُ،وَلَا يَدْرِى الْمِسْكِيْنُ اَنَّ هٰذَا اِمْهَالٌ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى لِيَتُوْبَ اِلَيْهِ وَيَقْلَعُ عَنْ ذُنُوْبِهِ.

5. هَتْكُ سَتْرِ اللّٰهِ بِذِكْرِ الذُّنُوْبِ:

فَمَنِ ارْتَكَبَ صَغِيْرَةً وَسَتَرَهَا اللّٰهُ عَلَيْهِ ثُمَّ اَظْهَرَهَا وَذَكَرَهَا وَتَحَدَّثَ بِهَا،فَاِنَّهُ قَدْ ضَاعَفَ صَغِيْرَتُهُ بِمَا ضَمَّ اِلَيْهَا مِنْ ذُنُوْبٍ؛لِاَنَّهُ اِذَا حَدَّثَ بِذَنْبِهِ لَا عَنْ طَرِيْقِ النَّدْمِ بَلْ عَنْ طَرِيْقِ التَّفَاخُرِ وَالسُّرُوْرِ؛فَاِنَّهُ بِذٰلِكَ يُرَغِّبُ السَّامِعِيْنَ فِى ارْتِكَابِ مِثْلِ هٰذِهِ الذُّنُوْبِ وَاِنْ كَانَتْ صَغَائِرَ...

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

3. सग़ीरा गुनाहों पर मुसर्रत का इज़्हार करना और उस पर ख़ुश होना:

यह सोच भी बहुत गफ़लत, नाफ़रमानी में दिलचस्पी,अल्लाह की बड़ाई से जहालत,गुनाहों और नाफ़रमानियों के अंजाम और उनके अज़ीम/बड़े ख़तरे से जहालत पर दलील है. जब उसकी गफ़लत/भूल इस हद तक बढ़ जाएगी तो ज़रूरी है कि वो उसको इसरार की तरफ़ ले जाएगी जो कि मुखालिफ़त पर जमे रहना और दोबारा गुनाह करने का इरादा करना है. ये एक और गुनाह है, शायद कि ये पहले गुनाह से कई दर्जे ज़्यादा बड़ा गुनाह है. ये गुनाहों की सज़ाओं में से एक सज़ा है कि उससे भी बड़ा एक गुनाह हो गया.

4. अल्लाह की पर्दापोशी/ग़ल्ती छिपाना और बुर्दबारी को हलका समझना: तो जब सग़ीरा गुनाहों का ज़ाहिरी सज़ा को नहीं देखता तो वो अल्लाह की पर्दापोशी से धोखा खा जाता है. वो समझता है कि अल्लाह उससे मोहब्बत करता है और उसकी तकरीम/इज़्ज़त करता है. वो बेचारा नहीं जानता कि ये अल्लाह तआला की तरफ से मोहलत देना है ताकि वो अल्लाह से तौबा करले और अपने गुनाहों से अलग हो जाए.

5. गुनाहों का तज़किरा/ज़िक्र करके अल्लाह के परदे को चाक/खोलना)करना:

तो जिसने छोटा गुनाह किया और अल्लाह ने उस पर पर्दा डाल दिया फिर वह उसको ज़ाहिर करे,उसको ब्यान करे और उसकी बात करे तो उसका सग़ीरा/छोटा कई गुना इसलिए बढ़ गया कि उसकी तरफ़ कई और गुनाह मिल गए क्योंकि जब वो अपने गुनाह का ज़िक्र निदामत के तौर पर नहीं बल्कि फ़ख़्र और ख़ुशी के तौर पर करता है तो हक़ीक़त में वो सुनने वालों को भी इस तरह के गुनाहों का करने की तरग़ीब/बढ़ावा दे रहा है. अगरचे वह छोटे हों.....

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: كُلُّ اُمَّتِیْ مُعَافًی اِلَّا الْمُجَاهِرِيْنَ،وَاِنَّ مِنَ الْاِجْهَارِ اَنْ يَعْمَلَ الْعَبْدُ بِاللَّيْلِ عَمَلًا ثُمَّ يُصْبِحَ قَدْ سَتَرَهُ رَبُّهُ فَيَقُوْلُ: يَا فُلَانُ،قَدْ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا،فَيَبِيْتُ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ،وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللّٰهِ عَلَيْهِ. (متفق عليه)

6. **كَوْنُ فَاعِلِ الصَّغِيْرَةِ عَالِمًا يُقْتَدَى بِهِ اَوْ رَجُلًا مَعْرُوْفًا بِالصَّلَاحِ:**

وَهٰذَا اِنْ فَعَلَ الصَّغَائِرَ مُتَعَمِّدًا مُكَابِرًا،ضَارِبًا لِلنُّصُوْصِ بَعْضُهَا بِبَعْضٍ، رُبَمَا كَانَ حَظُّهُ اَنْ تَنْقَلِبَ عَلَيْهِ الصَّغَائِرُ كَبَائِرَ،لٰكِنْ مَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ مُتَاَوِّلًا اَوْ لِغَضَبٍ،اَوْ لِغَيْرِ ذٰلِكَ فَقَدْ يُغْفَرُ لَهُ،لَا سِيَمَا اِنْ كَانَ لَهُ اَعْمَالٌ صَالِحَةٌ تُوْجِبُ ذٰلِكَ. (العبادات القلبية باختصار)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी तमाम उम्मत को माफ़ कर दिया जाएगा सिवाए मुज़ाहिरीन/छिपे को खोलना) के और बेशक इज़हार से मुराद ये भी है कि बन्दा रात को कोई अमल करे और सुबह इस हाल में करे कि उसके रब ने उस पर पर्दा डाल दिया तो वह कहे: ऐ फ़ुलाँ कल रात मैंने ये अमल किया-रात तो उसने इस हाल में गुज़ारी थी के उसके रब ने उस पर पर्दा डाला और सुबह उठ कर वो अल्लाह के परदे को चाक कर रहा है."

6. सग़ीरा गुनाहों का करने वाला वह आलिम हो जिसकी पैरवी की जाती हो और वो तक़वा में मशहूर हो:

अगर यह आदमी सग़ीरा गुनाहों को जान-बूझ कर हठधर्मी करते हुए नसूस(उसूल)को आपस में टकराते हुए करे तो कभी उसका हिस्सा ये होता है कि उसके सग़ीरा कबीरा में बदल जाते हैं लेकिन जो शख़्स तावील(सफ़ाइ देना) करते हुए या ग़ुस्से के आलम में या किसी और वजह से किसी सग़ीरा गुनाह को करले तो माफ़ हो सकता है. जबकि उसके और भी नेक आमाल हों जो उसकी माफ़ी की वजह हों.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَجْنَاسُ الْمُحَرَّمَاتِ

اَخِی الْحَبِیْبَ:

تَـذَکَّـرْ اَنَّ الْـعَبْـدَ لَا یَسْتَـحِقُّ اسْمَ التَّائِبِ حَتّٰی یَتَخَلَّصَ مِـنَ اثْنَیْ عَشَرَ جِنْسًا مِنَ الْمُحَرَّمَاتِ وَهِیَ:

1. **الْکُفْرُ:**

وَهُوَ نَوْعَانِ: اَکْبَرُ، وَاَصْغَرُ.

فَالْاَصْغَرُ: مُوْجِبٌ لِاِسْتِحْقَاقِ الْوَعِیْدِ دُوْنَ الْخُلُوْدِ فِی النَّارِ.

وَالْاَکْبَرُ: یُوْجِبُ الْخُلُوْدَ فِی النَّارِ وَهُوَ خَمْسَةُ اَنْوَاعٍ:

1. کُفْرُ التَّکْذِیْبِ.
2. کُفْرُ الْاِسْتِکْبَارِ.
3. کُفْرُ الْاِبَاءِ مَعَ التَّصْدِیْقِ.
4. کُفْرُ الشَّکِّ.
5. کُفْرُ النِّفَاقِ.

2. **الشِّرْکُ:**

وَهُوَ نَوْعَانِ: اَصْغَرُ، وَاَکْبَرُ.

فَالْاَکْبَرُ: لَا یَغْفِرُهُ اللّٰهُ اِلَّا بِالتَّوْبَةِ مِنْهُ، وَهُوَ اَنْ یَتَّخِذَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ نِدًّا

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हराम कामों की क़िस्में

मेरे प्यारे भाई!

तुम ये याद करलो कि बन्दा ताइब(तौबा)होने के नाम का हक़दार नहीं हो सकता जब तक वो बारह क़िस्म के हराम कामों से छुटकारा ना कर ले और वो ये हैं:

1.कुफ्र:

और कुफ्र की दो क़िस्में हैं बड़ा कुफ्र और छोटा कुफ्र.

जो छोटा कुफ्र है वो वईद(डरावा)का हक़दार बनाने का मूजिब(वजह)है लेकिन जहन्नम में हमेशा रहने का मूजिब(वजह)नहीं है.

और बड़ा कुफ्र खुलूद फ़िन्नार(आग में जाने)की वजह है और उसकी पाँच क़िस्में हैं.

1. झुठलाने का कुर्फ़.
2.तकब्बुर का कुफ्र,
3.तस्दीक़ करते हुए इंकार करने का कुफ्र,
4.शक वाला कुफ्र,
5.निफ़ाक़ का कुफ्र.

2.शिर्क:

इसकी भी दो क़िस्में हैं:

असग़र(छोटा)और अकबर(बड़ा).तो शिर्के अकबर को अल्लाह माफ़ नहीं करता जब तक कि उससे तौबा ना की जाए और वो ये है कि अल्लाह के सिवा किसी को उसका हमसर/बराबर बना ले.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُسَوِّيْهِ بِاللّٰهِ فِى الْمَحَبَّةِ وَالتَّعْظِيْمِ،وَهُوَ يُوْجِبُ الْخُرُوْجَ مِنَ الْاِسْلَامِ.

وَالْاَصْغَرُ:مِثْلُ يَسِيْرِ الرِّيَاءِ وَالتَّصَنُّعِ لِلْخَلْقِ وَالْحَلَفِ بِغَيْرِ اللّٰهِ، وَصَاحِبُ هٰذَا النَّوْعِ مُسْتَحِقٌّ لِلْوَعِيْدِ، اِلَّا اَنَّهُ لَا يَخْرُجُ بِهِ عَنْ دَائِرَةِ الْاِسْلَامِ.

3. **النِّفَاقُ:**

وَهُوَ نَوْعَانِ اَصْغَرُ وَاَكْبَرُ.

فَالْاَكْبَرُ:يُوْجِبُ الْخُلُوْدَ فِى النَّارِ فِىْ دَرْكِهَا الْاَسْفَلِ،وَهُوَ اَنْ يُظْهِرَ لِلْمُسْلِمِيْنَ اِيْمَانَهُ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ،وَهُوَ فِى الْبَاطِنِ مُنْسَلِخٌ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهِ مُكَذِّبٌ بِهِ.

وَالْاَصْغَرُ:فَلَا يَكُوْنُ صَاحِبُهُ مُكَذِّبًا فِى الْبَاطِنِ،وَصَاحِبُ هٰذَا النَّوْعِ مُتَعَرِّضٌ لِلْوَعِيْدِ دُوْنَ الْخُلُوْدِ فِىْ جَهَنَّمَ.

4،5. **اَلْفُسُوْقُ وَالْعِصْيَانُ.**

6،7. **اَلْاِثْمُ وَالْعُدْوَانُ.**

8،9. **اَلْفَحْشَاءُ وَالْمُنْكَرُ.**

10. **اَلْبَغْىُ.**

11. **اَلْقَوْلُ عَلَى اللّٰهِ بِلَا عِلْمٍ.**

12. **اِتِّبَاعُ غَيْرِ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ.**

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वह उसको मोहब्बत और ताज़ीम में अल्लाह के बराबर करे,और ये इस्लाम से निकलने की वजह है.

और शिर्के असग़र: जैसे कि थोड़ी सी रयाकारी/दिखावा करना, मख़्लूक़ के लिए तकल्लुफ़ करना और ग़ैर अल्लाह की क़सम खाना.इस तरह का मालिक वईद/डरावे का हक़दार है. मगर ये उसको दायरा-ए-इस्लाम से ख़ारिज/निकालना नहीं करता.

3.निफ़ाक़: निफ़ाक़ की भी दो क़िस्में हैं: अकबर और असग़र.

निफ़ाक़ अकबर: जहन्नम के निचले दर्जे में हमेशा रहने की वजह है.और वो ये है कि मुस्लमानों के लिए,अल्लाह पर,फ़रिश्तों पर,किताबों पर, रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर अपने ईमान का इज़्हार करे लेकिन बातिनी/अन्दर से वो इन सारी चीज़ों से निकलने वाला हो और सबको झुठलाने वाला हो.

और निफ़ाक़ असग़र: तो उसका करने वाला बातिन(अन्दर)में तकज़ीब/झुठलाना)नहीं करता,इस तरह का करने वाला वईद/डरावे का निशाना ज़रूर है लेकिन जहन्नम में हमेशा-हमेशा नहीं रहेगा.

4.फ़िस्क़.

5.नाफ़रमानी

6.गुनाह

7.ज़्यादती

8.बेहयाई

9.बुराई

10.सरकशी

11.बिना इल्म अल्लाह पर कोई बात लगाना.

12.मोमिनों के रास्ते के इलावा(किसी और रास्ते)की पैरवी करना.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَامَاتُ قُبُوْلِ التَّوْبَةِ

هُـنَـاکَ عَلَامَاتٌ تَدُلُّ عَلٰی صِحَّةِ التَّوْبَةِ وَقُبُوْلِهَا،وَهِیَ مِمَّا یَسْتَاْنِسُ بِهِ التَّـائِـبُ وَیَـفْـرَحُ بِهِ،لِاَنَّهُ بِوُقُوْعِهَا یَعْلَمُ اَنَّهُ یَسِیْرُ فِـی الـطَّرِیْقِ الصَّحِیْحِ الْمُوْصِلِ اِلَی النَّجَاةِ وَالْفَوْزِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ،وَمِنْ هٰذِهِ الْعَلَامَاتِ:

اَوَّلًا-اَنْ یَکُوْنَ الْعَبْدُ بَعْدَ التَّوْبَةِ خَیْرًا مِمَّا کَانَ قَبْلَهَا:

وَکُلُّ اِنْسَانٍ یَسْتَشْعِرُ ذٰلِکَ مِـنْ نَفْسِهِ،فَـاِذَا کَانَ بَعْدَ التَّوْبَةِ مُقْبِلًا عَلَی الـلّٰـهِ،عَالِیَ الْهِمَّةِ قَوِیَّ الْعَزِیْمَـةِ؛دَلَّ ذٰلِکَ عَلٰی صِدْقِ تَوْبَتِهِ وَصِحَّتِهَا وَقُبُوْلِهَا.

ثَانِیًا-اَلَّا یَزَالَ الْخَوْفُ وَمُرَاقَبَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی مُصَاحِبًا لَهُ:

فَـاِنَّ الْـعَـاقِلَ لَا یَاْمَنُ مَکْرَ اللّٰهِ طَرْفَةَ عَیْنٍ،فَخَوْفُهُ مُسْتَمِرٌّ اِلٰی اَنْ یَسْمَعَ قَـوْلَ الْـمَلَائِـکَةِ الْـمُـوَکِّلِیْنَ بِقَبْضِ رُوْحِـهِ:﴿اَلَّا تَـخَـافُـوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِـرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِیْ کُنْتُـمْ تُوْعَدُوْنَ﴾ فَهُـنَـاکَ یَزُوْلُ خَوْفُهُ وَیَذْهَبُ قَلَقُهُ.

قَـالَ اَبُـوْ بَـکْـرِ الصِّدِّیْقُ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ:لَوْ اَنَّ اِحْدٰی قَدَمَیَّ فِی الْجَنَّةِ مَا اَمِنْتُ مَکْرَ اللّٰهِ!

وَلَـعَـلَّ هٰذَا اسْتِشْـعَـارٌ لِـقَـوْلِ الـنَّبِـیِّ ﷺ:اَلْـقُـلُوْبُ بَیْنَ اِصْبَعَیْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰنِ یُقَلِّبُهَا کَیْفَ یَشَاءُ.

तौबा की क़ुबूलियत की अलामतें

कुछ अलामतें ऐसी हैं जो तौबा के सही और क़ुबूल होने पर दलालत(साबित)करती हैं,और यह वो चीज़ है जिसके साथ तौबा करने वाला मानूस होता है, और इसके साथ ख़ुश होता है.क्योंकि इन अलामतों के होने की बिना पर वो जानता है कि वो एक सही रास्ते पर चल रहा है, जो उसको क़यामत के दिन निजात और कामयाबी की तरफ़ पहुँचाने वाला है. और उन अलामतों में से है कि:

1.ये कि तौबा के बाद बन्दे की हालत तौबा से पहले की हालत से बहतर हो:

और हर इन्सान इस हालत को अपने नफ़्स में महसूस कर सकता है.अगर वो तौबा के बाद अल्लाह की तरफ़ मुतावज्जा है, इस हाल में कि उसकी (नेकियों की) हिम्मत बढ़ चुकी है,अज़म पक्का हो चुका है,तो ये इस बात की दलील(सुबूत) होगी कि उसकी तौबा सही है, सच्ची है और क़ुबूल है.

2.हमेशा उसके साथ अल्लाह तआला का खौफ़ और उसके निगरान होने का एहसास रहे:

क्योंकि अक़लमन्द आँख झपकने के वक़्त भी अल्लाह की चाल और तदबीर से बेख़ौफ़ नहीं होता.उसका खौफ़ मुसलसल रहता है,यहाँ तक कि वो उन फ़रिश्तों की बात सुन ले जो रूह को क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं: “ना डरो और ना ग़म करो और इस जन्नत के साथ खुश हो जाओ जिसका तुम वादा दिए जाते थे.” तब जाकर उसका खौफ़ ख़त्म होगा और उसकी बेचेनी चली जाएगी.अबुबक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ कहते हैं: अगर मेरा एक पाँव जन्नत में भी दाख़िल हो जाए तो भी मैं अल्लाह की चाल से बेख़ौफ़ नहीं हूँगा. और शायद ये क़ौल नबी ﷺ के इस इरशाद को महसूस करना है कि “दिल रहमान की उँगलियों में से दो उँगलियों के दर्मियान है वो उनको फेरता है जैसे वो चाहता है.”

ثَالِثًا-اَنْ تَحْدُثَ لَهُ التَّوْبَةُ انْكِسَارًا فِیْ قَلْبِهِ وَذُلًّا وَتَوَاضُعًا بَیْنَ یَدَیْ رَبِّهِ:

وَهٰـذَا الْاِنْكِسَارُ وَالذُّلُّ اَنْفَعُ لِلْعَبْدِ مِنْ طَاعَاتٍ كَثِیْرَةٍ یَمُنُّ بِهَا عَلٰی رَبِّهِ كَمَا قِیْلَ((رُبَّ مَعْصِیَةٍ اَوْرَثَتْ ذُلًّا وَانْكِسَارًا،وَرُبَّ طَاعَةٍ اَوْرَثَتْ كِبْرًا وَغُرُوْرًا)).

رَابِعًا-اَنْ یَسْتَعْظِمَ الْجِنَایَةَ الَّتِیْ صَدَرَتْ مِنْهُ وَاِنْ كَانَ قَدْ تَابَ مِنْهَا:

وَیَكُوْنُ ذٰلِكَ بِتَعْظِیْمِ الْاَمْرِ وَالْاٰمِرِ وَالتَّصْدِیْقِ بِالْجَزَاءِ،قَالَ تَعَالٰی:

﴿ذٰلِكَ وَمَنْ یُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَی الْقُلُوْبِ﴾(الحج:32)

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ:اِنَّ الْمُؤْمِنَ یَرٰی ذُنُوْبَهُ كَاَنَّهُ قَاعِدٌ تَحْتَ جَبَلٍ یَخَافُ اَنْ یَقَعَ عَلَیْهِ،وَاِنَّ الْفَاجِرَ یَرٰی ذُنُوْبَهُ كَذُبَابٍ مَرَّ عَلٰی اَنْفِهِ،وَلِذٰلِكَ قَالَ بَعْضُ السَّلَفِ:لَا تَنْظُرْ اِلٰی صِغَرِ الْخَطِیْئَةِ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلٰی عَظَمَةِ مَنْ عَصَیْتَ!

خَامِسًا:مِنْ عَلَامَاتِ قَبُوْلِ التَّوْبَةِ اَیْضًا:

1.اَنْ یَحْذَرَ التَّائِبُ مِنْ اَمْرِ لِسَانِهِ؛فَیَحْفَظُهُ مِنَ الْكَذِبِ وَالْغِیْبَةِ وَالنَّمِیْمَةِ وَفَضُوْلِ الْكَلَامِ،وَیُشْغِلُهُ بِذِكْرِ اللّٰهِ تَعَالٰی وَتِلَاوَةِ كِتَابِهِ.

2.اَنْ یَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ بَطْنِهِ؛فَلَا یَاْكُلُ اِلَّا حَلَالًا.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

3.कि तौबा उसके दिल में आजिज़ी के तौर पर और अपने रब के सामने तवाज़ेअ और ज़िल्लत को ज़ाहिर करते हुए वाक़ेअ हो:

और ये इंकिसारी/ और दरमांदगी/ बन्दे के लिए बहुत सी इबादात और इताआत से ज़्यादा मुफ़ीद है,जिनके ज़रिए वो अपने रब पर एहसान चढ़ाता हो जैसे कहा जाता है: कितनी ऐसी नाफ़रमानियाँ हैं जो बन्दे को ज़िल्लत और इंकिसारी अता करती हैं और कितनी ऐसी नेकियाँ हैं जो बन्दे को तकब्बुर और गुरूर अता करती हैं.

4.वह उस जुर्म को अज़ीम ख़्याल करे जो उससे हुआ है चाहे वो उससे तौबा कर चुका है:

ये तब होगा जब उस मामले को और हुक्म देने वाले की अज़मत को समझा जाए और बदले की तस्दीक़ की जाए. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ये और जो अल्लाह के शायर/की ताज़ीम करता है तो यक़ीनन ये दिलों के तक़वा से है." इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ कहते हैं: "बेशक मोमिन अपने गुनाहों को यूँ समझता है गोया पहाड़ के नीचे बैठा है उसे डर है कि पहाड़ उस पर गिर जाएगा और बेशक फ़ाजिर/गुनाहगार आदमी अपने गुनाहों को यूँ समझता है जैसे एक मक्खी उसकी नाक पर आ बैठी." इसी वजह से बाज़ सलफ़े सालिहीन/नेक बुज़ुर्ग का कहना है कि किसी ग़लती के सग़ीरा होने पर निगाह ना रखो बल्कि उस ज़ात की अज़मत को नज़र के सामने रखो जिसकी तुमने नाफ़रमानी की है.

5.तौबा की क़ुबूलियत की अलामतों में से यह भी हैं:

1.तौबा करने वाला अपनी ज़बान के मामले में डरता रहे, पस वह झूठ,ग़ीबत,चुग़लख़ोरी और फ़ुज़ूल बातों से उसकी हिफ़ाज़त करे और उसको अल्लाह के ज़िक्र और उसकी किताब की तिलावत के साथ मसरूफ़ करे.

2.अपने पेट के मामले में डरे पस वह सिर्फ़ और सिर्फ़ हलाल खाए.

3.اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ بَصَرِهٖ؛فَلَا يَنْظُرُ اِلَى الْحَرَامِ،وَلَا اِلَى الدُّنْيَا بِعَيْنِ الرَّغْبَةِ فِيْهَا.

4.اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ سَمْعِهٖ؛فَلَا يَسْتَمِعُ اِلٰى مَعْصِيَةِ اٰلَاتِ طَرْبٍ وَلَهْوٍ، وَلَا اِلٰى كَذِبٍ وَغِيْبَةٍ.

5.اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ يَدِهٖ؛فَلَا يَمُدُّهَا اِلَى الْحَرَامِ، وَاِنَّمَا يَمُدُّهَا اِلٰى مَا فِيْهِ طَاعَةُ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ.

6. اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ قَدَمَيْهِ؛فَلَا يَمْشِىْ بِهِمَا اِلٰى مَوَاطِنِ الْمَلَاهِىْ وَالْمَعَاصِىْ،بَلْ يَمْشِىْ بِهِمَا اِلَى الْمَسَاجِدِ وَالْجِهَادِ وَمَوَاطِنِ الطَّاعَاتِ.

7.اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ قَلْبِهٖ؛فَيُطَهِّرُهٗ مِنَ الْعَدَاوَةِ الدُّنْيَوِيَّةِ وَالْبُغْضِ مِنْ اَجْلِ الدُّنْيَا،وَيُطَهِّرُهٗ مِنَ الْحَسَدِ وَسَائِرِ الْاٰفَاتِ،وَيَجْعَلُ فِيْهِ الشَّفَقَةَ وَالنَّصِيْحَةَ وَالْحُبَّ فِى اللّٰهِ وَالْبُغْضَ فِى اللّٰهِ.

8.اَنْ يَحْذَرَ مِنْ اَمْرِ طَاعَتِهٖ؛فَيَجْعَلُهَا خَالِصَةً لِوَجْهِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ،وَيَجْتَنِبُ الرِّيَاءَ وَالسُّمْعَةَ. (التوبة للبيانونى)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

3. अपनी आँख के मामले में डरे, पस ना हराम की तरफ़ देखे और ना ही दुनिया को रग़बत की निगाह से देखे.
4. अपने कान के मामले में डरे. तो वो ना नाफ़रमानी की तरफ़ कान लगाए जैसे तर्ब व लहव(गाना बजाना)के आलात और ना ही झूठ और ग़ीबत की तरफ़ कान लगाए.
5. अपने हाथ के मामले में डरे पस उसको हराम की तरफ़ ना बढ़ाए बल्कि उसको उसी चीज़ की तरफ़ बढ़ाए जिसमें अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की इताअत है.
6. अपने दोनों पाँव के मामले में डरे. तो उनके ज़रिए गाफ़िल करने वाले और नाफ़रमानियों वाले मुक़ामात की तरफ़ ना चले, बल्कि वो उनके ज़रिए मसाजिद की तरफ़ और जिहाद की तरफ़ और इताअत के मक़ामात की तरफ़ चले.
7. अपने दिल के मामले में डरे तो दुनियावी अदावत दुनिया की ख़ातिर बुग्ज़ रखने से उसको पाक करे हसद और बाक़ी सारी बीमारियों से उसको पाक करे और अपने दिल में शफ़क़्क़त,ख़ैर-ख़्वाही और अल्लाह के लिए मोहब्बत और अल्लाह के लिए बुग्ज़ रखे.
8. अपनी इताअत(नेकियों)के मामले में भी डरे तो नेकी के काम ख़ालिस अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की रज़ा के लिए करे और रयाकारी और शोहरत से बचे.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلْاَسْبَابُ الدَّاعِيَةُ اِلَى التَّوْبَةِ وَالْاِسْتِمْرَارِ عَلَيْهَا

اِذَا اَرَادَ اللّٰهُ بِعَبْدِهٖ خَيْرًا يَسَّرَ لَهُ الْاَسْبَابَ الَّتِیْ تَاْخُذُ بِيَدِهٖ اِلٰى مَقَامِ التَّوْبَةِ وَتُعِيْنُهُ عَلَيْهَا،وَتُزَيِّنُ لَهُ الْاِسْتِمْرَارَ وَمُتَابَعَةَ السَّيْرِ وَعَدْمِ الْاِنْقِطَاعِ،وَمِنْ هٰذِهِ الْاَسْبَابِ:

1. **مُحَاسَبَةُ النَّفْسِ:**

وَهِیَ مَنْزِلَةُ التَّمْيِيْزِ بَيْنَ مَا لِلْعَبْدِ وَمَا عَلَيْهِ،وَهِیَ تُعِيْنُ الْعَبْدَ عَلَى التَّوْبَةِ، وَتُحَافِظُ لَهُ عَلَيْهَا بَعْدَ وُقُوْعِهَا...قَالَ ابْنُ الْقَيِّمِ:

وَمِنْ مَنْزِلَةِ الْمُحَاسَبَةِ يَصِحُّ لَهُ نُزُوْلُ مَنْزِلَةِ التَّوْبَةِ؛لِاَنَّهُ اِذَا حَاسَبَ نَفْسَهُ عَرَفَ مَاعَلَيْهِ مِنَ الْحَقِّ فَخَرَجَ مِنْهُ،وَتَنَصَّلَ مِنْهُ اِلٰى صَاحِبِهِ،وَهِیَ حَقِيْقَةُ التَّوْبَةِ.

وَالتَّحْقِيْقُ:اَنَّ التَّوْبَةَ بَيْنَ مُحَاسَبَتَيْنِ:مُحَاسَبَةٌ قَبْلَهَا تَقْتَضِیْ وُجُوْبَهَا، وَمُحَاسَبَةٌ بَعْدَهَا تَقْتَضِیْ حِفْظَهَا.(مدارج السالكين)

2. **تَدَبُّرُ عَوَاقِبِ الذُّنُوْبِ:**

فَالْمَرْءُ اِذَا عَلِمَ اَنَّ الْمَعَاصِیَ قَبِيْحَةُ الْعَوَاقِبِ سَيِّئَةُ الْمُنْتَهٰى،وَاَنَّ الْجَزَاءَ بِالْمِرْصَادِ،دَعَاهُ ذٰلِكَ اِلٰى تَرْكِ الذُّنُوْبِ مِنَ الْبِدَايَةِ،وَالتَّوْبَةَ اِلَى اللّٰهِ اِنْ كَانَ اقْتَرَفَ شَيْئًا مِنْهَا.

वो असबाब जो तौबा की तरफ दावत देते हैं और तौबा पर क़ायम रखते हैं

जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा रखता है तो उसके लिए वो असबाब आसान कर देता है जो उसका हाथ थाम कर तौबा के मुक़ाम तक ले जाते हैं,वो असबाब इस पर उसकी मदद करते हैं, उसके लिए इस बात को मुज़य्यन करते हैं कि इस पर क़ायम रहे और मुसलसल चलता रहे और कट कर ना रह जाए और उन असबाब में से कुछ ये हैं:

1.अपने नफ़्स का मुहासबा करना:

और ये मुक़ाम है इस बात में फ़र्क़ करने का कि बन्दे का क्या हक़ है, उस पर क्या ज़िम्मेदारी है, यह चीज़ बन्दे को तौबा करने पर मदद करती है और उसके लिए तौबा वाक़ेअ होने के बाद उस पर क़ायम रहने में हिफ़ाज़त करती है.

इब्ने क़य्यम कहते हैं:

मुहासबे के मुक़ाम में से ये है कि उसके लिए तौबा के मरतबे पर नाज़िल होना दुरुस्त हो क्योंकि जब वो अपने नफ़्स का मुहासबा करेगा वो पहचान लेगा कि उसके ऊपर क्या हक़ है तो वो उससे निकल जाएगा और वो हक़ (उससे निकल कर) उसके(असल)मालिक की तरफ़ चला जाएगा, ये है तौबा की हक़ीक़त.तहक़ीक़ की तौबा दो मुहासबों के दर्मियान है: एक तो तौबा से पहले का मुहासबा जो तौबा वाजिब होने का तक़ाज़ा करे,एक उसके बाद मुहासबा जो तौबा को महफ़ूज़ रखने का तक़ाज़ा करे.

2.गुनाहों के अंजाम पर ग़ौर करना:

तो जब आदमी जान लेगा कि नाफ़रमानियों की सज़ा सख़्त होती है और इसका अंजाम बुरा होता है और बदला वही होगा जो घात लगाए हुए आदमी का होता है तो ये चीज़ शुरू से ही उसे गुनाह को छोड़ने की दावत देगी और अगर उसने किसी गुनाह को किया है तो अल्लाह की बारगाह में तौबा करने की तरफ़ दावत देगी.

قَالَ ابْنُ الْجَوْزِيِّ: اِنَّمَا فَضْلُ الْعَقْلِ بِتَأَمُّلِ الْعَوَاقِبِ، فَاَمَّا الْقَلِيْلُ الْعَقْلِ فَاِنَّهُ يَرَى الْحَالَ الْحَاضِرَةَ وَلَا يَنْظُرُ اِلٰى عَاقِبَتِهَا؛ فَاِنَّ اللِّصَّ يَرٰى اَخْذَ الْمَالِ وَيَنْسٰى قَطْعَ الْيَدِ!... وَكَذٰلِكَ شَارِبُ الْخَمْرِ يَلْتَذُّ تِلْكَ السَّاعَةَ، وَيَنْسٰى مَا يُجْنٰى مِنَ الْاٰفَاتِ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، وَكَذٰلِكَ الزِّنَا؛ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ يَرٰى قَضَاءَ الشَّهْوَةِ، وَيَنْسٰى مَا يُجْنٰى مِنْ فَضِيْحَةِ الدُّنْيَا وَمِنَ الْحَدِّ، فَقِسْ عَلٰى هٰذِهِ النَّبْذَةِ وَانْتَبِهْ لِلْعَوَاقِبِ، وَلَا تُؤْثِرْ لَذَّةً تُفَوِّتُ خَيْرًا كَثِيْرًا. (صيد الخاطر)

3. تَدَبُّرُ الْقُرْاٰنِ:

فَالْقُرْاٰنُ كِتَابُ اللّٰهِ الْمُبِيْنُ، فِيْهِ الْهُدٰى وَالنُّوْرُ وَالْمَخْرَجُ مِنْ كُلِّ فِتْنَةٍ، سَوَاءً فِىْ ذٰلِكَ فِتَنِ الشَّهَوَاتِ اَوِ الشُّبُهَاتِ... وَمَنْ تَدَبَّرَ الْقُرْاٰنَ حَقَّ تَدَبُّرِهِ اَوْرَثَهُ ذٰلِكَ عِلْمًا نَافِعًا وَتَوْبَةً صَادِقَةً وَبَصِيْرَةً نَافِذَةً وَزُهْدًا فِى الدُّنْيَا، وَاِقْبَالًا عَلَى الْاٰخِرَةِ، وَبُغْضًا لِلْمَعْصِيَةِ، وَحُبًّا لِلطَّاعَةِ، وَاِجْلَالًا لِلرَّبِ جَلَّ وَعَلَا، قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا﴾ (الاسراء: 82)

इब्ने जौज़ी कहते हैं: अक़्ल की बरतरी अंजामों पर ग़ौर करने के साथ है अलबत्ता जो कम अक़्ल होता है वो मौजूदा सूरते हाल को देखता है और उसके अंजाम को नहीं देखता, जो चोर है वो माल छीनने को देखता है और हाथ के कटने को भुला देता है और इसी तरह शराब पीने वाला, वो उस वक़्त तो मज़ा उठाता है और वो भूल जाता है जो वो दुनिया व आख़िरत में आफ़ात की फ़सल काटेगा. इसी तरह बदकारी का हाल है इन्सान अपनी शहवत को पूरा करने की तरफ़ देखता है और उसको भुला देता है जो वो दुनिया में बेइज़्ज़ती और हद के क़ायम होने की फ़सल काटेगा.इस थोड़े से बयान पर बाक़ी को भी क़यास कर लो और अंजाम के लिए ख़बरदार हो जाओ और ऐसी लज़्ज़त को तरजीह ना दो जो बहुत सी भलाई से महरूम कर दे.

3.क़ुरआन में गौर करना:

क़ुरआन अल्लाह की रौशन किताब है, इसमें हिदायत व नूर है और हर फ़ितने से निजात का ब्यान है, बराबर है कि इसमें ख़्वाहिशात के फ़ितने हों या शक व शुबहात के फ़ितने हों... और जो क़ुरआन में ऐसा ग़ौर करता है जैसा उसका हक़ है तो यह बात उसको मज़ीद फ़ायदामन्द इल्म,सच्ची तौबा और नाफ़िज़ होने वाली बसीरत,दुनिया में बेरग़बती,आख़िरत की तरफ तवज्जो दिलाने,नाफ़रमानी से नफ़रत,और इताअत से मोहब्बत और अल्लाह तआला की ताज़ीम अता करती है.और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “और हम क़ुरान में से वह नाज़िल करते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रहमत है और वो ज़ालिमों को ख़सारे के सिवा किसी चीज़ में ज़्यादा नहीं करता.”

© ALHUDA ISLAMIC WELFARE FOUNDATION

4.اَلْحِرْصُ عَلٰى صُحْبَةِ الْاَخْيَارِ وَتَرْكِ صُحْبَةِ الْاَشْرَارِ:

وَهٰذَا اَيْضًا مِمَّا يُعِيْنُ الْمَرْءَ عَلَى التَّوْبَةِ وَاسْتِمْرَارِهَا،فَاِنَّ الطَّبَعَ يَسْرِقُ مِنْ خِصَالِ الْمُخَالِطِيْنَ قَالَ تَعَالٰى:﴿اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ﴾ (الزخرف: 67)

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ؛فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَنْ يُّخَالِلُ.
(رواه الترمذی)

5.وَمِنْ اَسْبَابِ اسْتِمْرَارِ التَّوْبَةِ:

مَفَارَقَةُ مَوْضِعِ الْمَعْصِيَةِ:وَذٰلِكَ اِذَا كَانَ وُجُوْدُهُ فِيْهِ سَبَبًا فِىْ وُقُوْعِهٖ فِى الْمَعْصِيَةِ مَرَّةً اُخْرٰى،قَالَ تَعَالٰى:﴿اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا﴾.

6.وَمِنْ اَسْبَابِ اسْتِمْرَارِ التَّوْبَةِ:

ذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَدُعَاؤُهٗ وَاسْتِغْفَارُهٗ...فَاِنَّ الذِّكْرَ حَيَاةُ الْقُلُوْبِ،وَالدُّعَاءُ سَلَاحُ الْمُؤْمِنِ،وَالْاِسْتِغْفَارُ مِنْ دَلَائِلِ التَّوْبَةِ وَالْاِنَابَةِ،وَكُلُّ ذٰلِكَ يُوْقِظُ الْقَلْبَ وَيُنَبِّهُهٗ وَيَطْرُدُ عَنْهُ وَارِدَاتِ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَالتَّعَلُّقِ بِالدُّنْيَا.

7.وَمِنْ اَسْبَابِ اسْتِمْرَارِ التَّوْبَةِ:

قِصَرُ الْاَمَلِ وَذِكْرُ الْمَوْتِ:وَكَذٰلِكَ تَذَكُّرُ مَنَازِلِ الْاٰخِرَةِ،مِنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ وَتَشْيِيْعِ الْجَنَائِزِ،وَكُلُّهَا اُمُوْرٌ تَعْمَلُ عَلٰى يَقْظَةِ الْقَلْبِ وَعَدَمِ غَفْلَتِهٖ.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

4.नेक लोगों की सोहबत की हिर्स, और बुरे लोगों की सोहबत छोड़ना:

और यह चीज़ भी इन्सान को तौबा करने और उस पर क़ायम रहने पर मदद करती है. बेशक तबीयत मिल-जुल कर रहने वालों की ख़सलतों और आदतों को कुछ ना कुछ चोरी कर लेती है. अल्लाह तआला का फ़रमान: "सब दिली दोस्त उस दिन एक-दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाए मुत्तक़ीन के." और नबी ﷺ ने फ़रमाया: आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है पस उसे ग़ौर करना चाहिए वो किससे दोस्ती कर रहा है.

5.और तौबा के क़ायम रहने के असबाब में से एक ये है:

नाफ़रमानी की जगह छोड़ देना. ये उस वक़्त है जब उस जगह में इन्सान का होना दोबारा उस नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होने की वजह बने. अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ ना थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते?"

6.और तौबा के क़ायम-दायम रहने के असबाब में से एक ये है:

अल्लाह तआला का ज़िक्र करना,उससे दुआ करना और उससे इस्तग़फ़ार चाहना: क्योंकि ज़िक्र दिलों की ज़िन्दगी और दुआ मोमिन का हथियार है और इस्तग़फ़ार तौबा और आजिज़ी के दलाइल में से है. ये सब चीज़ें दिल को बेदार करती हैं, उसको ख़बरदार करती हैं, उससे दिल की सख़्ती, गफ़लत के हमलों और दुनिया के साथ जुड़ने को दूर करती हैं.

7.तौबा के क़ायम रहने के असबाब में से एक ये है:

आरज़ुओं का कम करना और मौत को याद करना. इसी तरह आख़िरत की मंज़िलों को याद करना, क़ब्रों की ज़ियारत करना और जनाज़ों के पीछे जाना ये सब ऐसे काम हैं जो दिल को बेदार करने का काम करते हैं और उसको गाफ़िल नहीं होने देते.

© LAJNA INTELLECTUAL WELFARE SOCIETY

8.وَمِنْ اَسْبَابِ اسْتِمْرَارِ التَّوْبَةِ:

تَحَرِّی الْحَلَالِ فِی الْمَاْکَلِ وَالْمَشْرَبِ وَالْمَلْبَسِ وَالْمَرْکَبِ وَفِیْ کُلِّ شَیْءٍ.

9.وَمِنَ الْاَسْبَابِ کَذٰلِکَ:

اَلتَّخَلُّصُ مِنَ الْمُحَرَّمَاتِ الظَّاهِرَةِ بِاِتْلَافِهَا...

مِثْلَ الْمُسَکِّرَاتِ وَ الْاٰلَاتِ اللَّهْوِ وَالصُّوَرِ وَالْاَفْلَامِ الْمُحَرَّمَةِ وَالْقِصَصِ الْمَاجِنَةِ وَالتَّمَاثِيْلِ وَالدِّشِّ وَغَيْرِ ذٰلِکَ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

8.और तौबा के क़ायम रहने के असबाब में से एक ये है:
खाने-पीने में,लिबास में,सवारी में और हर चीज़ में हलाल को कोशिश से हासिल करना.

9.और उसके असबाब में से ये है कि:
ज़ाहिरी हराम चीज़ों को तलफ़ करके उनसे पीछा छुड़ाना.
जैसे नशा वाली चीज़ें,मौसीक़ी के आलात,तसवीरें, हराम फ़िल्में,घटिया वाक़िआत (कहानियाँ), डिरामे, डिश और दुसरी चीज़ें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ قِصَصِ التَّائِبِيْنَ

اَخِی الْحَبِيْبَ:

قِصَصُ التَّائِبِيْنَ كَثِيْرَةٌ،وَاِخْبَارُ الْعَائِدِيْنَ طَوِيْلَةٌ...فَكَمْ مِنْ اُنَاسٍ تَابُوْا بَعْدَ طُوْلِ شُرُوْدٍ!...وَكَمْ مِنْ صَاحِبِ مَعْصِيَةٍ اَدْرَكَ اَنَّ الْعِزَّ فِیْ طَاعَةِ اللّٰهِ،وَاَنَّ عَوَاقِبَ الذُّنُوْبِ وَالْمَعَاصِیْ وَخِيْمَةٌ!...وَفِیْ قِصَصِ هٰؤُلَاءِ عِبَرٌ وَعِظَاتٌ،وَتَنْبِيْهٌ لِلْقَلْبِ وَاِيْقَاظٌ لَهُ مِنْ وَهْدَةِ الْغَفَلَاتِ،وَحَثٌّ لَهُ عَلَى الطَّاعَةِ وَتَرْكِ الْمُنْكَرَاتِ.

وَاعْلَمْ اَخِی الْحَبِيْبَ اَنَّ مَبْدَاَ التَّوْبَةِ يَقْظَةُ الْقَلْبِ وَانْتِبَاهُهُ مِنْ رِّقْدَةِ الْغَافِلِيْنَ،وَتَعْظِيْمُ جَنَابِ الرَّبِّ تَعَالٰی مِنْ سُلُوْكِ سَبِيْلِ الْجَاهِلِيْنَ...

نَسْاَلُ اللّٰهَ تَعَالٰی اَنْ يَجْعَلَنَا جَمِيْعًا مِنَ التَّائِبِيْنَ الْعَائِدِيْنَ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा करने वालों के वाक़िआत में से

मेरे प्यारे भाई! तौबा करने वालों के वाक़िआत बहुत हैं और अल्लाह की तरफ वापस लौटने वालों की ख़बरें भी लम्बी हैं... कितने लोग हैं जिन्होंने लम्बी आवारगी के बाद तौबा की और कितने ही गुनाह करने वालों को मालूम हो गया कि इज़्ज़त अल्लाह की इताअत में है और गुनाहों और नाफ़रमानियों का अंजाम बहुत ही बुरा है.इन लोगों के वाक़िआत में इबरतें और नसीहतें हैं,दिल के लिए तंबियाँ/ख़बरदार) और उसको ग़फ़लत की नींद से बेदार/जगाना) करना दिल को इताअत पर रग़बत देने और बुराईयों को छोड़ने वाली बात भी है.

जान लो, मेरे प्यारे भाई!

तौबा का आगाज़/शुरूआत) दिल की बेदारी/जागने) से है और गाफ़िलों की नींद से उसका जागना है और जाहिलों के रास्ते पर चलने से रब तआला की जनाब की ताज़ीम का लेहाज़ रखना है.

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि अल्लाह हम सबको तौबा करने वाला (अल्लाह की तरफ़) लौटने वाला बना दे.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَوْبَةُ الْكِفْلِ

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَدْ سَمِعْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ حَدِيْثًا قَالَ: كَانَ الْكِفْلُ مِنْ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ لَا يَتَوَرَّعُ عَنْ ذَنْبٍ عَمِلَهُ، فَاَتَتْهُ اِمْرَاَةٌ فَاَعْطَاهَا سِتِّيْنَ دِيْنَارًا عَلٰى اَنْ يَطَاَهَا، فَلَمَّا قَعَدَ مِنْهَا مَقْعَدَ الرَّجُلِ مِنِ امْرَاَتِهِ اِرْتَعَدَتْ وَبَكَتْ، فَقَالَ لَهَا: مَا يُبْكِيْكِ؟ اَكْرَهْتُكِ؟ قَالَتْ: لَا وَلٰكِنَّ هٰذَا عَمَلٌ لَمْ اَعْمَلْهُ قَطُّ. قَالَ: فَلِمَ تَفْعَلِيْنَ هٰذَا وَلَمْ تَكُوْنِيْ فَعَلْتِيْهِ قَطُّ؟ قَالَتْ: حَمَلَتْنِيْ عَلَيْهِ الْحَاجَةُ قَالَ: فَتَرَكَهَا، ثُمَّ قَالَ اِذْهَبِيْ وَالدَّنَانِيْرُ لَكِ. ثُمَّ قَالَ: وَاللّٰهِ لَا يَعْصِي اللّٰهَ الْكِفْلُ اَبَدًا، فَمَاتَ مِنْ لَيْلَتِهِ، فَاَصْبَحَ مَكْتُوْبًا عَلٰى بَابِهِ "غَفَرَ اللّٰهُ لِلْكِفْلِ". (رواه الترمذی والحاکم وصححه ووافقه الذهبی) (ضعیف)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

किफ़्ल की तौबा

सय्यदिना इब्ने उमर رضی اللہ عنہ कहते हैं: यक़ीनन मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से एक हदीस सुनी, फ़रमाया: "किफ़्ल बनी इस्राइल में से था वह किसी गुनाह से परहेज़ नहीं करता था कि उसको अमल में लाए. एक औरत उसके पास आई उसने उसे साठ दीनार दिए ताकि वह उससे जमा कर सके. जब वह बैठ गया (आदमी के अपनी बीवी के साथ बैठने की तरह) तो वो काँपने लगी और रोने लगी. उसने उससे पूछा: तुम क्यों रोती हो? क्या मैंने तुम्हें मजबूर किया था? उसने कहा: नहीं लेकिन ये ऐसा अमल है जो मैंने इससे पहले कभी नहीं किया. उसने कहा जब तुमने ये कभी नहीं किया था तो अब क्यों करती हो? उसने कहा: भूख ने मुझे इस पर मजबूर कर दिया है तो उसने उसको छोड़ दिया फिर कहा जाओ और दीनार भी तुम्हारे हैं फिर कहा: अल्लाह की क़सम किफ़्ल अब कभी अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करेगा. पस वो उसी रात मर गया सुब्ह उसके दरवाज़े पर लिखा हुआ था: अल्लाह ने किफ़्ल को बख़्श दिया.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَوْبَةُ قَاتِلِ الْمِائَةِ

عَنْ اَبِی سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ، اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: كَانَ فِیْمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِیْنَ نَفْسًا، فَسَاَلَ عَنْ اَعْلَمِ اَهْلِ الْاَرْضِ فَدُلَّ عَلٰی رَاهِبٍ، فَاَتَاهُ فَقَالَ اِنَّهُ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِیْنَ نَفْسًا فَهَلْ مِنْ تَوْبَةٍ؟ فَقَالَ لَا، فَقَتَلَهُ، فَكَمَّلَ بِهِ مِائَةً. ثُمَّ سَاَلَ عَنْ اَعْلَمِ اَهْلِ الْاَرْضِ فَدُلَّ عَلٰی رَجُلٍ عَالِمٍ. فَقَالَ اِنَّهُ قَتَلَ مِائَةَ نَفْسٍ، فَهَلْ مِنْ تَوْبَةٍ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، وَمَنْ یَحُوْلُ بَیْنَكَ وَبَیْنَ التَّوْبَةِ؟ اِنْطَلِقْ اِلٰی اَرْضِ كَذَا وَكَذَا، فَاِنَّ بِهَا اُنَاسًا یَعْبُدُوْنَ اللّٰهَ، فَاعْبُدِ اللّٰهَ مَعَهُمْ وَلَا تَرْجِعْ اِلٰی اَرْضِكَ؛ فَاِنَّهَا اَرْضُ سُوْءٍ... فَانْطَلَقَ حَتّٰی اِذَا نَصَفَ الطَّرِیْقَ اَتَاهُ مَلَكُ الْمَوْتِ، فَاخْتَصَمَتْ فِیْهِ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلَائِكَةُ الْعَذَابِ، فَقَالَتْ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ: جَاءَ تَائِبًا مُقْبِلًا بِقَلْبِهِ اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی. وَقَالَتْ مَلَائِكَةُ الْعَذَابِ: اِنَّهُ لَمْ یَعْمَلْ خَیْرًا قَطُّ، فَاَتَاهُمْ مَلَكٌ فِیْ صُوْرَةِ اٰدَمِیٍّ فَجَعَلُوْهُ بَیْنَهُمْ، فَقَالَ: قِیْسُوْا مَا بَیْنَ الْاَرْضَیْنِ؛ فَاِلٰی اَیَّتِهِمَا كَانَ اَدْنٰی فَهُوَ لَهُ، فَقَاسُوْا فَوَجَدُوْهُ اَدْنٰی اِلَی الْاَرْضِ الَّتِیْ اَرَادَ، فَقَبَضَتْهُ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ. وَفِیْ رِوَایَةٍ: فَكَانَ اِلَی الْقَرْیَةِ الصَّالِحَةِ اَقْرَبُ بِشِبْرٍ فَجُعِلَ مِنْ اَهْلِهَا.

وَفِیْ رِوَایَةٍ: فَاَوْحَی اللّٰهُ اِلٰی هٰذِهِ اَنْ تَبَاعَدِیْ وَاِلٰی هٰذِهِ اَنْ تَقَرَّبِیْ، وَقَالَ: قِیْسُوْا بَیْنَهُمَا فَوَجَدُوْهُ اِلٰی هٰذِهِ اَقْرَبُ بِشِبْرٍ فَغُفِرَ لَهُ. (متفق علیه)

सौ क़त्ल करने वाले की तौबा

सय्यदिना अबु सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ कहते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: तुमसे पहले लोगों में एक आदमी था जिसने 99 इन्सान क़त्ल किए थे. उसने ज़मीन वालों में सबसे बड़े आलिम के बारे में पूछा उसको एक राहिब का पता बताया गया. वो उसके पास गया उसने बताया: मैंने 99 इन्सान क़त्ल किए हैं क्या कोई तौबा है? उसने कहा: नहीं, उसने उसको भी क़त्ल कर दिया. उसने उसके क़त्ल के साथ सौ पूरे कर दिए. फिर उसने ज़मीन वालों में सबसे बड़े आलिम के बारे में पूछा फिर उसको एक आलिम आदमी का बताया गया. उसने कहा: मैंने सौ क़त्ल किए हैं, क्या कोई तौबा है? उसने कहा: हाँ तौबा है, और कौन है जो तुम्हारे और तौबा के दर्मियान रुकावट बन सके. फलां-फलां इलाक़े में चले जाओ क्योंकि वहाँ कुछ लोग हैं जो अल्लाह की इबादत करते हैं उनके साथ मिलकर अल्लाह की इबादत करो और अपने इलाक़े की तरफ़ वापस ना जाना क्योंकि वह बुरा इलाक़ा है. वो चला गया हत्ता कि जब उसने आधा रास्ता पार कर लिया तो उसके पास मौत का फ़रिश्ता पहुँच गया. रहमत के फ़रिश्ते और अज़ाब के फ़रिश्ते उसके बारे में झगड़ने लगे. रहमत के फ़रिश्तों ने कहा ये तौबा करते हुए और अपने दिल से अल्लाह तआला की तरफ़ रुख़ करते हुए आया है और अज़ाब के फ़रिश्तों ने कहा इसने कभी भी नेकी नहीं की. उनके पास इन्सान की सूरत में एक फ़रिश्ता आया उन्होंने उसको अपना हकम बनाया. उसने कहा तुम दोनों इलाक़ो में नाप करो, वो जिस इलाक़े के ज़्यादा क़रीब हो उसी इलाक़े में इसको गिना जाए. उन्होंने पैमाइश(नाप)की तो उन्होंने उसको उस ज़मीन के ज़्यादा क़रीब पाया जिसकी तरफ़ उसने इरादा किया था. उसकी रूह को रहमत के फ़रिश्तों ने ले लिया. एक रिवायत में है कि वह नेक लोगों की बस्ती के एक बालिश्त ज़्यादा क़रीब निकला, उसको वहाँ के रहने वालों में से ही समझा गया.

एक रिवायत में है कि अल्लाह ने उस ज़मीन को कहा: दूर हो जाओ और दूसरी ज़मीन को कहा: तुम क़रीब हो जाओ और कहा कि इन दोनों के दर्मियान पैमाइश करो तो उन्होंने देखा वो एक बालिश्त ज़्यादा उस इलाक़े के क़रीब है तो उसको माफ़ कर दिया गया.

تَوْبَةُ ثَلَاثِ بَنَاتٍ بَغَايَا

قَالَ الْحَسَنُ اَبُوْ جَعْفَرٍ:

كَانَ لُقْمَانُ الْحَبَشِيُّ عَبْدًا لِرَجُلٍ جَاءَ بِهِ اِلَى السُّوْقِ يُبِيْعُهُ،قَالَ: فَكَانَ كُلَّمَا جَاءَ اِنْسَانٌ يَشْتَرِيْهِ قَالَ لَهُ لُقْمَانُ: مَا تَصْنَعُ بِیْ؟فَيَقُوْلُ: اَصْنَعُ بِکَ كَذَا وَ كَذَا فَيَقُوْلُ: حَاجَتِیْ اِلَيْکَ اَلَّا تَشْتَرِيَنِیْ... حَتّٰى جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: مَا تَصْنَعُ بِیْ؟

قَالَ: اَصِيْرُکَ بَوَّابًا عَلٰى بَابِیْ،قَالَ: اَنْتَ اِشْتَرِنِیْ.

قَالَ: فَاشْتَرَاهُ،وَجَاءَ بِهِ اِلٰى دَارِهِ.

قَالَ: وَكَانَ لِمَوْلَاهُ ثَلَاثَ بَنَاتٍ يَبْغِيْنَ فِی الْقَرْيَةِ،وَاَرَادَ اَنْ يَخْرُجَ اِلٰى ضَيْعَةٍ لَهُ،فَقَالَ لَهُ: اِنِّیْ قَدْ اَدْخَلْتُ اِلَيْهِنَّ طَعَامَهُنَّ وَمَا يَحْتَجْنَ اِلَيْهِ،فَاِذَا خَرَجْتُ فَاَغْلِقِ الْبَابَ وَاقْعُدْ مِنْ وَرَائِهِ وَلَا تَفْتَحْهُ حَتّٰى اَجِیْءَ.

قَالَ: فَقُلْنَ لَهُ: اِفْتَحِ الْبَابَ،فَاَبٰى عَلَيْهِنَّ فَشَجَّجْنَهُ فَغَسَلَ الدَّمَ وَجَلَسَ.

فَلَمَّا قَدِمَ سَيِّدُهُ لَمْ يُخْبِرْهُ.ثُمَّ عَادَ مَوْلَاهُ بَعْدَ الْخُرُوْجِ فَقَالَ: اِنِّیْ قَدْ اَدْخَلْتُ اِلَيْهِنَّ مَا يَحْتَجْنَ اِلَيْهِ،فَلَا تَفْتَحِنَّ الْبَابَ.

فَلَمَّا خَرَجَ خَرَجْنَ اِلَيْهِ فَقُلْنَ لَهُ: اِفْتَحِ الْبَابَ،فَاَبٰى فَشَجَّجْنَهُ وَرَجَعْنَ، فَجَلَسَ فَلَمَّا جَاءَ مَوْلَاهُ لَمْ يُخْبِرْهُ بِشَیْءٍ.

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तीन बदकार लड़कियों की तौबा

हसन अबु जाफ़र कहते हैं: हब्शी लुक़मान एक आदमी का ग़ुलाम था वह उसको बाज़ार ले गया कि उसको बेच सके. जब भी कोई उसको खरीदने के लिए आता तो लुक़मान उससे कहता: तुम मेरा क्या करोगे तो वो कहता मैं तुमसे फलां-फलां काम लूँगा तो वो कहता: मेरी दरख़्वास्त ये है कि मुझे ना खरीदो. यहाँ तक कि एक आदमी आया. लुक़मान ने कहा मेरा क्या करोगे? उसने कहा: मैं तुझे अपने दरवाज़े पर पहरेदार रखूँगा. उसने कहा तुम मुझे ख़रीद लो उसने उसको ख़रीद लिया और अपने घर ले गया,उसके मालिक की तीन लड़कियां थीं वो उस गाँव में बदकारी करती थीं,उसने चाहा कि वो अपने खेत की तरफ़ जाए तो उसने लुक़मान से कहा कि मैंने इन लड़कियों का खाना और जिस चीज़ की इनको ज़रूरत है वो अन्दर पहुँचा दी है जब मैं चला जाऊँ तो दरवाज़ा बँद कर लेना, पीछे बैठ जाना और इसको ना खोलना यहाँ तक कि मैं आ जाऊँ.

लड़कियों ने कहा दरवाज़ा खोलो उसने इन्कार कर दिया तो उन्होंने उसका सर फाड़ दिया, उसने खून को धोया और बैठ गया.जब उसका आक़ा आ गया उसने उसको नहीं बताया फिर उसका आक़ा निकलने के बाद दोबारा वापस आया तो कहा: मैंने इन लड़कियों का खाना और जिस चीज़ की इनको ज़रूरत है वह अन्दर पहुँचा दी है तुम दरवाज़ा ना खोलना. जब वो चला गया तो लड़कियाँ उसके पास आईं और उससे कहा: दरवाज़ा खोलो उसने इन्कार कर दिया तो उन्होंने उसका सर फाड़ दिया तो वह बैठ गया जब उसका आक़ा आया उसने उसको कुछ भी नहीं बताया.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَالَ: فَقَالَتِ الْكَبِيْرَةُ: مَا بَالُ هٰذَا الْعَبْدِ الْحَبَشِيِّ اَوْلٰى بِطَاعَةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مِنِّیْ؟ وَاللّٰهِ لَاَتُوْبَنَّ فَتَابَتْ.

وَقَالَتِ الصُّغْرٰى: مَا بَالُ هٰذَا الْعَبْدِ الْحَبَشِيِّ وَهٰذِهِ الْكُبْرٰى اَوْلٰى بِطَاعَةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مِنِّیْ؟ وَاللّٰهِ لَاَتُوْبَنَّ فَتَابَتْ.

وَقَالَتِ الْوُسْطٰى: مَا بَالُ هَاتَيْنِ وَهٰذَا الْعَبْدِ الْحَبَشِيِّ اَوْلٰى بِطَاعَةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مِنِّیْ؟ وَاللّٰهِ لَاَتُوْبَنَّ فَتَابَتْ.

قَالَ: فَقَالَ غُوَاةُ الْقَرْيَةِ: مَا بَالُ هٰذَا الْعَبْدِ الْحَبَشِيِّ وَبَنَاتِ فُلَانٍ اَوْلٰى بِطَاعَةِ اللّٰهِ مِنَّا؟ فَتَابُوْا اِلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، وَكَانُوْا مِنْ عُبَّادِ الْقَرْيَةِ. (كتاب التوابين)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तो बड़ी बोली: इस हब्शी ग़ुलाम का क्या हाल है यह अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की इताअत करने में मुझसे ज़्यादा हक़दार है? अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर तौबा करुँगी तो उसने तौबा करली.

छोटी ने कहा: इस हब्शी गुलाम का क्या हाल है और इस बड़ी लड़की का, ये अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की इताअत करने में मुझसे ज़्यादा हक़दार हैं? मैं भी ज़रूर तौबा करुँगी.उसने भी तौबा करली.

और दर्मियान वाली बोली: इन दोनों लड़कियों को क्या हुआ और हब्शी गुलाम को क्या हुआ अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की इताअत करने में मुझसे ज़्यादा लायक़ हैं. अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर तौबा करुँगी तो उसने भी तौबा करली.

तो गाँव के बदकार लोगों ने कहा: इस हब्शी ग़ुलाम का क्या हाल है और फलाँ की बेटियों का,क्या अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की इताअत करने में हमसे ज़्यादा हक़दार हैं. उन्होंने भी अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की तरफ़ तौबा कर ली और वो उस गाँव के इबादत करने वालों में से हो गए.

تَوْبَةُ الْغَامِدِيَّةِ

جَاءَتْ اِمْرَاَةٌ مِنْ غَامِدٍ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! طَهِّرْنِيْ.

فَقَالَ: وَيْحَكِ، اِرْجِعِيْ فَاسْتَغْفِرِى اللّٰهَ وَتُوْبِيْ اِلَيْهِ.

فَقَالَتْ: اَرَاكَ تُرِيْدُ اَنْ تُرَدِّدَنِيْ كَمَا رَدَدْتَ مَاعِزَ بْنَ مَالِكٍ؟

قَالَ: وَمَا ذَاكِ؟ قَالَتْ اِنَّهَا حُبْلٰى مِنَ الزِّنَا .

فَقَالَ: اَنْتِ؟ قَالَتْ: نَعَمْ.

فَقَالَ لَهَا: حَتّٰى تَضَعِيْ مَا فِيْ بَطْنِكِ.

قَالَ: فَكَفَلَهَا رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ حَتّٰى وَضَعَتْ.

قَالَ: فَاَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: قَدْ وَضَعَتِ الْغَامِدِيَّةُ فَقَالَ: اِذَنْ لَا نَرْجُمُهَا وَنَدَعُ وَلَدَهَا صَغِيْرًا لَيْسَ لَهُ مَنْ يُرْضِعُهُ.

فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فَقَالَ: اِلَيَّ رَضَاعُهُ يَانَبِيَّ اللّٰهِ! قَالَ: فَرَجَمَهَا.

وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَاَقْبَلَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيْدِ بِحَجَرٍ فَرَمٰى رَاْسَهَا، فَتَنَضَّحَ الدَّمُ عَلٰى وَجْهِ خَالِدٍ، فَسَبَّهَا، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ سَبَّهُ اِيَّاهَا فَقَالَ: مَهْلًا يَا خَالِدُ! فَوَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ، لَقَدْ تَابَتْ تَوْبَةً لَوْ تَابَهَا صَاحِبُ مُكْسٍ لَغُفِرَ لَهُ.

ثُمَّ اَمَرَ بِهَا فَصَلّٰى عَلَيْهَا وَدُفِنَتْ.

وَفِيْ رِوَايَةٍ: لَقَدْ تَابَتْ تَوْبَةً لَوْ قُسِمَتْ بَيْنَ سَبْعِيْنَ مِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ لَوَسِعَتْهُمْ، وَهَلْ وَجَدْتَ تَوْبَةً اَفْضَلَ مِنْ اَنْ جَادَتْ بِنَفْسِهَا لِلّٰهِ تَعَالٰى.

(رواه مسلم)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ग़ामदिया की तौबा

ग़ामिद क़बीले की एक औरत नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे पाक कर दें. तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अफ़सोस! जाओ अल्लाह से बख़्शिश माँगो और उससे तौबा करो." तो उसने कहा: मैं आपको देख रही हूँ कि आप मुझे यूँ वापस लौटाना चाहते हैं जैसे आपने माइज़ बिन मालिक को लौटाया. आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मसला है?" उसने कहा कि वो ज़िना से हामला(गर्भवती)हो गई है तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम?" उसने कहा: हाँ. तो आप ﷺ ने उससे फ़रमाया: (चली जाओ) हमल पूरा करलो. एक अंसारी आदमी ने उसकी किफ़ालत की यहाँ तक कि उसने बच्चा जन्म दे दिया. फिर वो नबी ﷺ के पास आई तो फ़रमाया: "ग़ामदिया ने बच्चा जन्म दे दिया" फिर फ़रमाया: "तब तो हम इसको रजम नहीं करेंगे कि हम उसके बच्चे को छोटा छोड़ दें,कोई ऐसा ना हो जो उसको दूध पिला सके." तो अन्सार का एक आदमी उठा उसने कहा: ऐ अल्लाह के नबी! इसका दूध पिलाना मेरे ज़िम्मे है तो आपने उसको रजम कर दिया.

एक रिवायत में है कि ख़ालिद बिन वलीद एक पत्थर उठा कर लाए फिर उसके सर पर मारा, ख़ून के छीटे ख़ालिद के चेहरे पर पड़े तो उन्होंने उसको बुरा-भला कहा. नबी ﷺ ने उनका उसको बुरा-भला कहना सुन लिया तो फ़रमाया: "रुक जाओ ऐ ख़ालिद! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है इसने ऐसी तौबा की है अगर टैक्स लेने वाला भी ऐसी तौबा करता तो उसको माफ़ कर दिया जाता." फिर आप ﷺ ने उसके मुताल्लिक़ हुक्म जारी किया तो आप ﷺ ने उसका जनाज़ा पढ़ाया और उसको दफ़न कर दिया.

एक रिवायत में है कि उसने ऐसी तौबा की है कि अगर उसे अहले मदीना के सत्तर आदमियों में तक़्सीम कर दिया जाए तो सबको काफ़ी हो जाए क्या तुमने इससे अच्छी तौबा कहीं पाई कि जिसने अल्लाह तआला के लिए जान की क़ुर्बानी दे दी.

تَوْبَةُ زَاذَانَ

رُوِیَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ مَرَّ ذَاتَ یَوْمٍ فِیْ مَوْضِعٍ مِنْ نَوَاحِی الْکُوْفَةِ،فَاِذَا فِتْیَانٌ فُسَّاقٌ قَدِ اجْتَمَعُوْا یَشْرَبُوْنَ،وَفِیْهِمْ مُغَنٍّ یُقَالُ لَهُ زَاذَانُ یَضْرِبُ بِالْعُوْدِ وَیُغَنِّیْ،وَکَانَ لَهُ صَوْتٌ حَسَنٌ،فَلَمَّا سَمِعَ ذٰلِکَ عَبْدُ اللّٰهِ قَالَ:مَا اَحْسَنَ هٰذَا الصَّوْتَ لَوْ کَانَ بِقِرَاءَةِ کِتَابِ اللّٰهِ! وَجَعَلَ الرِّدَاءَ عَلٰی رَاْسِهِ وَمَضٰی.

فَسَمِعَ زَاذَانُ قَوْلَهُ فَقَالَ:مَنْ کَانَ هٰذَا؟

قَالُوْا:عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْعُوْدٍ صَاحِبُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ.

قَالَ:وَاَیُّ شَیْءٍ قَالَ؟

قَالُوْا:اِنَّهُ قَالَ مَا اَحْسَنَ هٰذَا الصَّوْتَ لَوْ کَانَ بِقِرَاءَةِ کِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰی.

فَقَامَ،وَضَرَبَ بِالْعُوْدِ عَلَی الْاَرْضِ فَکَسَّرَهُ،ثُمَّ اَسْرَعَ فَاَدْرَکَهُ،وَجَعَلَ بِالْمِنْدِیْلِ فِیْ عُنُقِ نَفْسِهِ،وَجَعَلَ یَبْکِیْ بَیْنَ یَدَیْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ فَاعْتَنَقَهُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْعُوْدٍ،وَجَعَلَ یَبْکِیْ کُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا...ثُمَّ قَالَ عَبْدُ اللّٰهِ:کَیْفَ لَا اُحِبُّ مَنْ قَدْ اَحَبَّهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ؟

فَتَابَ اِلَی اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ مِنْ ذُنُوْبِهِ وَلَازَمَ عَبْدَ اللّٰهِ حَتّٰی تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ، وَاَخَذَ حَظًّا وَافِرًا مِنَ الْعِلْمِ حَتّٰی صَارَ اِمَامًا فِی الْعِلْمِ رَحِمَهُ اللّٰهُ.

(کتاب التوابین)

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ज़ाज़ान की तौबा

अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत किया गया है कि एक दिन कूफ़ा के नवाही में एक जगह पर उनका गुज़र हुआ. वहाँ कुछ फ़ासिक़ लड़के मिल कर शराब पी रहे थे और उनमें एक गीत गाने वाला भी था उसका नाम ज़ाज़ान था. वह सारंगी बजा रहा था और गीत गा रहा था. उसकी आवाज़ बहुत अच्छी थी. जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ ने ये आवाज़ सुनी तो कहा: ये आवाज़ क्या ही अच्छी है काश ये अल्लाह की किताब की तिलावत में होती और अपने सर पर चादर ओढ़ी और चल पड़े.

ज़ाज़ान ने उनका ये क़ौल सुना तो कहा: ये कौन था?

लोगों ने बताया: ये रसूल अल्लाह ﷺ के सहाबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद थे.

उसने पूछा: उन्होंने क्या कहा?

लोगों ने कहा: वो कह रहे थे कि ये क्या ही अच्छी आवाज़ है काश कि ये अल्लाह की किताब की तिलावत में होती.

तो वो उठा और सारंगी को ज़मीन पर मारा और उसको तोड़ दिया फिर तेज़ चला और अब्दुल्लाह बिन मसऊद को जा लिया और अपनी गर्दन में रुमाल को डाल दिया और अब्दुल्लाह बिन मसऊद के सामने रोने लग गया. अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने उसको गले लगाया दोनों में से हर एक रो रहा था फिर अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ ने कहा: मैं उससे क्यों ना मोहब्बत करूँ जिससे अल्लाह अज़्व जल्ल मोहब्बत करता है? तो उसने अल्लाह अज़्व जल्ल की बारगाह में अपने गुनाहों की तौबा की और

अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ को लाज़िम कर लिया हत्ता कि क़ुरआन सीखा और इल्म का कसीर(बड़ा)हिस्सा सीख लिया यहाँ तक कि वो इल्म का इमाम बन गया अल्लाह उस पर रहम करे.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بُشْرٰی لِلتَّائِبِیْنَ

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ عَبْدًا اَصَابَ ذَنْبًا فَقَالَ: یَارَبِّ، اِنِّیْ اَذْنَبْتُ ذَنْبًا فَاغْفِرْهُ لِیْ. فَقَالَ رَبُّهُ: عَلِمَ عَبْدِیْ اَنَّ لَهُ رَبًّا یَغْفِرُ الذَّنْبَ وَیَاْخُذُ بِهِ، فَغَفَرَ لَهُ، ثُمَّ مَکَثَ مَاشَاءَ اللّٰهُ، ثُمَّ اَصَابَ ذَنْبًا اٰخَرَ، فَقَالَ: یَارَبِّ، اِنِّیْ اَذْنَبْتُ ذَنْبًا فَاغْفِرْلِیْ، فَقَالَ رَبُّهُ: عَلِمَ عَبْدِیْ اَنَّ لَهُ رَبًّا یَغْفِرُ الذَّنْبَ وَیَاْخُذُ بِهِ، فَقَالَ رَبُّهُ: غَفَرْتُ لِعَبْدِیْ؛ فَلْیَعْمَلْ مَاشَاءَ. (متفق علیه)

قُلْ لِلَّذِیْ اَلِفَ الذُّنُوْبَ وَاَجْرَمَا
وَغَدَا عَلٰی زَلَّاتِهِ مُتَنَدِّمَا
لَا تَیْئَسَنْ مِنَ الْجَلِیْلِ فَعِنْدَنَا
فَضْلٌ یُنِیْلُ التَّائِبِیْنَ تَکَرُّمًا
یَا مَعْشَرَ الْعَاصِیْنَ جُوْدِیْ وَاسِعٌ
تُوْبُوْا وَدُوْنَکُمُ الْمُنٰی وَالْمَغْنَمَا
لَا تَقْنَطُوْا فَالذَّنْبُ مَغْفُوْرٌ لَکُمْ
اِنِّی الْجَدِیْرُ بِاَنْ اَجُوْدَ وَاَرْحَمَا

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तौबा करने वालों के लिए बशारत(ख़ुशख़बरी)

अबु हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ से सुना: "बेशक एक बन्दे ने गुनाह किया तो उसने कहा: ऐ मेरे रब! मुझसे गुनाह हो गया है मुझे माफ़ कर दे ओर उसके रब ने कहा: क्या मेरा बंदा जानता है कि उसका एक रब है जो गुनाह को बख़्शता है और उस पर पकड़ भी कर सकता है तो उसने उसको माफ़ कर दिया. फिर वो रुका रहा जब तक अल्लाह ने चाहा फिर उसने एक और गुनाह कर लिया और कहा ऐ मेरे रब! मुझसे गुनाह हो गया मुझे माफ़ कर दे तो उसके रब ने कहा: क्या मेरा बंदा जानता है कि उसका एक रब है जो गुनाहों को माफ़ करता है और उस पर पकड़ भी करता है तो उसके रब ने कहा: मैंने अपने बन्दे को माफ़ किया पस वो जो चाहे करे.

उस आदमी को कह दो जो गुनाहों से मानूस/पहचान) हो चुका है और जुर्म करता है और अपनी लगज़िशों/डगमगाने पर वह नादिम(शर्मिन्दा)हो चुका है तो अल्लाह ताला की ज़ात से मायूस ना हो हमारे पास मेहरबानी है जो तौबा करने वालों को इज़्ज़त देती है ऐ नाफरमानों की जमात मेरी सख़ावत/रहम दिली वसीअ(फेली हुई) है तौबा कर लो तुम्हारे सामने तुम्हारी आरज़ुऐं हैं और ग़नीमत है तुम मायूस ना हो, तुम्हारे गुनाह बख़्श दिए जाऐंगे मैं इस लायक़ हूँ कि मैं सख़ावत करूँ और रहम करूँ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلْمَصَادِرُ

مدارج السالكين. الفوائد. الجواب الكافى. لابن القيم.

صيد الخاطر. التبصرة لابن الجوزى.

التوابين لابن قدامة المقدسى.

التوبة. احمد عز الدين البيانونى.

التوبة الى اللّٰه صالح السدلان.

اريد ان اتوب ولكن محمد المنجد.

الفجر الصادق. عبد الملک القاسم.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

गुनाहों की बख़्शिश की दुआऐं

इस्तग़फ़ारात

क़ुरआनी दुआऐं

رَبِّ اِنِّیۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡلِیۡ...O(القصص:16)

ऐ मेरे रब! बिलाशुबा मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया है. लिहाज़ा मुझे माफ़ फ़रमा दे.

رَبِّ اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ وَاَنۡتَ خَیۡرُ الرّٰحِمِیۡنَO(المؤمنون:118)

ऐ मेरे रब! बख़्श दे और रहम कर और तू रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है.

رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِO(ال عمرٰن:16)

ऐ मेरे रब बेशक हम ईमान ले आए हें लिहाज़ा हमारे लिए हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें आग के अज़ाब से बचाले.

سَمِعۡنَا وَاَطَعۡنَا غُفۡرَانَکَ رَبَّنَا وَاِلَیۡکَ الۡمَصِیۡرُO(البقرة:285)

हमने सुना और हमने इताअत की, तेरी बख़्शिश माँगते हैं ऐ हमारे रब! और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है.

اَنۡتَ وَلِیُّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَیۡرُ الۡغٰفِرِیۡنَO(الاعراف:155)

तू ही हमारा सरपरस्त है. लिहाज़ा हमें माफ़ फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और तू बख़्शने वालों में सबसे बेहतर है.

رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَیۡرُ الرّٰحِمِیۡنَO(المؤمنون:109)

ऐ हमारे रब! पस हमें बख़्शदे और हम पर रहम फ़रमा और तू सब रहम करने वालों से बेहतर रहम करने वाला है.

رَبَّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَکَفِّرۡعَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الۡاَبۡرَارِO (ال عمرٰن:193)

ऐ हमारे रब! पस हमारे लिए हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमसे हमारी बुराइयाँ दूर फ़रमा और हमें नेक लोगों के साथ फ़ौत करना.

رَبَّنَا اغۡفِرۡلِیۡ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَوۡمَ یَقُوۡمُ الۡحِسَابُO(ابراهيم:41)

ऐ हमारे रब! मुझे भी बख्श दे और मेरे माँ-बाप को भी और ईमान वालों को भी जिस दिन हिसाब क़ायम होगा.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبَّنَآ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡلَنَا اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌO (التحریم:8)

ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें बख़्श दे, यक़ीनन तू हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है.

رَبَّنَا ظَلَمۡنَآ اَنۡفُسَنَا ۫ وَاِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَO(الاعراف:23)

ऐ हमारे रब हम ने अपने उपर ज़ुल्म किया और अगर तू ने हमें माफ़ ना फ़रमाया और हम पर रहम ना किया तो यक़ीनन हम ख़सारा पाने वालों में से हो जाऐंगे.

رَبَّنَا اغۡفِرۡلَنَا ذُنُوۡبَنَا وَاِسۡرَافَنَا فِیۡٓ اَمۡرِنَا وَثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَی الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَO
(ال عمران:147)

ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारे गुनाहों और हमारे मामले में हमारी ज़्यादती को बख़्शदे और हमारे क़दम जमादे और काफिर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फरमा.

رَبِّ اِنِّیۡٓ اَعُوۡذُبِکَ اَنۡ اَسۡئَلَکَ مَا لَیۡسَ لِیۡ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَاِلَّا تَغۡفِرۡ لِیۡ وَتَرۡحَمۡنِیۡٓ اَکُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِیۡنَ O(ھود:47)

ऐ मेरे रब! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ कि तुझसे ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का मुझे कुछ इल्म नहीं और अगर तूने मुझे ना बख़्शा और मुझपर रहम ना किया तो मैं ख़सारा पाने वालों में से हो जाऊँगा.

رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا وَلِاِخۡوَانِنَا الَّذِیۡنَ سَبَقُوۡنَا بِالۡاِیۡمَانِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِیۡ قُلُوۡبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَآ اِنَّکَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ O(الحشر:10)

ऐ हमारे रब! हमें और हमारे उन भाइओं को बख़श दे जो हम से पेले इमान लाए और हमारे दिलों में उन लोगों के लीए कोइ कीना ना रख जो इमान लाए. ऐ हमारे रब बेशक तू बेहद शफ़क़त करने वाला निहायत रहम करने वाला है.

رَبَّنَا عَلَیۡکَ تَوَکَّلۡنَا وَاِلَیۡکَ اَنَبۡنَا وَاِلَیۡکَ الۡمَصِیۡرُO رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةً لِّلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَاغۡفِرۡلَنَا رَبَّنَا اِنَّکَ اَنۡتَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُO (الممتحنة:5-4)

ऐ हमारे रब! हमने तुझही पर भरोसा किया और हमने तेरी तरफ़ रुजुअ किया और तेरी ही तरफ़ लौटना है-ऐ हमारे रब! हमें उन लोगों के लिए आज़माइश ना बना जिन्होंने कुफ़्र किया और हमें बख़्शदे ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू ही सब पर ग़ालिब,कमाल हिकमत वाला है-

رَبِّ اَوۡزِعۡنِیۡٓ اَنۡ اَشۡکُرَ نِعۡمَتَکَ الَّتِیۡٓ اَنۡعَمۡتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنۡ اَعۡمَلَ صَالِحًا تَرۡضٰهُ وَاَصۡلِحۡ لِیۡ فِیۡ ذُرِّیَّتِیۡ ۚ اِنِّیۡ تُبۡتُ اِلَیۡکَ وَاِنِّیۡ مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَO(الاحقاف:15)

ऐ मेरे रब! मुझे तोफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इस नेअमत का शुक्र जो तूने मुझपर और मेरे वालिदैन पर की है और ये कि मैं ऐसे नेक अमल करूँ जिस से तू राज़ी हो जाए और तू मेरे लिए मेरी औलाद की इस्लाह फ़रमा,बेशक मैं तेरी तरफ़ तौबा करता हूँ और बिलाशुबा मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ-

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (البقرة: 286)

ऐ हमारे रब! हमसे मुआख़िज़ा ना कर अगर हम भूल जाऐं या ख़ता कर जाऐं,ऐ हमारे रब! हम पर कोई(भारी)बोझ ना डाल,जैसे तूने उन लोगों पर डाला जो हमसे पहले थे,ऐ हमारे रब! हमसे वो चीज़ ना उठवा जिस(के उठाने)की हममें ताक़त ना हो,हमसे दरगुज़र कर,हमें बख़्शदे और हम पर रहम कर तू ही हमारा मददगार है सो काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा-

मसनून दुआऐं

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ. (صحیح مسلم:6986)

ऐ अल्लाह! मेरा गुनाह बख़्शदे-

رَبِّ اَذْنَبْتُ فَاغْفِرْ لِیْ. (صحیح البخاری:750)

ऐ मेरे रब! मेंने गुनाह कर दिया पस मुझे बख़्शदे-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ. (سوبار) (صحیح البخاری:6307)

मैं अल्लाह से बख़्शिश मांगता हूँ और मैं उससे तौबा करता हूँ-

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ خَطِيْئَتِیْ يَوْمَ الدِّيْنِ. (صحیح مسلم:518)

ऐ मेरे रब! तू बदले के दिन मेरी ख़ता बख़्श देना-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَخَطَئِیْ وَعَمْدِیْ. (مسند احمد، ج:16269,26)

ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह,मेरी लग़ज़िश और मेरे जानबूझ कर किए जाने वाले गुनाह माफ़ फ़रमा-

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ غَيْرُكَ. (سنن الترمذی:3446)

ऐ मेरे रब! मेरे गुनाहों को बख़्शदे क्योंकि तेरे सिवा कोई नहीं है जो गुनाहों को माफ़ कर सके-

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. (سوبار) (سنن أبی داؤد:1516)

ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे मेरी तरफ़ रुजूअ फ़रमा बिलाशुबा तू बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला, बहुत रहम करने वाला है-

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاھْدِنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ. (صحیح مسلم:6850)

ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे और मुझपर रहम फ़रमा और मुझे हिदायत दे और मुझे आफ़ियत दे और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा-

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ. (صحیح مسلم:1116)

पाक है अल्लाह अपनी तारीफ़ के साथ,मैं अल्लाह से बख़्शिश चाहता हूँ और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ-

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ. (صحیح مسلم:1086)

पाक है तू और तेरी ही तारीफ़ है,मैं तुझसे बख़्शिश माँगता हूँ और मैं तेरी तरफ़ तौबा करता हूँ-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ. (سنن أبی داؤد:1517)

मैं अल्लाह से बख़्शिश माँगता हूँ वो जिसके सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं,जो ज़िन्दा है,क़ायम रहने वाला है और मैं उसकी तरफ़ तौबा करता हूँ-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ. (سنن الترمذی:3577)

मैं अल्लाह अज़ीम से बख़्शिश माँगता हूँ वो जिसके सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं,जो ज़िन्दा है, क़ायम रहने वाला है और मैं उसकी तरफ़ तौबा करता हूँ-

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. (مسند احمد،ج:5354,9)

ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा,मुझपर रहम फ़रमा और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा बेशक तूही बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला,निहायत मेहरबान है-

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ اُشْرِکَ بِکَ وَاَنَا اَعْلَمُ، وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَا اَعْلَمُ. (الادب المفرد:716)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ इस बात से कि मैं जान बूझकर तेरे साथ किसी को शरीक करूँ और जो मैं नहीं जानता उसके लिए तुझसे मग़फ़िरत तलब करता हूँ-

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.
(الادب المفرد:633)

ऐ अल्लाह! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रहम कर और हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचाले-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا اَخْطَاْتُ وَمَا تَعَمَّدْتُّ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا جَهِلْتُ وَمَا تَعَمَّدْتُ

(مسند احمد، ج: 19925,33)

ऐ अल्लाह! मेरे उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा जो मैंने ग़ल्ती से किए,जो मैंने जान बूझकर किए,जो मैंने छुपकर किए,जो मैंने एलानिया तोर पर किए,जो मैंने नादानी में किए और जो मेंने जानते बूझते हुए किए-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ. (سلسلة الصحيحة:3336)

अल्लाह पाक है सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है अल्लाह के सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है,ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे,ऐ अल्लाह! मुझपर रहम फ़रमा ऐ अल्लाह! मुझे रिज़्क़ दे-

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِیْ مِنَ الذُّنُوْبِ وَالْخَطَايَا اَللّٰهُمَّ نَقِّنِیْ مِنْهَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِیْ بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ. (سنن النسائی:402)

ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों और ग़ल्तियों से पाक कर ऐ अल्लाह! मुझे उनसे इस तरह पाक साफ़ कर जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मेल कुचेल से पाक किया जाता है,ऐ अल्लाह! मुझे बर्फ़,औले और ठंडे पानी से पाक करदे-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ وَاَنَا عَبْدُكَ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِیْ يَارَبِّ فَاغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّیْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (مسنداحمد،ج:10681,16)

ऐ अल्लाह! तू मेरा रब और मैं तेरा बंदा हूँ,मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया,मुझे अपने गुनाह का ऐतराफ़ है, ऐ मेरे रब! पस मेरे लिए मेरा गुनाह माफ़ फ़रमा,बेशक तू ही मेरा रब है क्योंकि तेरे अलावा कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اِنَّكَ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ. (مسند احمد:19489)

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उन गुनाहों की माफ़ी चाहता हूँ जो मैंने पहले किए और मुझसे बाद में होंगे और जो मैंने छुपकर किए और जो मैंने एलानिया तौर पर किए,बेशक तू ही आगे करने वाला है और तू ही पीछे करने वाला है और तू हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَظُلْمَنَا وَهَزْلَنَا وَجِدَّنَا وَعَمْدَنَا وَكُلَّ ذٰلِكَ عِنْدَنَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الْعِبَادِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ. (صحيح ابن حبان:1027)

ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे गुनाहों को और ज़ुल्म को,हमारी बेपरवाहियों को,और हमारे संजीदगी में किए गुनाहों को और हमारे दानिस्ता किए गए गुनाहों को बख़्शदे और ये सब हमारी तरफ़ से ही हैं,ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ क़र्ज़ के चढ़ जाने से,बंदों के ग़ल्बे से और दुश्मनों के ख़ुश होने से-

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ عَنِّیْ خَطَایَایَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِیْ مِنَ الْخَطَایَا كَمَا نَقَّیْتَ الثَّوْبَ الْاَبْیَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَیْنِیْ وَبَیْنَ خَطَایَایَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَیْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

(صحیح البخاری:6368)

ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताऐं ओले और बर्फ़ के पानी से धोदे और मेरे दिल को ख़ताओं से इस तरह पाक साफ़ करदे जिस तरह तूने सफ़ेद कपड़े को मेल से पाक साफ़ किया और मेरे दर्मियान और मेरी ख़ताओं के दर्मियान इतनी दूरी करदे जैसे तूने मशरिक़ और मग़रिब के दर्मियान दूरी रखी है-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهُ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (صحیح البخاری:6306)

ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है,तेरे सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं,तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ और जहाँ तक मेरी इस्तिताअत है मैं तेरे अहदो पैमान पर क़ायम हूँ-मैं अपने कामों के शर से तेरी पनाह लेता हूँ और तेरे लिए अपने ऊपर तेरी नेअमत का इक़रार करता हूँ और मैं अपने गुनाह का भी ऐतराफ़ करता हूँ पस तू मुझे बख़्शदे क्योंकि तेरे अलावा कोई गुनाहों को बख़्श नहीं सकता-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَیْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِیْنِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ وَتَرْحَمَنِیْ وَاِذَا اَرَدْتَّ فِتْنَةً فِیْ قَوْمٍ فَتَوَفَّنِیْ غَیْرَ مَفْتُوْنٍ وَاَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یُحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ یُّقَرِّبُنِیْ اِلٰی حُبِّكَ. (مسند احمد،ج:36،22109)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे सवाल करता हूँ नेक काम करने का,मुनकरात को छोड़ने का,मिसकीनों से मोहब्बत करने का और ये कि तू मुझे माफ़ फरमा,तू मुझपर रहम फ़रमा और जब तू किसी क़ौम में आज़माइश का इरादा करे तो मुझे फ़ितने में मुब्तिला किए बग़ैर फ़ौत करदे और मैं तुझसे तेरी मोहब्बत,तुझसे मोहब्बत करने वालों की मोहब्बत और तेरी मोहब्बत के क़रीब करने वाले आमाल की मोहब्बत का सवाल करता हूँ-

رَبِّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْئَتِیْ وَجَهْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ كُلِّهٖ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطَایَایَ وَعَمْدِیْ وَجَهْلِیْ وَجِدِّیْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ

وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ. (صحيح البخارى:6398)

ऐ मेरे रब! मेरी ख़ता,मेरी नादानी और मेरे तमाम मामलात में मेरे हद से तजावुज़ करने में मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और उन गुनाहों में भी जिनको तू मुझसे ज़्यादा जानता है-ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरी ख़ताऐं,मेरे इरादे के साथ किए कामों और बिलाइरादा किए कामों और मेरे संजीदगी से किए कामों को माफ़ फ़रमादे और ये सब मेरी ही तरफ़ से हैं-ऐ अल्लाह! जो गुनाह मैं कर चुका हूँ और जो करूँगा और जिन्हें मैंने छुपाया और जिन्हें मैंने ज़ाहिर किया उनमें मेरी मग़फ़िरत फ़रमा तू ही आगे करने वाला है और तूही पीछे करने वाला है और तू हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है-

رَبَّنَا اَصْلِحْ بَيْنَنَا،وَاهْدِنَا سُبُلَ الْاِسْلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ،وَاصْرِفْ عَنَّا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِىْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا، قَائِلِيْنَ بِهَا،وَاَتْمِمْهَا عَلَيْنَا. (الادب المفرد:491)

ऐ हमारे रब! हमारे आपस के मामलात की इस्लाह करदे और इस्लाम के रास्तों की तरफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमा और हमें अंधेरों से निजात देकर नूर की तरफ़ ले आ,हमें तमाम ज़ाहिरी छुपी बद रियों से महफ़ूज़ रख और हमारे कानों,हमारी आँखों,हमारे दिलों,हमारी घरवालियों और हमारे बच्चों में हमारे लिए बर्कतें अता फ़रमा-हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा बिलाशुबा तू बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला है और रहम करने वाला है-हमें अपनी नेअमतों का शुक्र करने वाला बनादे,उन की तारीफ़ करने वाला और उनको बयान करने वाला बनादे और इन(नेअमतों) को हम पर कामिल फरमादे-

رَبِّ اَعِنِّىْ وَلَا تُعِنْ عَلَىَّ،وَانْصُرْنِىْ وَلَا تَنْصُرْ عَلَىَّ،وَامْكُرْ لِىْ وَلَا تَمْكُرْ عَلَىَّ،وَاهْدِنِىْ وَيَسِّرِ الْهُدٰى اِلَىَّ،وَانْصُرْنِىْ عَلٰى مَنْ بَغٰى عَلَىَّ،اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ لَكَ شَاكِرًا،لَكَ ذَاكِرًا، لَكَ رَاهِبًا،لَكَ مِطْوَاعًا اِلَيْكَ مُخْبِتًا،رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِىْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِىْ وَاَجِبْ دَعْوَتِىْ وَثَبِّتْ حُجَّتِىْ وَاهْدِ قَلْبِىْ وَسَدِّدْ لِسَانِىْ وَاسْلُلْ سَخِيْمَةَ قَلْبِىْ. (سنن أبى داؤد:1510)

ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा,मेरे ख़िलाफ़ किसी की मदद ना कर,मेरी नुसरत फ़रमा,मेरे ख़िलाफ़ किसी की नुसरत ना कर-मेरे हक़ में तदबीर फ़रमा,मेरे ख़िलाफ़ तदबीर ना कर-मेरी रहनुमाई फ़रमा और मेरी हिदायत को मेरे लिए आसान फ़रमादे और जो मेरे ख़िलाफ़ बग़ावत करे उसके मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा,ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्रगुज़ार,अपना ज़िक्र करने वाला,तुझीसे डरने वाला,तेरा अज़हद इताअत गुज़ार और तेरी तरफ़ बहुत ही तवाज़ो करने वाला बनादे-ऐ मेरे रब! मेरी तौबा क़ुबूल करले,मेरी ख़ताऐं धोडाल,

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मेरी दुआ क़बुल फ़रमा,मेरी हुज्जत क़ायम फ़रमादे,मेरे दिल को हिदायत दे,मेरी ज़बान को (हक़ पर)क़ायम रख और मेरे दिल के मेल कुचेल(बुग़्ज़,हसद और कीना वग़ैरा) को निकाल दे-

इस्तग़फ़ार के मवाक़े

वुज़ू के बाद

سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنۡتَ،اَسۡتَغۡفِرُکَ وَاَتُوۡبُ اِلَیۡکَ.
(سلسلة الصحيحة:2333)

ऐ अल्लाह! तू पाक है अपनी तारीफ़ के साथ,तेरे सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं मैं तुझही से मग़फ़िरत चाहता हूँ और मैं तेरी ही तरफ़ रुजूअ करता हूँ-

बैतुलख़ला से निकलने के बाद

غُفۡرَانَکَ. (سنن أبي داؤد:30)

तेरी बख़्शिश(मांगते हैं)-

दुआए इस्तफ़ताह

وَجَّھۡتُ وَجۡھِیَ لِلَّذِیۡ فَطَرَ السَّمٰوَاتِ وَالۡاَرۡضَ حَنِیۡفًا وَمَا اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ اِنَّ صَلَاتِیۡ وَنُسُکِیۡ وَمَحۡیَایَ وَمَمَاتِیۡ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرۡتُ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ اللّٰھُمَّ اَنۡتَ الۡمَلِکُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنۡتَ.اَنۡتَ رَبِّیۡ وَاَنَا عَبۡدُکَ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ وَاعۡتَرَفۡتُ بِذَنۡبِیۡ فَاغۡفِرۡلِیۡ ذُنُوۡبِیۡ جَمِیۡعًا اِنَّہٗ لَا یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ اِلَّا اَنۡتَ وَاھۡدِنِیۡ لِاَحۡسَنِ الۡاَخۡلَاقِ لَا یَھۡدِیۡ لِاَحۡسَنِھَا اِلَّا اَنۡتَ وَاصۡرِفۡ عَنِّیۡ سَیِّئَھَا لَا یَصۡرِفُ عَنِّیۡ سَیِّئَھَا اِلَّا اَنۡتَ لَبَّیۡکَ وَسَعۡدَیۡکَ وَالۡخَیۡرُ کُلُّہٗ فِیۡ یَدَیۡکَ وَالشَّرُّ لَیۡسَ اِلَیۡکَ اَنَا بِکَ وَاِلَیۡکَ تَبَارَکۡتَ وَتَعَالَیۡتَ اَسۡتَغۡفِرُکَ وَاَتُوۡبُ اِلَیۡکَ. (صحيح مسلم:1848)

मैंने यक्सू होकर अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ़ किया जिसने आसमामों और ज़मीन को बनाया और मैं शिर्क करने वालों मेंसे नहीं हूँ-बेशक मेरी नमाज़,मेरी क़ुर्बानी और मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है,जिसका कोई शरीक नहीं और इसी का हुक्म मुझे दिया गया है और मैं मुसलमानों मेंसे हूँ-ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है तेरे सिवा कोई और माअबूद बरहक़ नहीं तू ही मेरा रब है और मैं तेरा बंदा हूँ,मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किए और अपने गुनाह का ऐतराफ़ करता हूँ पस मेरे सब गुनाहों को बख़्शदे-बेशक तेरे सिवा कोई भी गुनाह नहीं बख़्श सकता और अच्छे अख़्लाक़ की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा-तेरे सिवा अच्छे अख़्लाक़ की तरफ़ कोई भी रहनुमाई नहीं कर सकता और बुरे अख़्लाक़ को मुझसे दूर करदे,

इन्हें तेरे सिवा मुझसे कोई दूर नहीं कर सकता-मैं हाज़िर हूँ और फ़रमांबरदार हूँ और सारी भलाई तेरे हाथ में है और किसी शर की निस्बत तेरी तरफ़ नहीं है-मैं तेरा हूँ और मेरा ठिकाना तेरी ही तरफ़ है- तेरी ज़ात बहुत बाबरकत और बहुत बुलंद है- मैं तुझसे मग़फ़िरत मांगता हूँ और तेरी ही तरफ़ रुजूअ करता हूँ-

रुकूअ व सुजूद में

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِکَ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ. (صحیح البخاری:794)

ऐ अल्लाह! तू पाक है,ऐ हमारे रब! और तेरी ही तारीफ़ है,ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे-

रुकूअ से उठने के बाद

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاءِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ اَللّٰھُمَّ طَھِّرْنِیْ بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ اَللّٰھُمَّ طَھِّرْنِیْ مِنَ الذُّنُوْبِ وَالْخَطَایَا کَمَا یُنَقَّی الثَّوْبُ الْاَبْیَضُ مِنَ الْوَسَخِ . (صحیح مسلم:1097)

ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है जिससे कि आसमान भरजाऐ और ज़मीन भर जाए और इनके अलावा जो तू चाहे भर जाए- ऐ अल्लाह! मुझे बर्फ़, औलों और ठन्डे पानी के साथ पाक करदे,ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों और ख़ताओं से ऐसे पाक करदे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है-

सजदे में

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ مَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ. (مسند احمد،ج:25140,42)

ऐ मेरे रब! मेरे लिए पोशीदा और ज़ाहिर तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमादे-

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ کُلَّہُ دِقَّہُ وَجِلَّہُ وَاَوَّلَہُ وَاٰخِرَہُ وَعَلَانِیَتَہُ وَسِرَّہُ. (صحیح مسلم:1084)

ऐ अल्लाह! मेरे थोड़े और ज़्यादा, अगले और पिछले,ज़ाहिर और छुपे सब गुनाह बख़्शदे-

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِرِضَاکَ مِنْ سَخَطِکَ وَبِمُعَافَاتِکَ مِنْ عُقُوْبَتِکَ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْکَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَیْکَ اَنْتَ کَمَا اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِکَ. (صحیح مسلم:1090)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामन्दी की और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह लेता हूँ और मैं तुझसे(डर कर)तेरी ही पनाह में आता हूँ- मैं तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं रखता तू वैसा ही है जैसे की तूने ख़ुद अपनी सना बयान की है-

© AHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दो सजदों के दर्मियान

رَبِّ اغْفِرْلِیْ رَبِّ اغْفِرْلِیْ. (سنن ابی داود:874)

ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे,ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे-

तश्हुद में

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ. (سوبار) (مسند احمد،ج:38،23150)

ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा और मेरी तौबा को क़ुबूल फ़रमा,बेशक तूही बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है,बहुत बख़्शने वाला है-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِکَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. (صحيح البخاری:834)

ऐ अल्लाह! बेशक मैंने अपनी जान पर(गुनाह करके)बहुत ज़ुल्म किए और तेरे अलावा कोई भी गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता,पस मुझे अपनी ख़ास बख़्शिश से माफ़ फ़रमा और मुझपर रहम फ़रमा,बेशक तू बड़ा बख़्शने वाला है,निहायत मेहरबान है-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. (صحيح مسلم:1848)

ऐ अल्लाह! मेरे उन गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा जो मैंने पहले किए और जो मैंने बाद में किए और जो मैंने छुपकर किए और जो मैंने ज़ाहिर किए और जो मैंने ज़्यादती की और जिनको तू मुझसे ज़्यादा जानता है तूही आगे करने वाला है और तूही पीछे करने वाला है और तेरे सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं है-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَخَطَايَایَ كُلِّهَا،اَللّٰهُمَّ اَنْعِشْنِیْ،وَاجْبُرْنِیْ وَاهْدِنِیْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ،فَاِنَّهٗ لَا يَهْدِیْ لِصَالِحِهَا،وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ(صحيح الجامع الصغير،ج:1,1266)

ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों मेरी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा- ऐ अल्लाह! मुझे तंदरुस्त करदे,मेरी कमियाँ पूरी करदे,नेक आमाल और अख़्लाक़ की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा,क़योंकि तेरे सिवा कोई उनकी नेकी की तरफ़ रहनुमाई नहीं कर सकता और तेरे सिवा कोई उनकी बुराई को दूर नहीं कर सकता

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ يَا اَللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ،اَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. (سنن أبی داؤد:985)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह! तू एक है बेनियाज़ है,जिस से ना कोई पैदा हुआ और ना ही वो किसी से पैदा हुआ और ना उसका कोई हमसर है,कि तू मेरे गुनाहों को बख़्शदे,क्योंकि तू बहुत बख़्शने वाला बहुत रहम करने वाला है-

सलाम फैरने के बाद

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ. (तीन बार)(صحيح مسلم :1334)

मैं अल्लाह से बख़्शिश माँगता हूँ-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَيَسِّرْلِیْ اَمْرِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ. (مصنّف لابن أبی شيبة،ج:2,3047)

ऐ अल्लाह! मेरा गुनाह बख़्शदे और मेरा काम आसान करदे और मेरे लिए मेरे रिज़्क़ में बर्कत दे-

सजदा तिलावत में

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ بِهَا،اَللّٰهُمَّ حُطَّ عَنِّیْ بِهَا وِزْرًا،وَاَحْدِثْ لِیْ بِهَا شُكْرًا،وَتَقَبَّلْهَا مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ عَبْدِکَ دَاوُدَ سَجْدَتَهُ. (مسند ابی يعلى الموصلی،ج:2،1069)

ऐ अल्लाह! इस(सजदे)की वजह से मुझसे(मेरे गुनाहों का)बोझ उतारदे मेरे लिए इसके ज़रिए शुक्र पैदा करदे और इसे मुझसे क़ुबूल फ़रमाले जैसा की तूने अपने बंदे दाऊद से उनका सजदा क़बूल फ़रमाया था-

सोने से पहले

بِسْمِ اللّٰهِ وَضَعْتُ جَنْبِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَاخْسَاْ شَيْطَانِیْ وَفُكَّ رِهَانِیْ وَاجْعَلْنِیْ فِی النَّدِیِّ الْاَعْلٰی. (سنن أبی داؤد:5054)

अल्लाह के नाम के साथ,मैंने अपना पहलू रखा ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे गुनाह बख़्शदे और मेरे शैतान को ज़लील कर और मेरी क़ैद को खोलदे और मुझे आला व अरफ़ा मजलिस का हमनशीन करदे-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَ نَفْسِیْ وَاَنْتَ تَوَفَّاهَا،لَکَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا،اِنْ اَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا،وَاِنْ اَمَتَّهَا فَاغْفِرْلَهَا، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الْعَافِيَةَ. (لسلسلة الصحيحة،ج:7,3998)

ऐ अल्लाह! तूने ही मेरी जान को पैदा किया है और तू ही इसे फ़ौत करेगा,तेरे ही लिए इसका मरना और जीना है, अगर तू इसे ज़िन्दगी अता करे तो इसकी हिफ़ाज़त करना और अगर तू इसे मौत दे तू इसे बख़्श देना- ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे आफ़ियत का सवाल करता हूँ-

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِـاسْـمِکَ رَبِّیْ وَضَعْتُ جَنْبِیْ وَبِکَ اَرْفَعُهُ،اِنْ اَمْسَکْتَ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لَهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَکَ الصَّالِحِیْنَ. (صحیح البخاری:7393)

ऐ मेरे रब! तेरा नाम लेकर मैं अपना पहलू रखता हूँ और तेरे(नाम ही के)साथ मैं उसे उठाता हूँ- अगर तू मेरी जान को रोकले तो इसे बख़्श देना और अगर तू इसे वापस बेझदे तो इसकी हिफ़ाज़त फ़रमाना जिस तरह तू अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है-

रात को आँख खुलने पर

لَا اِلٰـهَ اِلَّا الـلّٰـهُ وَحْـدَهُ لَا شَرِیْکَ لَهُ،لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ، اَلْـحَـمْـدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَکْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ. (صحیح البخاری:1154)

अल्लाह के सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,बादशाही उसी की है,उसी के लिए सब तारीफ़ है और वो हर चीज़ पर कामिल क़ुदरत रखने वाला है- सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है,अल्लाह पाक है,अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह की मदद के बग़ैर ना(बुराई से बचने की)हिम्मत है ना(नेकी करने की) ताक़त,ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे-

क़यामुल लैल में

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَاهْـدِنِیْ وَ ارْزُقْنِیْ وَعَـافِنِیْ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ضِیْقِ الْمَقَامِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ. (سنن النسائی:1618)

ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे,मुझे हिदायत दे,मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा और मुझे आफ़ियत दे- मैं क़यामत के दिन(अल्लाह के सामने)खड़े होने की तंगी से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ-

اَلـلّٰهُـمَّ لَکَ الْـحَـمْـدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّـمٰـوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُکَ حَقٌّ وَقَوْلُکَ حَقٌّ وَلِقَـاؤُکَ حَـقٌّ وَالْـجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ وَالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَکَ اَسْـلَـمْـتُ وَعَـلَیْکَ تَـوَکَّـلْـتُ وَبِکَ آمَـنْـتُ وَاِلَیْکَ اَنَبْتُ وَبِکَ خَـاصَمْتُ وَاِلَیْکَ حَاکَمْتُ فَاغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَلَا اِلٰهَ غَیْرُکَ. (صحیح البخاری: 6317)

ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है तू आसमानों व ज़मीन और इनमें रहने वाली मख़्लूक़ का नूर है और हर तरह की तारीफ़ तेरे ही लिए है तू आसमानों व ज़मीन और इनमें रहने वाली तमाम मख़्लूक़ को क़ायम रखने वाला है और हम्द तमाम की तमाम बस तेरे ही लिए लिए है,

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तू सच्चा है,तेरा वादा सच्चा है,तेरी बात सच्ची है,तेरी मुलाक़ात सच्ची है,जन्नत सच है,दोज़ख़ सच है, क़यामत का होना सच है और अम्बिया सच्चे हैं और मोहम्मदﷺ सच्चे हैं- ऐ अल्लाह! मैंने अपना आप तेरे सुपुर्द करदिया और मैंने तुझही पर भरोसा किया,और मैं तुझपर ईमान लाया,और मैं तेरी तरफ़ मुतावज्जा हुआ,तेरी ही मदद से मैंने झगड़ा किया और तेरी ही तरफ़ मैंने अपना मुक़दमा पैश किया,पस मेरे उन गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा जो मैंने पहले किए और जो मैंने बाद में किए और जो मैंने छुप कर किए और जो मैंने ज़ाहिर किए और तू ही आगे करने वाला है और तू ही पीछे करने वाला है और तेरे सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं है और तेरे सिवा कोई इलाह नहीं है-

सुबह व शाम

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُکَ الۡعَافِيَةَ فِی الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُکَ الۡعَفۡوَ وَالۡعَافِيَةَ فِیۡ دِيۡنِیۡ وَدُنۡيَایَ وَاَهۡلِیۡ وَمَالِیۡ اَللّٰهُمَّ اسۡتُرۡ عَوۡرَاتِیۡ وَاٰمِنۡ رَوۡعَاتِیۡ اَللّٰهُمَّ احۡفَظۡنِیۡ مِنۡ بَيۡنِ يَدَیَّ وَمِنۡ خَلۡفِیۡ وَعَنۡ يَمِيۡنِیۡ وَعَنۡ شِمَالِیۡ وَمِنۡ فَوۡقِیۡ وَاَعُوۡذُ بِعَظَمَتِکَ اَنۡ اُغۡتَالَ مِنۡ تَحۡتِیۡ. (مسند احمد،ج:8،4785)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे दुनिया व आख़िरत में आफ़ियत का सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे अपने दीन,और अपनी दुनिया,अपने अहले ख़ाना और अपने माल के मुताल्लिक़ दरगुज़र और आफ़ियत का सवाल करता हूँ,ऐ अल्लाह! मेरे ऐबों पर परदा डाल और मेरी घबराहटों को अमन अता कर,ऐ अल्लाह! मेरे आगे,मेरे पीछे,मेरे दाऐं, मेरे बाऐं और मेरे ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा- और मैं तेरी अज़मत के ज़रिए से(इस बात से)पनाह चाहता हूँ कि मैं अपने नीचे की तरफ़ से हलाक किया जाऊँ-

लैलतुल क़दर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الۡعَفۡوَ فَاعۡفُ عَنِّیۡ. (سنن الترمذی:3513)

ऐ अल्लाह! बेशक तू माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसंद करता है,पस मुझे माफ़ करदे-

सफ़ा व मरवा की सई के दौरान

رَبِّ اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ،وَاَنۡتَ الۡاَعَزُّ الۡاَکۡرَمُ . (مصنف ابن ابی شیبة،ج:10،30142)

ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ फ़रमा और मुझपर रहम फ़रमा और तू ही इज़्ज़त वाला और बुज़ुर्गी वाला है-

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मजलिस के इख़्तिताम पर

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ. (مسند احمد، ح:24486,41)

पाक है तू और तेरी ही हम्द है,तेरे सिवा कोई इलाह नहीं,मैं अल्लाह से बख़्शिश मांगता हूँ और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ-

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ،اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَيْکَ.

(سنن أبی داؤد:4859)

ऐ अल्लाह! तू पाक है अपनी तारीफ़ के साथ,मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माअबूद बरहक़ नहीं मैं तुझही से मग़फ़िरत चाहता हूँ और मैं तेरी ही तरफ़ रुजूअ करता हूँ-

लोगों के दुनिया जमा करते वक़्त

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِيْمَةَ عَلَی الرُّشْدِ،وَاَسْاَلُکَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِکَ،وَاَسْاَلُکَ شُکْرَ نِعْمَتِکَ وَحُسْنَ عِبَادَتِکَ وَاَسْاَلُکَ قَلْبًا سَلِيْمًا وَلِسَانًا صَادِقًا وَاَسْاَلُکَ مِنْ خَيْرِمَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ. (سلسلة الصحيحة، ج:3228,7)

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे दीन में साबित क़दमी और हिदायत में पुख़्तगी का सवाल करता हूँ और मैं तुझसे तेरी रहमत को वाजिब करने वाले और तेरी मग़फ़िरत को लाज़िम करने वाले उमूर का सवाल करता हूँ,मैं तुझसे तेरी नेअमतों का शुक्र अदा करने और अच्छे अंदाज़ में तेरी इबादत करने का सवाल करता हूँ, मैं तुझसे सलामत दिल और सच्ची ज़बान का सवाल करता हूँ,मैं तुझसे हर उस भलाई का सवाल करता हूँ जिसे तू जानता है और हर उस बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ जो तेरे इल्म में है और मैं तुझसे उन(तमाम गुनाहों)की बख़्शिश का सवाल करता हूँ जो तेरे इल्म में,हैं बेशक तू पोशीदा बातों को ख़ूब जानने वाला है-

सवारी पर बैठते वक़्त

سُبْحَانَکَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (سنن أبی داؤد:2602)

ऐ अल्लाह! तू पाक है बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तू मुझे माफ़ फ़रमादे क्योंकि तेरे सिवा और कोई नहीं जो गुनाहों को बख़्श सके-

दुनिया से जाते वक़्त

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِالرَّفِيْقِ. (صحيح مسلم:6293)

ऐ अल्लाह! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझपर रहम फ़रमा और मुझे रफ़ीक़(आला)से मिलादे-

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दूसरों के लिए इस्तग़फ़ारात

मेज़बान के लिए

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ فَارْحَمْهُمْ. (صحيح مسلم:5328)

ऐ अल्लाह! जो रिज़्क़ तूने इनको दिया उसमें उनको बरकत दे,पस इनकी मग़फ़िरत फरमा और इनपर रहम फ़रमा-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِمْ وَوَسِّعْ عَلَيْهِمْ فِيْ اَرْزَاقِهِمْ. (مسنداحمد،ج:17678,29)

ऐ अल्लाह! इनकी बख़्शिश फ़रमा और इन पर रहम फ़रमा और इनपर बरकत फ़रमा और इनके रिज़्क़ को इन पर कुशादा फ़रमा-

ख़ादिमों के लिए

اَللّٰهُمَّ اَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَاَطِلْ عُمْرَهُ وَاغْفِرْ لَهُ. (سلسلة الصحيحة:2541)

ऐ अल्लाह! इसका माल और इसकी औलाद ज़्यादा करदे और इसको लम्बी उम्र अता फ़रमा और इसको बख़्शदे-

नौजवान नसल के लिए/ज़ना से हिफ़ाज़त के लिए

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ ذَنْبَهُ وَطَهِّرْ قَلْبَهُ وَحَصِّنْ فَرْجَهُ. (مسند احمد،ج:22211,36)

ऐ अल्लाह! इसा गुनाह बख़्शदे,इसके दिल को पाक करदे और इसकी शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़रमा-

मय्यत के लिए

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِ وَصَلِّ عَلَيْهِ وَاغْفِرْ لَهُ وَاَوْرِدْهُ حَوْضَ نَبِيِّكَ صلى الله عليه وسلم. (فضل الصلاة على النبى ﷺ:92)

ऐ अल्लाह! इसको बर्कत दे और इसपर रहमत नाज़िल फ़रमा और इसे बख़्शदे और इसे अपने नबी ﷺ के हौज़ पर वारिद फ़रमा-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلَهُ وَاَعْقِبْنِيْ مِنْهُ عُقْبٰى حَسَنَةً. (صحيح مسلم:2129)

ऐ अल्लाह! मुझे और इसे माफ़ फ़रमादे और मुझे इससे अच्छा बदला अता फ़रमा-

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا:

''گناہ سے توبہ کرنے والا ایسا ہے جیسے اس نے گناہ کیا ہی نہیں''۔

(رواہ ابن ماجة وصححه الالبانی)

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.